47 बोल की बन्धी

श्री भगवती सूत्र के 26वें शतक के 1 से 11 उद्देशक में अधिकार चले सो कहते हैं-

जीवा य लेस्स पक्खिय दिट्ठि, अण्णाण णाण सण्णाओ।

वेय कसाय उवओग जोग, एक्कारस वि ठाणा।।

अर्थ- 1 समुच्चय जीव, 8 लेश्या (6 लेश्या, 1 सलेशी, 1 अलेशी), 2 पाक्षिक (कृष्ण, शुक्ल), 3 दृष्टि (सम्यक् , मिथ्या और मिश्र दृष्टि), 4 अज्ञान (3 अज्ञान, 1 समुच्चय अज्ञान), 6 ज्ञान (5 ज्ञान, 1 समुच्चय ज्ञान), 5 संज्ञा (4 संज्ञा, 1 नोसंज्ञा बहुता), 5 वेद (3 वेद, 1 सवेदी, 1 अवेदी), 6 कषाय (4 कषाय, 1 सकषायी, 1 अकषायी), 5 योग (3 योग, 1 सयोगी, 1 अयोगी), 2 उपयोग (साकार, अनाकार) ये सब 47 बोल हुए।

उपर्युक्त बोलों में गुणस्थान

(1) समुच्चय जीव- गुण. 1 से 14 तक।

(2) लेश्या- कृष्ण, नील, कापोत लेश्या में गुण. 1 से 6 तक, तेजो, पद्म लेश्या में गुण. 1 से 7 तक, सलेशी, शुक्ल लेशी में गुण. 1 से 13 तक, अलेशी में गुण. 14 वाँ।

(3) पाक्षिक- शुक्ल पाक्षिक में गुण. 1 से 14 तक, कृष्ण पाक्षिक में पहला गुण.।

(4) दृष्टि- सम्यग्दृष्टि में गुण. दूसरा व 4 से 14 तक, मिथ्यादृष्टि में पहला गुण., मिश्र दृष्टि में तीसरा गुण.।

(5) अज्ञान- तीन अज्ञान व समु. अज्ञान में गुण. पहला व तीसरा।

(6) ज्ञान- मति, श्रुत, अवधि ज्ञान में गुण. दूसरा व 4 से 12 तक, मनःपर्यव ज्ञान में गुण. 6 से 12 तक, केवल ज्ञान में गुण. 13वाँ व 14वाँ, सज्ञानी में गुण. दूसरा व 4 से 14 तक।

(7) संज्ञा- आहार, भय, मैथुन, परिग्रह चारों संज्ञाओं में गुण. 1 से 6 तक, नोसंज्ञा बहुता में गुण. 7 से 14 तक।

(8) वेद- सवेदी, स्त्री-पुरूष-नपुंसकवेदी में गुण. 1 से 9 तक, अवेदी में गुण. 9 से 14 तक।

(9) कषाय- क्रोध, मान, माया कषाय में गुण. 1 से 9 तक, सकषायी व लोभकषायी में गुण. 1 से 10 तक, अकषायी में गुण. 11 से 14 तक।

(10) उपयोग- साकार, अनाकार उपयोग में गुण. 1 से 14 तक।

(11) योग- मन, वचन, काययोगी व सयोगी में गुण. 1 से 13 तक, अयोगी में गुण. 14वाँ।

ज्ञातव्य-

1. ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, नाम, गोत्र व अन्तराय कर्म का बन्ध 1 से 10 वें गुण. तक निरन्तर होता है।
2. वेदनीय कर्म का बन्ध 1 से 13 वें गुण. तक निरन्तर होता है।
3. मोहनीय कर्म का बन्ध 1 से 9 वें गुण. तक निरन्तर होता है।
4. आयु का बन्ध 1 से 7 वें (तीसरा छोड़कर) गुण. तक जीवनकाल में एक बार होता है।
5. आहारादि चारों संज्ञा पहले से छठें गुणस्थान तक होती हैं। छठें गुणस्थान में जो अशुभ योगी होते हैं, उनमें संज्ञा होती हैं, किन्तु जो शुभ योगी है, उनमें संज्ञा नहीं होती, वे नो संज्ञा वाले होते हैं। सातवें से चौदहवें गुणस्थान वाले तो नो संज्ञा वाले ही होते हैं।
6. पहले से लेकर आठवें गुणस्थान तक के जीव सवेदी ही होते हैं। नवें गुणस्थान के पहले भाग में सवेदी तथा शेष चार भागों में जीव अवेदी होता है। दसवें से चौदहवें गुणस्थान वाले तो अवेदी ही होते हैं।

यह थोकड़ा चार भंगों पर आधारित है-

(1) कितनेक जीवों ने कर्मों को बांधा था, बांधता है और बांधेगा।

(2) कितनेक जीवों ने कर्मों को बांधा था, बांधता है और नहीं बांधेगा।

(3) कितनेक जीवों ने कर्मों को बांधा था, नहीं बांधता है और बांधेगा।

(4) कितनेक जीवों ने कर्मों को बांधा था, नहीं बांधता है और नहीं बांधेगा।

उपर्युक्त चारों भंगों को 8 कर्मों की अपेक्षा निम्न चार्ट द्वारा समझा जा सकता है-

कर्म	पहला भंग	दूसरा भंग	तीसरा भंग	चौथा भंग
पाप कर्म- मोह कर्म आश्री	पहले से 9वें गुणस्थान के द्विचरम समय तक	9वें गुणस्थान के अंतिम समय में (क्षपक श्रेणि करने वाले)	उपशम श्रेणि में 10वें तथा 11वें गुण. में	क्षपक श्रेणि में 10वाँ तथा 12- 13-14 गुणस्थान में
ज्ञानावरणीय आदि 5 कर्म आश्री	पहले से 10वें गुणस्थान के द्विचरम समय तक	10वें के चरम समय में (क्षपक श्रेणि करने वाले)	ग्यारहवें गुणस्थान में	12-13-14 गुणस्थान में
वेदनीय कर्म आश्री	पहले से 13वें गुणस्थान के द्विचरम समय तक	13वें के चरम समय में	-	14वें गुणस्थान में
आयुष्य कर्म आश्री	पहले से 7वें गुणस्थान तक (तीसरे को छोड़कर)	अगले भव में मोक्षगामी	अचरम शरीरी में (आयुष्य के अबन्धक में)	चरम शरीरी या मनुष्यायु बांधे हुए एक भव अवतारी जीव में

ज्ञातव्य: 1. उपर्युक्त तालिका के अलावा आठों ही कर्मों में पहला भंग अभव्य जीवों की अपेक्षा से तथा दूसरा भंग भव्य जीवों की अपेक्षा से भी घटित किया जाता है।

2. आयुष्य कर्म को छोड़कार शेष 7 कर्मो का बन्ध निरन्तर होता रहता है। जबकि आयुकर्म अगले भव का इस भव में केवल एक बार अन्तर्मुहूर्त्त पर्यन्त बन्धता है। अतः आगमकारों ने इन दोनों की विवक्षा अलग-अलग अभिप्राय से की है।

सात कर्मों में पर्याय की अपेक्षा चिन्तन है। विवक्षित पर्याय के अन्तिम समय में दूसरा भंग इस अपेक्षा से कह दिया गया कि जीव उस पर्याय में अब उस कर्म को नहीं बाँधेगा। दूसरी पर्याय में उस कर्म को बाँधने का निषेध नहीं होता हैं जबकि आयु कर्म में मात्र भव की अपेक्षा ही विवेचन हुआ है। वहाँ पर्याय को गौण कर दिया है।

पूर्व में उल्लेखित 47 बोलों में से किस दण्डक/जीवों में कितने व कौन-कौनसे भेद पाये जाते हैं, वे इस तालिका से जाने जा सकते हैं-

क्र	द्वार	नरक	भवन. वाण.	ज्यो. 1,2 देव.	3–12 देवलोक	9 ग्रेवे.	5 अनु.	पृ. अप. वन.काय	तेउकाय वायुकाय	3 विक–लेन्द्रि	तिर्यंच पंचे.	मनु.	विशेष
1	समुच्चय (1)	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	सबमें जीव है।
2	लेश्या (8)	4 प्रथम तीन व सलेशी	5 प्रथम चार व सलेशी	2 तेजो व सलेशी	2 पद्म या शुक्ल व सलेशी	2 शुक्ल व सलेशी	2 शुक्ल व सलेशी	5 प्रथम चार व सलेशी	4 प्रथम तीन व सलेशी	4 प्रथम तीन व सलेशी	7 अलेशी छोड़कर	8	
3	पाक्षिक (2)	2	2	2	2	2	*1 शुक्ल पाक्षिक	2	2	2	2	2	* एकान्त सम्यग् दृष्टि होने से
4	दृष्टि (3)	3	3	3	3	3	1 एकान्त सम्यग् दृष्टि है।	1 एकांत मिथ्यात्वी है	1 एकांत मिथ्यात्वी है	2 मिश्र दृष्टि नहीं है।	3	3	मिश्र दृष्टि संज्ञी पंचे. में ही पायी जाती है।
5	अज्ञान (4)	4	4	4	4	4	–	3	3	*3	4	4	*2 अज्ञान समुच्चय अज्ञान
6	ज्ञान (6)	4 3 ज्ञान	4	4	4	4	4	–	–	3 (2 ज्ञान व सज्ञान)	4	6	

7	संज्ञा (5)	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	*5	*नोसंज्ञा बहुता 7वें गुण. से होता है।
8	वेद (5)	2 नपुं. व सवेदी	3 स्त्री., पुरूष. व सवेदी	3	2 पुरूष व सवेदी	2	2	2 नपुं. व सवेदी	2 नपुं. व सवेदी	2 नपुं. व सवेदी	4 अवेदी छोड़कर	5	
9	कषाय (6)	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	6	
10	उपयोग (2)	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	
11	योग (5)	4 तीन योग, सयोगी	4	4	4	4	4	2 काय व सयोगी	2	3 काय, वचन व सयोगी	4	5	अयोगी सिर्फ मनुष्य होता है।
योग	47	35	37	34	33	33	26	27	26	31	40	47	

(1) पाप कर्म (मोहनीय आश्री)

समुच्चय जीव व मनुष्य की अपेक्षा- समुच्चय जीव, सलेशी, शुक्ल लेशी, शुक्ल पक्षी, सम्यग्दृष्टि, सज्ञानी, मति ज्ञानी, श्रुत ज्ञानी, अवधि ज्ञानी, मनःपर्यव ज्ञानी, नोसंज्ञा बहुता, अवेदी, सयोगी, मनयोगी, वचनयोगी, काययोगी, सकषायी, लोभ कषायी, साकार, अनाकार उपयोग इन 20 बोलों [1] में चारों भंग पाये जाते हैं।

अकषायी [2] में तीसरा, चौथा भांगा ही पाया जाता है।

अलेशी, अयोगी, केवलज्ञानी [3] में सिर्फ एक चौथा भांगा ही पाता है।

शेष 23 बोलों [4] में पहला, दूसरा भांगा पाया जाता है।

(2-6) ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, नाम, गोत्र और अन्तराय कर्म आश्री

इन पाँच कर्मों में समुच्चय जीव, मनुष्य आश्री 18 बोलों में (पूर्वकथित 20 में से सकषायी और लोभ कषायी को छोड़कर) चारों भांगे पाये जाते हैं। पहला भांगा पहले से दसवें गुणस्थान के द्विचरम समयवर्ती जीवों की अपेक्षा, दूसरा भांगा दसवें गुणस्थान के चरम समयवर्ती क्षपक जीवों की अपेक्षा, तीसरा भांगा ग्यारहवें गुणस्थान के जीवों की अपेक्षा तथा चौथा भांगा 12, 13, 14वें गुणस्थान के जीवों की अपेक्षा पाया जाता है। सकषायी और लोभ कषायी में पहला, दूसरा भांगा ही पाया जाता है, क्योंकि सकषायी और लोभ कषायी 10 वें गुणस्थान तक होते हैं और दसवें गुणस्थान तक ये पाँच कर्म निरन्तर बँधते हैं इस कारण से तीसरा, चौथा भंग नहीं पाया जाता है। अकषायी में तीसरा व चौथा भांगा तथा अलेशी, अयोगी व केवली में एक चौथा भांगा पाया जाता है। शेष 23 बोलों [5] में पहला, दूसरा भांगा पाया जाता है।

(7) वेदनीय कर्म आश्री

समुच्चय जीव व मनुष्य की अपेक्षा- समुच्चय जीव, सलेशी, शुक्ललेशी, शुक्लपक्षी, सम्यग्दृष्टि, सज्ञानी, केवलज्ञानी, नोसंज्ञा बहुता, अवेदी, अकषायी, साकार, अनाकार उपयोग इन 12 बोलों [6] में पहला, दूसरा, चौथा भांगा पाया जाता है।

अलेशी, अयोगी[7] में केवल एक चौथा भांगा पाया जाता है।

---

1 सलेशी, शुक्ल लेशी जीव अभवी हो सकता है, क्षपक हो सकता है, उपशमक भी हो सकता है इसलिए चारों भांगें पाये जाते हैं।

नोसंज्ञा बहुता जीव 7वें से 14 गुण. तक होता है, इस जीव में पहला भांगा 7वें गुण से 9वें के द्विचरम समयवर्ती जीव की अपेक्षा, दूसरा भांगा 9वें चरम समयवर्ती क्षपक श्रेणि वाले जीव की अपेक्षा, तीसरा भांगा उपशम श्रेणि प्राप्त 10वें व 11वें गुण. में रहे जीव की अपेक्षा और चौथा भांगा क्षपक श्रेणि वाले 10वें से 14वें गुणस्थानवर्ती जीवों की अपेक्षा मिलता है। इसी प्रकार मनःपर्यवज्ञानी में, अन्तर इतना इसमें पहला भांगा छठे से 9वें गुण. के द्विचरम समयवर्ती तक तथा चौथा भांगा क्षपक श्रेणि जीव में 10वें व 12वें गुण. की अपेक्षा समझना चाहिए।

2 तीसरा भांगा 11वें गुणस्थानवर्ती जीव की अपेक्षा व चौथा भांगा 12, 13, 14 गुण. की अपेक्षा समझना।

3 अलेशी, अयोगी 14वें गुणस्थान में तथा केवली 13वें व 14वें गुणस्थान में होते हैं। ये गुणस्थान अप्रतिपाती गुणस्थान ही होते हैं, इसलिए इनमें केवल चौथा ही भांगा पाया जाता है।

4 इन 23 बोलों में 1 से 9 गुणस्थान तक के ही जीव समाहित हैं। नवमें गुणस्थान तक मोहनीय निरन्तर बन्धता है। इसलिए वर्तमान में मोहकर्म नहीं बन्धने की स्थिति नहीं होती है। अतः तीसरा, चौथा भंग नहीं मिलता है।

5 शेष 23 बोलों में 1 से 9 गुणस्थान तक ही होते हैं, अतः पहला व दूसरा ही भांगा पाया जाता है।

6 आगम के अनुसार 14वें गुणस्थान के प्रथम समय में घण्टालाला न्याय के अनुसार शुक्ललेशीपने का किंचित् अंश रहता है। (जैसे- घण्टा बजा चुकने के बाद भी उसकी रणकार पीछे रह जाती है) इस हेतु से सलेशी, शुक्ल लेशी में 14वें गुणस्थान के प्रथम समय की अपेक्षा चौथा भांगा घटित हो जाता है। शेष बोलों में तो 14वाँ गुणस्थान मिलता ही है।

7 अलेशी व अयोगी 14वें गुणस्थान में ही होते हैं।

शेष 33 बोलों [8] में पहला, दूसरा भांगा पाया जाता है।

(8) आयु कर्म आश्री

समुच्चय जीव की अपेक्षा-

नोसंज्ञा बहुता, मनःपर्यवज्ञानी [9] में पहला, तीसरा, चौथा भांगा पाया जाता है।

मिश्रदृष्टि, अवेदी, अकषायी [10] में तीसरा, चौथा भांगा पाया जाता है।

कृष्ण पक्षी [11] में पहला, तीसरा भांगा पाया जाता है।

अलेशी, अयोगी, केवलज्ञानी [12] में केवल चौथा भांगा ही पाया जाता है।

शेष 38 बोलों [13] में चारों भंग पाये जाते हैं।

शेष 23 दण्डकों में जिसमें जितने बोल पाये जाते हैं, उनमें सात कर्म आश्री (आयु को छोड़कर) पहला व दूसरा भंग पाया जाता है। क्योंकि 23 दण्डक के जीव उत्कृष्ट 5वें गुण. तक ही होते हैं और 7 कर्मों (आयु को छोड़कर) का बंध यहाँ तक निरन्तर होता है।

<u>आयु कर्म आश्री</u>

नारकी के 35 बोल में भांगें-

कृष्ण लेशी, कृष्ण पक्षी नारकी [14] में पहला, तीसरा भांगा पाया जाता है।

मिश्रदृष्टि नारकी [15] में तीसरा, चौथा भांगा ही पाया जाता है।

शेष 32 बोल [16] में चारों भांगें पाये जाते हैं।

---

8 इन 33 बोलों में 14वें गुणस्थानवर्ती जीव नहीं पाये जाते हैं, इसलिए इनमें चौथा भांगा घटित नहीं होता है।

9 नोसंज्ञा बहुता में पहला भांगा 7वें गुणस्थान की अपेक्षा होगा। मनःपर्यव ज्ञान में पहला भांगा 6,7वें गुण. की अपेक्षा है। इन दो बोलों में दूसरा भांगा इसलिए नहीं पाया जाता है क्योंकि यदि ये वर्तमान में आयुष्य बांधते हैं तो वैमानिक का ही आयुष्य बांधते हैं और वैमानिक में उनको आगे भी आयुष्य का बंध करना ही पड़ेगा। वैमानिक से मुक्ति सम्भव नहीं है।

10 मिश्र दृष्टि, अवेदी अकषायी में आयुष्य का बंध नहीं होता है, इस कारण प्रथम दो भांगे नहीं पाये जाते हैं। तीसरा भांगा अचरम शरीरी भव्य जीव की अपेक्षा से है जो वर्तमान समय में तो बंध नहीं कर रहा है लेकिन आगे उसे बंध करना ही पड़ेगा। चौथा भांगा चरम शरीरी जीव की अपेक्षा समझना चाहिए।

11 कृष्ण पक्षी में दूसरा व चौथा भांगा नहीं पाया जाता, क्योंकि कृष्णपक्षी को अर्धपुद्गल परावर्तन काल से अधिक संसार में रहना ही पड़ता है अतः उसको आयुष्य का भविष्य में बंध करना ही पड़ेगा।

12 इन बोलों में आयु के अबन्धक अप्रतिपाती गुणस्थान होने से केवल चौथा भांगा ही घटित होगा।

13 प्रथम भांगा अचरम शरीरी अथवा अभव्य जीवों की अपेक्षा समझना चाहिए। दूसरा भांगा वर्तमान में मनुष्य आयु बांध रहे उन जीवों की अपेक्षा है जो अगले ही भव में निश्चित मोक्ष जायेंगे। तीसरा भांगा वर्तमान में आयुष्य का बंध नहीं कर रहें ऐसे अचरम शरीरी जीवों की अपेक्षा है जो बाद में आयुष्य का बन्ध करेंगे। चौथा भांगा चरम शरीरी जीव या उन जीवों की अपेक्षा है, जिन्होंने मनुष्यायु का बंध कर लिया है तथा अगले भव में मोक्ष जाने वाले हैं।

14 कृष्ण लेशी नारकी मनुष्यायु का बंध तो कर सकता है लेकिन मनुष्य बन कर मोक्ष नहीं जा सकता है, कृष्ण लेशी नारकी अर्थात् 5,6,7वीं नारकी केवली की आगति में नहीं हैं।

15 मिश्र दृष्टि अवस्था में आयुष्य का बंध नहीं होता है।

16 प्रथम भांगा अभव्य नारकी या ऐसा नारकी जिसका अभी संसार काल शेष है उस जीव की अपेक्षा। दूसरा भांगा अगले भव की मनुष्यायु बांधते उस जीव की अपेक्षा है जो अगले भव में मोक्ष जायेगा। तीसरा भांगा उस जीव की अपेक्षा है जो वर्तमान में आयुष्य नहीं बांध रहा, लेकिन इस भव या पर भव में बाद में आयु बाँधेगा। चौथा भांगा उस नारकी की अपेक्षा जो मनुष्यायु का बन्ध कर चुका है तथा अगले भव में निश्चित मोक्ष जाने वाला है।

भवनपति से 9 ग्रैवेयक के बोलों [17] में भांगें-

कृष्ण पक्षी में पहला, तीसरा भांगा पाया जाता है।

मिश्रदृष्टि में तीसरा, चौथा भांगा पाया जाता है।

शेष बोलों में सभी चारों भांगें पाये जाते हैं।

5 अनुत्तर विमान के 26 बोलों में भांगें-

चार अनुत्तर विमान के सभी बोलों [18] में चारों भांगें पाये जाते हैं।

सर्वार्थसिद्ध के 26 बोलों [19] में दूसरा, तीसरा, चौथा ये तीन भांगें पाये जाते हैं।

पृथ्वी, पानी, वनस्पति के 27 बोलों में भांगे-

तेजो लेशी [20] पृथ्वी, पानी, वनस्पति में केवल तीसरा भांगा ही पाया जाता है।

कृष्ण पक्षी में पहला, तीसरा भांगा पाया जाता है।
शेष 25 बोल [21] में चारों भांगें पाये जाते हैं।

तेउ, वायु के 26 बोलों [22] में भांगें-

सभी बोलों में पहला, तीसरा भांगा पाया जाता है।

तीन विकलेन्द्रिय के 31 बोल में भांगें-

सम्यग्दृष्टि, सज्ञानी, मतिज्ञानी, श्रुतज्ञानी [23] में केवल तीसरा भांगा पाया जाता है।

शेष 27 बोलों [24] में पहला, तीसरा भांगा ही पाया जाता है।

---

17 कृष्ण लेशी भवन. वाण. अगले भव में मोक्षगामी हो सकता है अतः चारों भंग पाये जाते हैं। शेष नारकीवत्

18 पहला भांगा उस जीव की अपेक्षा है जिसकी आयु 6 माह शेष है, मनुष्य भव की आयु बांध रहा है तथा अगले भव में मोक्ष नहीं जाने वाला है। दूसरा भांगा जो वर्तमान में आयुष्य का बंध कर रहा है और अगले भव में निश्चित मोक्ष जाने वाला है। तीसरा भांगा अभी आयुष्य का बंध नहीं कर रहा है लेकिन आगे बंध करने की अपेक्षा समझना। चौथा भांगा आयुष्य बंध कर चुके जीव की अपेक्षा समझना जो अगले भव में निश्चित मोक्ष जाने वाला है।

19 सर्वार्थसिद्ध में जो आयुष्य का बंध कर रहा है वह अगले भव में निश्चित मोक्ष का अधिकारी है, वह आगे आयुष्य का बंध नहीं कर सकता है अतः पहला भांगा घटित नहीं होता है।

20 तेजो लेश्या देवता से आने वाले पृथ्वी, पानी, वनस्पति जीवों में अपर्याप्त अवस्था में रहती है। यह नियम है कि देवता से आने वाले पृथ्वी, पानी, वनस्पति के जीव अपर्याप्त अवस्था में काल नहीं करते हैं। पर्याप्त होकर ही मरते हैं। पर्याप्त अवस्था में ही अगले भव की आयु का बन्ध करते हैं। पर्याप्त अवस्था में इनमें तेजो लेश्या नहीं होने के कारण तेजो लेश्या में आयु का बन्ध नहीं करते हैं। इसलिए प्रथम दो भांगे तो पाये ही नहीं जाते हैं और चौथा भांगा भी नहीं पाया जाता, क्योंकि मोक्ष जाने के लिए उस जीव को आगे मनुष्यायु का बंध तो करना ही पड़ेगा।

21 पृथ्वी, पानी, वनस्पति से निकल कर जीव मोक्ष जा सकता है, इसलिए मनुष्य आयु बंध कर चुके जीव में चौथा भांगा भी हो सकता है इस हेतु चारों भांगे पाये जा सकते हैं।

22 तेउ, वायु का जीव पन्नवणा सूत्र के 20वें पद के अनुसार दुर्लभ बोधि होते हैं तथा अगले भव में सम्यक्त्व प्राप्त नहीं कर सकते हैं, अतः मोक्ष जाने का तो प्रश्न ही नहीं उठता, इसलिए पहला, तीसरा ही भंग पाया जाता है।

23 ये चार बोल तीन विकलेन्द्रिय में उत्पत्ति समय से जघन्य 1 समय उत्कृष्ट 6 आवलिका पर्यंत ही पाये जाते हैं। सबसे कम आयुष्य वाला जीव अर्थात् क्षुल्लक भव 256 आवलिका आयुष्य वाला जीव भी लगभग 171 आवलिका पूर्ण किये बिना आयुष्य नहीं बाँधता है अतः विकलेन्द्रिय समकित में आयुष्य नहीं बाँधेगा। चूँकि विकलेन्द्रिय अगले भव में केवली नहीं बन सकते, अतः भविष्य में आयुष्य बान्धेंगे ही, इसलिए केवल तीसरा भांगा ही पाया जाता है।

24 विकलेन्द्रिय अगले भव में मोक्षगामी नहीं हो सकते, अतः पहला व तीसरा भांगा ही पाया जाता है।

तिर्यंच पंचेन्द्रिय के 40 बोलों में भांगें-

कृष्ण पक्षी में पहला, तीसरा भांगा पाया जाता है।

मिश्र दृष्टि में तीसरा, चौथा भांगा पाया जाता है।

सम्यग्दृष्टि, सज्ञानी, मति, श्रुत, अवधि ज्ञानी [25] में पहला, तीसरा, चौथा भांगा पाया जाता है।

शेष 33 बोलों में चारों भांगें पावे।

मनुष्य के 47 बोल में भांगें-

अलेशी, अयोगी, केवलज्ञानी में चौथा ही भांगा पाया जाता है।

मिश्रदृष्टि, अवेदी, अकषायी [26] में तीसरा, चौथा भांगा पावे।

कृष्ण पक्षी में पहला, तीसरा भांगा पावे।

सम्यग्दृष्टि, सज्ञानी, मतिज्ञानी, श्रुतज्ञानी, अवधि ज्ञानी, मनःपर्यव ज्ञानी, नो संज्ञा बहुता [27] में पहला, तीसरा, चौथा भांगा पावे।

शेष 33 बोलों में चारों ही भांगे पावे।

इस प्रकार यह प्रथम औघिक उद्देशक पूरा हुआ।

2. **द्वितीय उद्देशक अनन्तर उववन्ना**- उन जीवों का कथन जिनको उत्पन्न हुए एक समय ही हुआ है अर्थात् प्रथम समय के उत्पन्न हुए जीव।
3. **तृतीय उद्देशक परम्पर उववन्ना**- उन जीवों का कथन जिनको उत्पन्न हुए बहुत समय हो गया अर्थात प्रथम समय के उत्पन्न हुए जीवों के अलावा सभी जीवों का समावेश इस उद्देशक में हो जाता है।
4. **चतुर्थ उद्देशक अनन्तर अवगाढ़**- पहले समय की अवगाहना वाले जीव अर्थात उत्पत्ति के प्रथम समय में जो अवगाहना होती है उन जीवों का समावेश इस उद्देशक में होता है।
5. **पंचम उद्देशक परम्पर अवगाढ़** - बहुत समय की अवगाहना वाले जीव अर्थात् प्रथम समय की अवगाहना वाले जीवों के सिवाय सभी जीवों का समावेश इस उद्देशक में होता है।
6. **छठा उद्देशक अनन्तर आहारक**- पहले समय के आहारक जीव अर्थात् उत्पत्ति के प्रथम समय के आहारक जीव का ही इस उद्देशक में कथन है।
7. **सातवाँ उद्देशक परम्पर आहारक**- बहुत समय के आहारक जीव अर्थात् प्रथम समय के आहारक जीवों के अलावा सभी जीव।
8. **आठवाँ अनन्तर पर्याप्तक उद्देशक**- स्वयोग्य पर्याप्तियाँ बांधना प्रारंभ करने के प्रथम समयवर्ती जीव का समावेश इस उद्देशक में किया गया है।
9. **नवाँ उद्देशक परम्पर पर्याप्तक**- स्वयोग्य पर्याप्तियाँ बांधना प्रारंभ करने के दूसरे समय से लेकर जीवन पर्यन्त तक के जीवों का समावेश इस उद्देशक में होता है।

---

[25] चौथा भांगा मनुष्यायु बंध कर चुके उन जीवों की अपेक्षा है जो अगले भव में मोक्ष जायेंगे। दूसरे भंग के नहीं पाने का कारण यह है कि इन बोलों में वैमानिक का बंध करते हैं और वैमानिक से आगे आयुष्य बांधना ही पड़ेगा।

[26] इन बोलों में आयुष्य का बंध नहीं होता है।

[27] दूसरा भांगा इन बोलों में नहीं पाने का कारण यही है कि आयुष्य का बंध करेंगे तो वैमानिक का ही करेंगे, इसलिए उन्हें आयुष्य बांधना ही पड़ेगा।

10. **चरम दसवाँ उद्देशक** – चरम अर्थात्, अन्तिम जिन जीवों की तद्भव मुक्ति अर्थात् उसी भव में मोक्ष हो अर्थात् अन्तिम भव हो, वे जीव चरम उद्देशक में आते हैं।
11. **अचरम उद्देशक** – जिन जीवों का तद्भव अन्तिम न हो अर्थात, जो उसी भव में मोक्ष न जा सकें, उनकी अपेक्षा से यह उद्देशक है।

विशेष- **2,3,4,5,6,7,8,9वें उद्देशक में समुच्चय जीव का बोल नहीं पाया जाता है क्योंकि समुच्चय जीव में संसारस्थ सभी जीवों का समावेश अनिवार्य होता है जबकि इन उद्देशकों में सभी जीव समाविष्ट नहीं होते हैं।**

<u>2, 4, 6, 8वें उद्देशक में</u>

नारकी से 9 ग्रैवेयक में मिश्रदृष्टि, मन योग, वचन योग [28] ये तीन बोल नहीं मिलेंगे। पाँच अनुत्तर विमान में मन योग, वचन योग नहीं मिलेंगे।

पाँच स्थावर में औधिक के समान ही बोल मिलेंगे।

तीन विकलेन्द्रिय में वचन योग कम करना।

तिर्यंच पंचेन्द्रिय में मिश्रदृष्टि, विभंग ज्ञान, अवधिज्ञान [29], मनयोग, वचन योग कम करना।

मनुष्य में समुच्चय जीव,अलेशी, मिश्रदृष्टि, विभंगज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान, नो संज्ञा बहुता, अवेदी, अकषायी, मन योगी, वचन योगी, अयोगी [30] बोल कम करना। शेष 35 बोल औधिक उद्देशक के अनुसार जानना चाहिए।

उपर्युक्त बोलों में 24 दण्डकों में 7 कर्म (आयु को छोड़कर) आश्री सबमें 1,2 भांगा ही पाया जायेगा, क्योंकि नहीं बांधने वाली स्थिति इन उद्देशकों में नहीं आती है।

आयुष्य कर्म आश्री

23 दण्डक [31] (मनुष्य के अलावा) में केवल एक तीसरा ही भांगा पाया जाता है।

मनुष्य [32] में कृष्ण पक्षी में केवल तीसरा भांगा, शेष 35 बोलों में तीसरा व चौथा भांगा पाया जायेगा।

ज्ञातव्य :-

2, 4, 6, 8 उद्देशकों में प्रथम समय के उत्पन्न जीवों का वर्णन हैं। प्रथम समय के उत्पन्न हुए मनुष्यों में 36 बोल पाये जाते हैं। उनमें से कृष्णपक्षी में तीसरा भंग तथा शेष 35 बोलों में मनुष्यों में आयुकर्म की अपेक्षा से तीसरा-चौथा भंग ही माना गया है। तीसरा भंग तो इसलिए माना है कि प्रथम समय का उत्पन्न हुआ मनुष्य आयुष्य कर्म का बन्ध करता ही नहीं है। किन्तु वर्तमान जीवन का दो-तिहाई आदि भाग बीतने पर वह आयुकर्म

---

[28] यह चार उद्देशक प्रथम समयवर्ती जीवों की अपेक्षा है इसलिए इनमें मनयोग, वचनयोग नहीं पाया जाता, क्योंकि मन, वचन की प्रवृत्ति पर्याप्तियों के पूर्ण होने पर ही होती है।

मिश्रदृष्टि अपर्याप्त अवस्था में नहीं होती है। पर्याप्त में भी अन्तर्मुहूर्त्त बाद होती है।

[29] तिर्यंच पंचेन्द्रिय के अपर्याप्त में अवधि का उपयोग नहीं होता है अतः अवधि ज्ञान, विभंग ज्ञान भी नहीं होता है।

[30] मनुष्य में अलेशी, मनःपर्यव ज्ञान, नो संज्ञा बहुता, अवेदी, अकषायी, अयोगी अवस्था 9 साल से पूर्व संभव नहीं है। मनुष्य पिछले जन्म से अवधिज्ञान तो ला सकता है लेकिन विभंगज्ञान नहीं ला सकता है। इसलिए उत्पत्ति के प्रथम समय में ये बोल नहीं मिल सकते।

[31] क्योंकि बांधने वाली स्थिति भी इन उद्देशकों में नहीं हो सकती और 23 दण्डक में चरम शरीरी भी नहीं होता इसलिए चौथा भांगा भी नहीं पाया जायेगा।

[32] कृष्णपक्षी का अनंत संसार बाकी है इसलिए चौथा भांगा नहीं हो सकता, लेकिन शेष बोलों में चरम शरीरी हो सकता है इसलिए चौथा भांगा पाया जा सकता है।

का बन्ध कर सकता है।

चौथा भंग चरम शरीरी मनुष्यों में ही घटित होता है। 35 बोलों में नपुंसक वेदी का बोल भी शामिल है। प्रथम समय का उत्पन्न नपुंसकवेदी मनुष्य जन्म नपुंसक ही होता है। जन्म नपुंसक में चौथा भंग बतलाया हैं। इनमें चौथा भंग उसी भव में मोक्ष पाने वाले मनुष्य की अपेक्षा से है। इससे यह सिद्ध होता है कि जन्म नपुंसक मनुष्य भी उसी भव में मोक्ष प्राप्त कर सकता है।

3, 5, 7, 9 उद्देशक में

औघिक के समान ही है अन्तर सिर्फ इतना है कि समुच्चय जीव का बोल नहीं लेना।

8 ही कर्म आश्री 24 दण्डक में औघिक के समान भांगें पाये जायेंगे।

10वाँ चरम उद्देशक में

चरम उद्देशक परम्पर उद्देशक के समान ही कहना। अन्तर इतना की कृष्ण पक्षी [33] का बोल नहीं कहना और आयुष्य कर्म आश्री केवल चौथा भांगा ही घटित होगा।

11 वाँ अचरम उद्देशक में

अचरम उद्देशक परम्पर उद्देशक के समान ही होता है किन्तु अलेशी, अयोगी, केवलज्ञानी [34] ये तीन बोल नहीं पाते हैं।

।।सेवम् भंते, सेवम् भंते, सेवम् भंते।।

---

33 कृष्ण पक्षी चरम शरीरी नहीं हो सकता। क्योंकि चरम शरीरी निश्चित् शुक्ल पक्षी ही होता है। चरम शरीरी में आयुष्य कर्म में चौथा भांगा ही घटित होता है।

34 ये तीन बोल चरम शरीरी में ही पाये जाते हैं। शेष बोल तो अचरम शरीरी में भी पाये जा सकते हैं।

जीव पर्याय (पज्जवा) का थोकड़ा

(पन्नवणा सूत्र पाँचवाँ पद)

इस थोकड़े में जीव की पर्याय, अवगाहना और स्थिति की अपेक्षा एकस्थानपतित (एगट्ठाणवडिया), द्विस्थानपतित (दुट्ठाणवडिया), त्रिस्थानपतित (तिट्ठाणवडिया) और चतु:स्थानपतित (चउट्ठाणवडिया) बतलाई गई है एवं पाँच वर्ण, दो गंध, पाँच रस और आठ स्पर्श, इन बीस बोलों की अपेक्षा तथा दस उपयोग की अपेक्षा षट्स्थानपतित (छट्ठाणवडिया) और केवलज्ञान, केवलदर्शन की अपेक्षा तुल्य कही गई है। थोकड़े के प्रारंभ में इनका खुलासा कर देने से पाठकों को समझने में सरलता होगी।

एकस्थानपतित- एकस्थानपतित का आशय यहाँ असंख्यात भाग हीन और असंख्यात भाग अधिक है। जैसे- एक युगलिक की स्थिति अन्तर्मुहूर्त्त कम तीन पल्योपम की है और दूसरे की तीन पल्योपम की है। अन्तर्मुहूर्त्त, पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग होता है। अत: पहले की स्थिति असंख्यात भाग हीन है और दूसरे की स्थिति असंख्यात भाग अधिक है। उत्कृष्ट अवगाहना वाले मनुष्य की स्थिति एकस्थानपतित बतलायी जाएगी।

द्विस्थानपतित- द्विस्थानपतित का आशय यहाँ असंख्यात भाग हीन, संख्यात भाग हीन और असंख्यात भाग अधिक, संख्यात भाग अधिक है। उत्कृष्ट अवगाहना वाले नैरयिकों की स्थिति द्विस्थानपतित होती है। जैसे एक नैरयिक की स्थिति अन्तर्मुहूर्त्त कम तेतीस सागरोपम की है और दूसरे की स्थिति पूरे तेतीस सागरोपम की है। अन्तर्मुहूर्त्त तेतीस सागरोपम का असंख्यातवाँ भाग है, अत: पहले नैरयिक की स्थिति असंख्यात भाग हीन और दूसरे की असंख्यात भाग अधिक है। इसी प्रकार एक नैरयिक की स्थिति पल्योपम कम तेतीस सागरोपम की है और दूसरे की पूरे तेतीस सागरोपम की है। चूँकि पल्योपम, सागरोपम का संख्यातवाँ भाग है अत: पहले नैरयिक की स्थिति संख्यात भाग हीन और दूसरे की संख्यात भाग अधिक हुई।

त्रिस्थानपतित- त्रिस्थानपतित का आशय यहाँ असंख्यात भाग हीन, संख्यात भाग हीन, संख्यात गुण हीन तथा असंख्यात भाग अधिक, संख्यात भाग अधिक, संख्यात गुण अधिक से है। आगे अवगाहना और स्थिति त्रिस्थानपतित कहेंगे। जैसे एक जीव की अवगाहना अँगुल के असंख्यातवें भाग कम पाँच सौ धनुष की है और दूसरे की पाँच सौ धनुष की है। अँगुल का असंख्यातवाँ भाग पाँच सौ धनुष का असंख्यातवाँ भाग है। इसलिए पहले जीव की अवगाहना असंख्यात भाग हीन है और दूसरे जीव की अवगाहना पहले की अपेक्षा असंख्यात भाग अधिक है। इसी तरह एक जीव की अवगाहना एक धनुष कम पाँच सौ धनुष की है और दूसरे की अवगाहना पाँच सौ धनुष की है। एक धनुष पाँच सौ धनुष का संख्यातवाँ भाग है अत: पहले जीव की अवगाहना संख्यात भाग हीन है और दूसरे की पहले की अपेक्षा संख्यात भाग अधिक है। इसी तरह एक जीव की अवगाहना 125 धनुष की है और दूसरे जीव की अवगाहना पाँच सौ धनुष की है। 125 को चार से गुणा करने पर पाँच सौ होते हैं। अत: पहले की अवगाहना संख्यात गुण हीन है और उसकी अपेक्षा दूसरे की अवगाहना संख्यात गुण अधिक है।

स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित इस प्रकार समझना चाहिए- जैसे एक पृथ्वीकाय के जीव की स्थिति मुहूर्त्त के असंख्यातवें भाग कम बावीस हजार वर्ष की है और दूसरे की बावीस हजार वर्ष की है। यहाँ पहले की स्थिति असंख्यात भाग हीन है और उसकी अपेक्षा दूसरे की स्थिति असंख्यात भाग अधिक है। इसी तरह एक पृथ्वीकाय के जीव की स्थिति मुहूर्त्त कम बावीस हजार वर्ष की है और दूसरे पृथ्वीकाय के जीव की बावीस हजार वर्ष की है। एक मुहूर्त्त बावीस हजार वर्ष का संख्यातवाँ भाग है। अत: पहले जीव की स्थिति संख्यात भाग हीन और उसकी अपेक्षा दूसरे जीव की स्थिति संख्यात भाग अधिक है। इसी प्रकार एक पृथ्वीकाय के जीव की स्थिति एक हजार वर्ष की है और दूसरे पृथ्वीकाय के जीव की स्थिति बावीस हजार वर्ष की है। एक हजार से बावीस हजार बावीस गुणा यानी संख्यात गुण अधिक है। अत: पहले जीव की स्थिति संख्यात गुण हीन है और दूसरे जीव की स्थिति संख्यातगुण अधिक है।

चतु:स्थानपतित- चतु:स्थानपतित का आशय यहाँ असंख्यात भाग हीन, संख्यात भाग हीन, संख्यात गुण हीन, असंख्यात गुण हीन तथा असंख्यात भाग अधिक, संख्यात भाग अधिक, संख्यात गुण अधिक व असंख्यात गुण अधिक से है। ऊपर जो त्रिस्थानपतित बताया है उससे चतु:स्थानपतित में असंख्यात गुण हीन और असंख्यात गुण अधिक बढ़ा है। अत: यहाँ अवगाहना और स्थिति की अपेक्षा असंख्यात गुण हीन और असंख्यात गुण अधिक का उदाहरण दिया जा

रहा है। जैसे एक जीव की अवगाहना अँगुल के असंख्यातवें भाग की है और दूसरे की अवगाहना एक अँगुल की है। अँगुल के असंख्यातवें भाग से एक अँगुल असंख्यात गुणा है। अतः पहले जीव की अवगाहना असंख्यात गुण हीन है और दूसरे जीव की अवगाहना असंख्यात गुण अधिक समझनी चाहिए। जैसे एक जीव की स्थिति एक हजार वर्ष की है और दूसरे की तीन पल्योपम की है। चूँकि असंख्यात वर्षों का एक पल्योपम होता है इसलिए एक हजार वर्ष से पल्योपम, असंख्यात गुण अधिक है अतः पहले जीव की स्थिति असंख्यात गुण हीन है और दूसरे की स्थिति असंख्यात गुण अधिक है। जिन जीवों की स्थिति में असंख्यात गुणा अन्तर होता है, उनकी स्थिति चतुःस्थानपतित समझनी चाहिए।

षट्स्थान- आगे वर्ण, गंध, रस और स्पर्श के बीस बोलों के पर्याय की तथा दस उपयोग के पर्याय की अपेक्षा षट्स्थानपतित कहेंगे। षट्स्थानपतित का आशय अनन्त भाग हीन, असंख्यात भाग हीन, संख्यात भाग हीन, संख्यातगुण हीन, असंख्यातगुण हीन, अनन्त गुण हीन और अनन्त भाग अधिक, असंख्यात भाग अधिक, संख्यात भाग अधिक, संख्यात गुण अधिक, असंख्यात गुण अधिक, अनन्त गुण अधिक से है। काले वर्ण की अनन्त पर्यायों को असद्भूत स्थापना से दस हजार माना जाय और सर्व जीवों की अनन्त संख्या को सौ मानकर उससे भाग दिया जाय तो भागफल सौ आयेगा। एक जीव के काले वर्ण की पर्याय दस हजार है और दूसरे जीव के काले वर्ण की पर्याय सौ कम यानी 9900 है। चूँकि सर्व जीवों की अनन्त संख्या से भाग देने से भागफल सौ आया है अतः यह सौ, अनन्तवाँ भाग है अतः 9900 काले वर्ण की पर्याय वाला दस हजार काले वर्ण की पर्याय वाले की अपेक्षा अनन्त भाग हीन है और दस हजार काले वर्ण की पर्याय वाला अनन्त भाग अधिक है।

इसी तरह काले वर्ण की पर्यायों को दस हजार माने और लोकाकाश प्रदेश प्रमाण असंख्यात संख्या को पचास मानलें। दस हजार में पचास का भाग देने पर भागफल 200 प्राप्त हुआ। यह दो सौ, असंख्यातवाँ भाग है। एक जीव की काले वर्ण की पर्याय 200 कम 9800 है और दूसरे जीव की दस हजार पर्याय है। पहले जीव की पर्याय दूसरे जीव की अपेक्षा असंख्यात भाग हीन है और दूसरे की पहले की अपेक्षा असंख्यात भाग अधिक है।

काले वर्ण की अनन्त पर्यायों को ऊपर लिखे अनुसार दस हजार मानलें और उत्कृष्ट संख्यात संख्या को दस मानलें। दस हजार में दस का भाग देने पर भागफल 1000 प्राप्त हुआ। यह एक हजार संख्यातवाँ भाग है। एक जीव की काले वर्ण की पर्याय एक हजार कम 9000 है और दूसरे की दस हजार है। अतः पहले जीव की काले वर्ण की पर्याय दूसरे की अपेक्षा संख्यात भाग हीन है और दूसरे की संख्यात भाग अधिक है।

ऊपर काले वर्ण की अनन्त पर्यायों को दस हजार माना है और उसमें सर्वजीव की अनन्त संख्या को सौ मान कर, लोकाकाश प्रदेश प्रमाण असंख्यात संख्या को पचास मान कर, उत्कृष्ट संख्यात को दस मान कर भाग दिया है और भागफल क्रमशः सौ, दो सौ और एक हजार आया है और सौ को अनन्तवाँ भाग, दो सौ को असंख्यातवाँ भाग और हजार को संख्यातवाँ भाग माना है। कल्पना करो एक जीव की काले वर्ण की पर्याय एक हजार है दूसरे की दस हजार है। हजार को दस से गुणा करने पर दस हजार आता है, इसलिए हजार पर्याय वाला संख्यात गुण हीन और दस हजार पर्याय वाला संख्यात गुण अधिक है। इसी तरह एक जीव की काले वर्ण की पर्याय दो सौ है और दूसरे की दस हजार है। दो सौ को पचास से गुणा करने पर दस हजार होते हैं अतः पहले जीव की पर्याय दूसरे की अपेक्षा असंख्यात गुण हीन है और दूसरे की असंख्यात गुण अधिक है। इसी प्रकार एक जीव की काले वर्ण की पर्याय सौ है और दूसरे की दस हजार है। सर्व जीवों की अनन्त संख्या को सौ माना है। सौ को सौ से गुणा करने पर दस हजार होते हैं। अतः सौ पर्याय वाला दस हजार पर्याय वाले की अपेक्षा अनन्त गुण हीन है और दस हजार पर्याय वाला अनन्त गुण अधिक है।

ज्ञातव्य- जब दो समान जीवों की तुलना आपस में करते हैं तब उनकी स्थिति, अवगाहना आदि में यदि दुगुने से कम अन्तर होता है तो उसे संख्यात भाग हीन-अधिक ठाण (स्थान) कहते हैं। संख्यात-असंख्यात और अनन्त इन तीनों में आपस में अलग-अलग तुलना करने पर यदि दुगुने से कम अन्तर हो तो उसे विशेषाधिक भी कहते हैं।

जब दो समान जीवों की आपस में तुलना करें और उनकी स्थिति, अवगाहना आदि में दुगुने से अधिक अन्तर होता है अर्थात् संख्यात गुण अधिक अन्तर होता है तो उसे संख्यात गुण हीन-अधिक ठाण कहते हैं।

जब दो समान जीवों की आपस में तुलना करें और उनकी स्थिति, अवगाहना आदि में असंख्यातवें भाग का ही अन्तर होता है तो उसे असंख्यात भाग-हीन-अधिक ठाण कहते हैं।

जब दो समान जीवों की आपस में तुलना करें और उनकी स्थिति, अवगाहना आदि में असंख्यात गुण अन्तर हो तो उसे असंख्यात गुण हीन-अधिक ठाण कहते हैं।

जब दो समान जीवों की आपस में तुलना करें और उनकी वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्शादि तथा मति, श्रुत आदि उपयोगों में अनन्त गुणा

अन्तर होता है तो उसे अनन्त गुण-हीन अधिक ठाण कहते हैं। जब वर्णादि में तथा उपयोगों में अनन्तवें भाग का ही अन्तर हो तो अनन्तवाँ भाग हीन-अधिक ठाण कहलाता है।

पर्याय दो तरह की हैं- जीव पर्याय और अजीव पर्याय। जीव पर्याय संख्यात असंख्यात न हो कर अनन्त हैं। तेईस दंडक के जीव असंख्यात हैं, वनस्पति के जीव अनन्त हैं और सिद्ध भगवान अनन्त हैं।

ज्ञातव्य- प्रत्येक जीव की पर्याय, संख्यात असंख्यात न होकर अनन्त होती है, क्योंकि एक-एक जीव वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्शादि की अपेक्षा तथा मति, श्रुत ज्ञान आदि दस उपयोगों (केवल ज्ञान, केवल दर्शन को छोड़कर) की अपेक्षा अनन्त गुणी हानि-वृद्धि (तरतमता) हो सकती है। 24 दण्डकों के सभी जीवों की पर्याय अनन्त-अनन्त होती हैं।

इस जीव पज्जवा (पर्याय) के थोकड़े में द्रव्य, प्रदेश, अवगाहना, स्थिति, वर्णादि तथा उपयोगों की अपेक्षा एक जीव की दूसरे जीव से तुलना की गई है। सभी बोलों में द्रव्य और प्रदेश की अपेक्षा तो तुल्य ही कहा गया है। इसका कारण यह है कि द्रव्य से- तात्पर्य जीवों की गिनती से है। जिनकी आपस में तुलना की जा रही है। अर्थात् जिस जीव की, दूसरे जिस जीव से तुलना की जा रही है, वे दोनों संख्या में एक-एक ही है अतः द्रव्य से तुल्य कहा गया है।

प्रदेश से तुल्य बतलाने का कारण यह है कि सभी जीवों के आत्म-प्रदेशों की संख्या बराबर ही होती है। अर्थात् सभी जीवों के आत्म-प्रदेश असंख्यात ही होते हैं। यद्यपि असंख्यात के असंख्यात भेद भी होते हैं, किन्तु आत्म-प्रदेशों की संख्या में एक प्रदेश का भी अन्तर नहीं होता, संख्या में एक समान ही होते हैं। जिस जीव की, दूसरे जिस जीव से तुलना की जा रही है, उन दोनों जीवों के आत्म-प्रदेश एक समान (तुल्य) ही होते हैं, अतः प्रदेश से भी तुल्य कहा गया है। जैसे हाथी और चींटी के आत्मप्रदेश एक समान होते हैं।

जीव पज्जवा के थोकड़े में स्थिति और अवगाहना की अपेक्षा भी जीवों की तुलना की जाती है। विशेषता यह है कि स्थिति, अवगाहना में अधिक से अधिक चतुःस्थानपतित (चउट्ठाणवडिया) ठाण बनता है, षट्स्थान का ठाण नहीं बनता। इसका कारण यह है कि किसी भी जीव की एक भव की स्थिति असंख्यात काल तक की होती है, उससे अधिक अर्थात् अनन्त काल की नहीं हो सकती। इसी प्रकार अवगाहना भी जीव की अधिकतम सम्पूर्ण लोकव्यापी (केवली समुद्घात की अपेक्षा) हो सकती है, उससे अधिक नहीं हो सकती, और वह भी असंख्यात गुणी है। इस कारण अवगाहना तथा स्थिति में असंख्यात गुणा ही अन्तर होता है, अनन्त गुणा अन्तर नहीं हो पाता। संख्यात की गणना में दुट्ठाण, असंख्यात की गणना में चउट्ठाण तथा अनन्त की गणना में छट्ठाण तक बन सकते हैं।

सामान्य कथन- नारकी के नैरयिकों की पर्याय संख्यात और असंख्यात न हो कर अनन्त हैं। नारकी का एक नैरयिक दूसरे नैरयिक से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित (चउट्ठाणवडिया) है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, वर्ण, गंध, रस और स्पर्श के बीस बोल की पर्यायों की अपेक्षा एवं नौ उपयोग (3 ज्ञान 3 अज्ञान 3 दर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित (छट्ठाणवडिया) है। नारकी की तरह देवता के तेरह दण्डक और तिर्यंच पंचेन्द्रिय का एक दण्डक-ये चौदह दण्डक कहने चाहिए, किन्तु ज्योतिषी और वैमानिक देवों में स्थिति त्रिस्थानपतित (तिट्ठाणवडिया) कहनी चाहिए।

पृथ्वीकाय की पर्याय अनन्त हैं। एक पृथ्वीकाय दूसरे पृथ्वीकाय से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित है, वर्णादि के बीस बोल की पर्यायों की अपेक्षा तथा तीन उपयोग (दो अज्ञान, एक दर्शन) की अपेक्षा षट्स्थानपतित है। पृथ्वीकाय की तरह शेष चार स्थावर कहना चाहिए।

द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय इन तीन विकलेन्द्रिय की पर्याय भी अनन्त हैं। द्वीन्द्रिय-द्वीन्द्रिय से, त्रीन्द्रिय-त्रीन्द्रिय से, चतुरिन्द्रिय-चतुरिन्द्रिय से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित है, वर्णादि के बीस बोल की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है। द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय पाँच उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा और चतुरिन्द्रिय छह उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है।

मनुष्य की पर्याय अनन्त हैं। मनुष्य मनुष्य से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, वर्णादि के बीस बोल की पर्यायों की अपेक्षा तथा दस उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है तथा केवलज्ञान, केवलदर्शन की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है।

ज्ञातव्य- स्थिति जीवन पर्यन्त की होती है, जबकि अवगाहना वर्तमान समय की होती है। जघन्य स्थिति सबसे छोटे भव को कहा जाता है। नारकी, देवता में दस हजार वर्ष की तथा मनुष्य तिर्यंच में जो जीव अपर्याप्त अवस्था में जल्दी से जल्दी काल करते हैं, उनकी जघन्य स्थिति मानी जाती है। अपर्याप्त अवस्था में काल करने वाले एकान्त मिथ्यादृष्टि होते हैं। यही कारण है कि सामान्य मनुष्य-तिर्यंच में जघन्य स्थिति में ज्ञान का उपयोग नहीं माना जाता।

काले वर्णादि में जघन्य और उत्कृष्ट का स्थान एक ही होता है, उनमें न्यूनाधिकता संभव न होने से, उन-उन वर्णादि की अपेक्षा तुल्य कहा जाता हैं। मध्यम गुण में संख्यात, असंख्यात तथा अनन्त गुणी हानि-वृद्धि संभव होने से षट्स्थानपतित कहा जाता है।

जिस जीव में जब ज्ञान होता है, तब अज्ञान नहीं होता। जब अज्ञान होता है तब ज्ञान नहीं होता। सम्यग्दृष्टि में ज्ञान होता है तथा

मिथ्यादृष्टि व मिश्रदृष्टि में अज्ञान होता है। चक्षुदर्शनादि के साथ ज्ञान अथवा अज्ञान कोई भी हो सकता है।

इस थोकड़े में उत्पत्ति के प्रथम समय में भी चक्षुदर्शन माना है, क्योंकि तिर्यंच पंचेन्द्रिय में जघन्य अवगाहना में 6 उपयोग (2 ज्ञान, 2 अज्ञान, 2 दर्शन) की अपेक्षा षट्स्थानपतित कहा है। उत्पत्ति के प्रथम समय में चक्षु दर्शन मानने का कारण यह है कि काय स्थिति (पद 18) के अधिकार में चक्षुदर्शन की कायस्थिति 1000 सागर झाझेरी कही गई। बाटे बहती अवस्था में भी लब्धि की अपेक्षा चक्षुदर्शन संभव है। सभी चौरेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय जीवों में जघन्य अवगाहना (उत्पत्ति के प्रथम समय में) में चक्षुदर्शन भी इसी अपेक्षा से माना गया है। इस थोकड़े में शक्ति की अपेक्षा चक्षुदर्शन उत्पत्ति के प्रथम समय में माना गया है, जबकि उपयोग द्वार के थोकड़े में चक्षुदर्शन की प्रवृत्ति नहीं होने से उत्पत्ति के प्रथम समय में चक्षुदर्शन नहीं माना है।

विशेष कथन (नैरयिकों की अपेक्षा)

जघन्य अवगाहना वाले नैरयिकों की अनन्त पर्याय हैं। जघन्य अवगाहना वाला नैरयिक जघन्य अवगाहना वाले नैरयिक से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा तुल्य है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है तथा वर्णादि के बीस बोल तथा नौ उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है। उत्कृष्ट अवगाहना वाले नैरयिकों की भी अनन्त पर्याय हैं। उत्कृष्ट अवगाहना वाला नैरयिक उत्कृष्ट अवगाहना वाले नैरयिक से द्रव्य, प्रदेश तथा अवगाहना की अपेक्षा तुल्य है, स्थिति की अपेक्षा द्विस्थानपतित (दुट्ठाणवडिया) है, वर्णादि के बीस बोल तथा 9 उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है। मध्यम अवगाहना वाला नैरयिक मध्यम अवगाहना वाले नैरयिक से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना और स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है तथा वर्णादि के बीस बोल और 9 उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है।

ज्ञातव्य– नारकी में तथा भवनपति, वाणव्यन्तर देवों में जघन्य स्थिति दस हजार वर्ष तथा उत्कृष्ट असंख्यात काल (पल्योपम, सागरोपम) होने से वहाँ भी स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थानपतित कहा गया है।

उत्कृष्ट अवगाहना (500 धनुष) वाले नैरयिक सातवीं नारकी में होते हैं। सातवीं नारकी में स्थिति जघन्य- 22 सागरोपम तथा उत्कृष्ट 33 सागरोपम की होती है। जघन्य-उत्कृष्ट इन दोनों स्थितियों में संख्यात भाग हीन-अधिक तथा असंख्यात भाग हीन-अधिक ये दो स्थान ही बन पाते हैं, इस कारण से स्थिति की अपेक्षा द्विस्थानपतित कहा गया है।

जघन्य स्थिति वाले नैरयिकों की अनन्त पर्याय हैं। जघन्य स्थिति वाला नैरयिक जघन्य स्थिति वाले नैरयिक से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य है, वर्णादि के बीस बोल तथा 9 उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है। उत्कृष्ट स्थिति वाले नैरयिक भी इस तरह कहना। मध्यम स्थिति वाले नैरयिक भी इसी तरह कहना, किन्तु स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थानपतित कहना।

जघन्य गुण काले वर्ण वाले नैरयिकों की अनन्त पर्याय हैं। जघन्य गुण काले वर्ण वाला नैरयिक जघन्य गुण काले वर्ण वाले नैरयिक से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, काले वर्ण की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है, शेष 19 वर्णादि की पर्यायों की अपेक्षा तथा 9 उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है। उत्कृष्ट गुण काले वर्ण वाले नैरयिक भी इसी तरह कहना। मध्यम गुण काले वर्ण वाले नैरयिक भी इसी तरह कहना, अन्तर इतना है कि इनमें वर्णादि बीस बोल की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित कहना। जिस तरह काले वर्ण वाले नैरयिकों के बाबत कहा उसी तरह शेष 19 वर्णादि वाले नैरयिकों का भी कहना।

जघन्य मतिज्ञान वाले नैरयिकों की अनन्त पर्याय हैं। जघन्य मतिज्ञान वाला नैरयिक जघन्य मतिज्ञान वाले नैरयिक से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, वर्णादि बीस बोल की पर्यायों तथा पाँच उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है। मतिज्ञान की पर्याय की अपेक्षा तुल्य है। उत्कृष्ट मतिज्ञान वाले भी इसी तरह कहना। मध्यम मतिज्ञान वाले भी इसी तरह कहना। परन्तु इनमें छह उपयोग की अपेक्षा षट्स्थानपतित कहना। मतिज्ञान की तरह श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान और तीन अज्ञान भी कहना। जिनमें ज्ञान हैं उनमें अज्ञान नहीं होते और जिनमें अज्ञान हैं उनमें ज्ञान नहीं होते।

जघन्य चक्षुदर्शन वाले नैरयिकों की अनन्त पर्याय हैं। जघन्य चक्षुदर्शन वाला नैरयिक जघन्य चक्षुदर्शन वाले नैरयिक से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, बीस वर्णादि की पर्यायों की अपेक्षा तथा 8 उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है, चक्षुदर्शन की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है। इसी तरह उत्कृष्ट चक्षुदर्शन वाले कहना। मध्यम चक्षुदर्शन वाले भी इसी तरह कहना। इनमें 9 ही उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित कहना। चक्षुदर्शन की तरह अचक्षुदर्शन और

अवधिदर्शन भी कहना। इस तरह नारकी के अवगाहना, स्थिति, वर्णादि 20 बोल तथा 9 उपयोग, इन 31 के जघन्य, उत्कृष्ट, मध्यम की अपेक्षा 31x3=93 अलावा हुए।

नैरयिकों की तरह दस भवनपति देवों की पर्याय भी अनन्त हैं। द्रव्य, प्रदेश तथा जघन्य, उत्कृष्ट और मध्यम अवगाहना, स्थिति, वर्णादि 20 बोल तथा 9 उपयोग-सभी नैरयिकों की तरह कह देना चाहिए। अन्तर केवल इतना है कि उत्कृष्ट अवगाहना में स्थिति द्विस्थानपतित न कह कर चतु:स्थानपतित कहना चाहिए। इस प्रकार भवनपति देवों के 93x10=930 अलावा हुए।

पृथ्वीकाय की अपेक्षा-

जघन्य अवगाहना वाले पृथ्वीकाय की पर्याय भी अनन्त हैं। जघन्य अवगाहना वाला पृथ्वीकाय का जीव, जघन्य अवगाहना वाले पृथ्वीकाय के जीव से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा तुल्य, स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित है, वर्णादि बीस बोलों की पर्यायों की अपेक्षा तथा तीन उपयोग (दो अज्ञान, अचक्षुदर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है। उत्कृष्ट अवगाहना वाले पृथ्वीकाय के जीवों का भी इसी प्रकार कहना। मध्यम अवगाहना वाले पृथ्वीकाय के जीवों के लिए भी इसी तरह कहना, सिर्फ अवगाहना चतु:स्थानपतित कहनी।

जघन्य स्थिति वाले पृथ्वीकाय के जीव जघन्य स्थिति वाले पृथ्वीकाय के जीव से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतु:स्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य है, वर्णादि 20 बोल की पर्याय तथा तीन उपयोग की पर्याय की अपेक्षा षट्स्थानपतित है। उत्कृष्ट स्थिति वाले पृथ्वीकाय के जीव भी इसी प्रकार कहना। मध्यम स्थिति वाले पृथ्वीकाय के जीव भी इसी प्रकार कहना। सिर्फ स्थिति त्रिस्थानपतित कहनी चाहिए।

ज्ञातव्य-पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय और वायुकाय इन चार स्थावर जीवों की अवगाहना जघन्य तथा उत्कृष्ट दोनों की अंगुल के असंख्यातवें भाग की होती है। किन्तु जघन्य से उत्कृष्ट अवगाहना असंख्यात गुणी होती है। अंगुल के असंख्यातवें भाग के भी असंख्यात भेद होते हैं। इसी कारण अवगाहना की अपेक्षा चतु:स्थानपतित कहा जाता है।

पाँचों ही स्थावरों की स्थिति संख्यात काल की होती है, इस कारण से स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित ही कहा जाता है। जहाँ संख्यात काल से असंख्यात काल वाले जीवों की तुलना की जाती है, वहाँ स्थिति की अपेक्षा चतु:स्थानपतित होता है।

जघन्य गुण काले वर्ण वाला पृथ्वीकाय का जीव जघन्य गुण काले वर्ण वाले पृथ्वीकाय के जीव से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतु:स्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित है, काले वर्ण की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है, शेष वर्णादि 19 बोल तथा तीन उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है। इसी तरह उत्कृष्ट गुण काले वर्ण वाले पृथ्वीकाय के जीव भी कहना। मध्यम गुण काले वर्ण वाले पृथ्वीकाय के जीवों में वर्णादि बीस बोल की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित कहना, शेष जघन्य गुण काले वर्ण की तरह कह देना चाहिए। काले वर्ण की तरह शेष 19 वर्णादि के बोल कहना चाहिए।

जघन्य मति अज्ञान वाला पृथ्वीकाय का जीव जघन्य मति अज्ञान वाले पृथ्वीकाय के जीव से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतु:स्थानपतित है और स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित है, वर्णादि 20 बोल की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है, मतिअज्ञान की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है, श्रुत अज्ञान और अचक्षुदर्शन की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है। उत्कृष्ट मति अज्ञान वाले पृथ्वीकाय के जीव के लिए भी इसी तरह कहना। मध्यम मति अज्ञान वाले पृथ्वीकाय के जीव के लिए भी इसी तरह कहना चाहिए। अन्तर यह है कि इसमें तीनों उपयोगों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित कहना। मति अज्ञान वाले पृथ्वीकाय के जीव की तरह ही श्रुत अज्ञान और अचक्षुदर्शन वाले पृथ्वीकाय के जीवों के भी जघन्य, मध्यम और उत्कृष्ट भेद कर वर्णन करना चाहिए।

पृथ्वीकाय के अवगाहना, स्थिति, वर्णादि 20 बोल और 3 उपयोग इन 25 बोल के जघन्य, उत्कृष्ट, मध्यम की अपेक्षा 25x3=75 अलावा हुए। पृथ्वीकाय की तरह ही शेष चार स्थावर भी कहना चाहिए। इस तरह पाँच स्थावर के 5x75=375 अलावा हुए।

द्वीन्द्रिय की अपेक्षा-

जघन्य अवगाहना वाले द्वीन्द्रिय की अनन्त पर्याय हैं। जघन्य अवगाहना वाला द्वीन्द्रिय जघन्य अवगाहना वाले द्वीन्द्रिय से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा तुल्य है, स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित है, वर्णादि 20 बोल की पर्यायों की अपेक्षा तथा पाँच उपयोग (दो ज्ञान, दो अज्ञान और अचक्षुदर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है। उत्कृष्ट अवगाहना वाले द्वीन्द्रिय भी जघन्य अवगाहना वाले द्वीन्द्रिय की तरह कहना, इतना अन्तर है कि उत्कृष्ट अवगाहना वाले में 3 उपयोग कहना। मध्यम अवगाहना वाले द्वीन्द्रिय भी जघन्य अवगाहना वाले द्वीन्द्रिय की तरह कहना, अन्तर केवल इतना है कि इनमें अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित कहना चाहिए।

ज्ञातव्य :- जघन्य अवगाहना उत्पत्ति के प्रथम समय में मानी जाती है। अर्थात् उत्पत्ति के प्रथम समय में जीव की जो अवगाहना होती है, उसे जघन्य अवगाहना कहते हैं। उत्पत्ति के दूसरे समय से मध्यम अवगाहना मानी जाती है। अपर्याप्त अवस्था में भी मध्यम अवगाहना होती है, यही कारण है कि बेइन्द्रियादि जीवों में मध्यम अवगाहना में सास्वादन सम्यक्त्व हो सकती है। इसलिए सास्वादन सम्यक्त्व वाले बेइन्द्रियादि जीवों में दो ज्ञान तथा मिथ्यादृष्टि जीवों में दो अज्ञान होते हैं।

जघन्य स्थिति वाला द्वीन्द्रिय जघन्य स्थिति वाले द्वीन्द्रिय से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य है, वर्णादि 20 बोल की पर्यायों तथा तीन उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है। इसी तरह उत्कृष्ट स्थिति वाले द्वीन्द्रिय भी कहना, अन्तर इतना है कि इनमें 5 उपयोग कहना। मध्यम स्थिति वाले द्वीन्द्रिय भी जघन्य स्थिति वाले द्वीन्द्रिय की तरह कहना, अन्तर इतना है कि इनमें स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित कहना तथा इनमें 5 उपयोग कहना।

ज्ञातव्य :- जिन बेइन्द्रियादि जीवों में सास्वादन सम्यक्त्व होती है, वे अपर्याप्त अवस्था में काल नहीं करते, अतः वे जघन्य स्थिति वाले न होकर मध्यम या उत्कृष्ट स्थिति वाले ही होते हैं।

जघन्य गुण काले वर्ण वाला द्वीन्द्रिय जघन्य गुण काले वर्ण वाले द्वीन्द्रिय से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित है, काले वर्ण की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है, शेष 19 वर्णादि की पर्यायों तथा 5 उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है। उत्कृष्ट गुण काले वर्ण वाले द्वीन्द्रिय भी जघन्य गुण काले वर्ण वाले द्वीन्द्रिय की तरह कहना। मध्यम गुण काले वर्ण वाले द्वीन्द्रिय भी जघन्य गुण काले वर्ण वाले द्वीन्द्रिय की तरह कहना, अन्तर यह है कि इनमें वर्णादि 20 बोल की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित कहना। काले वर्ण की तरह शेष 19 वर्णादि के बोल कह देना चाहिए।

जघन्य मतिज्ञान वाला द्वीन्द्रिय जघन्य मतिज्ञान वाले द्वीन्द्रिय से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित है, वर्णादि बीस बोल की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है, मतिज्ञान की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है, श्रुतज्ञान और अचक्षुदर्शन की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है। जघन्य मतिज्ञान वाले द्वीन्द्रिय की तरह उत्कृष्ट मतिज्ञान वाले द्वीन्द्रिय भी कहना। मध्यम मतिज्ञान वाले द्वीन्द्रिय भी जघन्य मतिज्ञान वाले द्वीन्द्रिय की तरह कहना, अन्तर इतना है कि तीनों उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित कहना। मतिज्ञान वाले द्वीन्द्रिय की तरह श्रुतज्ञान वाले द्वीन्द्रिय भी कहना। मतिज्ञान वाले, श्रुतज्ञान वाले द्वीन्द्रिय की तरह मति अज्ञान वाले, श्रुत अज्ञान वाले द्वीन्द्रिय भी कहना, सिर्फ ज्ञान की जगह अज्ञान कहना। अचक्षुदर्शन वाले द्वीन्द्रिय भी मतिज्ञान वाले द्वीन्द्रिय की तरह कहना। अन्तर इतना है कि जघन्य और उत्कृष्ट अचक्षुदर्शन वाले द्वीन्द्रिय अचक्षुदर्शन की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है और दो ज्ञान, दो अज्ञान इन चार उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है तथा मध्यम अचक्षुदर्शन वाले पाँच उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है।

द्वीन्द्रिय के अवगाहना, स्थिति, वर्णादि के 20 तथा उपयोग 5 कुल 27 बोल के जघन्य, उत्कृष्ट, मध्यम की अपेक्षा 27x3=81 अलावा हुए। द्वीन्द्रिय की तरह त्रीन्द्रिय भी कहना। इनके भी 81 अलावा कहना। चतुरिन्द्रिय में चक्षुदर्शन अधिक है इसलिए 28 बोल हुए। जघन्य, उत्कृष्ट और मध्यम के भेद से 28x3=84 अलावा हुए। विकलेन्द्रिय के कुल 81+81+84=246 अलावा हुए।

तिर्यंच पंचेन्द्रिय की अपेक्षा- तिर्यंच पंचेन्द्रिय की अनन्त पर्याय हैं। जघन्य अवगाहना वाला तिर्यंच पंचेन्द्रिय जघन्य अवगाहना वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा तुल्य है, स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित है, वर्णादि 20 बोल की पर्यायों की अपेक्षा और छह उपयोग (दो ज्ञान, दो अज्ञान, दो दर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है। उत्कृष्ट अवगाहना वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय में उपयोग 9 होते हैं, इन 9

उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है, शेष जघन्य अवगाहना वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय के समान कहना। मध्यम अवगाहना वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय उत्कृष्ट अवगाहना वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय की तरह कहना, इतना अन्तर है कि अवगाहना और स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थानपतित कहना।

ज्ञातव्य– तिर्यंच पंचेन्द्रिय में जघन्य अवगाहना संख्यात वर्ष की आयु वालों की ही होती है, युगलिकों की नहीं। यद्यपि युगलिकों में भी उत्पत्ति के समय अवगाहना अंगुल के असंख्यातवें भाग की होती है, किन्तु युगलिकों में अंगुल का असंख्यातवाँ भाग सामान्य तिर्यंच पंचेन्द्रिय के उत्पत्ति-समय के अंगुल के असंख्यातवें भाग से बड़ा होता है, इस कारण जघन्य अवगाहना तिर्यंच युगलिकों में नहीं मानी है।

सामान्य तिर्यंचों में जघन्य अवगाहना उत्पत्ति के समय में होती है। उत्पत्ति के समय में तथा अपर्याप्त अवस्था में इनमें अवधिज्ञान अथवा विभंगज्ञान संभव नहीं है। पर्याप्त अवस्था में किसी-किसी को हो सकता है। युगलिकों में तो अवधिज्ञान तथा विभंगज्ञान होता ही नहीं है।

मध्यम अवगाहना वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय में आपस में तुलना करने पर स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थानपतित कहा गया है। क्योंकि मध्यम अवगाहना में संख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी तिर्यंच तथा असंख्यात वर्ष की आयु युगलिक तिर्यंच दोनों का समावेश हो जाता है।

उत्कृष्ट अवगाहना तिर्यंचों में युगलिकों की न होकर संख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी तिर्यंचों की होती है। क्योंकि युगलिकों की उत्कृष्ट अवगाहना 6 गाउ ही होती है। जबकि संख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी तिर्यंच कर्मभूमिज की अवगाहना 1000 योजन की होती है। संख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी तिर्यंचों में 3 ज्ञान, 3 अज्ञान तथा 3 दर्शन ये 9 उपयोग हो सकते हैं। अतः इन 9 उपयोगों की अपेक्षा षट्स्थानपतित कहा गया है।

जघन्य स्थिति वाला तिर्यंच पंचेन्द्रिय जघन्य स्थिति वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य है, बीस वर्णादि की पर्यायों की अपेक्षा और चार उपयोग (दो अज्ञान, दो दर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है। उत्कृष्ट स्थिति वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय भी जघन्य स्थिति वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय की तरह कहना, अन्तर यह है कि इनमें छह उपयोग (दो ज्ञान, दो अज्ञान, दो दर्शन) कहना। मध्यम स्थिति वाला तिर्यंच पंचेन्द्रिय भी जघन्य स्थिति वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय की तरह कहना, अन्तर इतना है कि स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थानपतित कहना तथा नव उपयोग कहना।

ज्ञातव्य– पंचेन्द्रिय तिर्यंचों की जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त्त तथा उत्कृष्ट तीन पल्योपम (युगलिकों की अपेक्षा से) की होती है। एक पल्योपम असंख्यात हजार वर्षों का होता है। अतः उसमें असंख्यात गुण हानि-वृद्धि संभव होने से स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थानपतित कहा गया है।

जघन्य गुण काले वर्ण वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय जघन्य गुण काले वर्ण वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, काले वर्ण की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है, शेष वर्णादि उन्नीस बोल की पर्यायों की अपेक्षा तथा 9 उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है। उत्कृष्ट गुण काले वर्ण वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय भी जघन्य गुण काले वर्ण वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय की तरह कहना। इसी तरह मध्यम गुण काले वर्ण वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय भी कहना, अन्तर इतना है कि इनमें बीस वर्णादि की अपेक्षा षट्स्थानपतित कहना। काले वर्ण वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय की तरह शेष 19 वर्णादि वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय कहना।

जघन्य मतिज्ञान वाला तिर्यंच पंचेन्द्रिय जघन्य मतिज्ञान वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, वर्णादि 20 बोल की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है, मतिज्ञान की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है, तीन उपयोग (श्रुतज्ञान, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है। जघन्य मतिज्ञान वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय की तरह उत्कृष्ट मतिज्ञान वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय कहना, अन्तर इतना है कि उत्कृष्ट मतिज्ञान वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित कहना तथा उत्कृष्ट मतिज्ञान की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य और शेष 5 उपयोग (श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान और तीन दर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित कहना। मध्यम मतिज्ञान वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय भी जघन्य मतिज्ञान वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय की तरह कहना, इतना अन्तर है कि इनमें छह उपयोग की अपेक्षा षट्स्थानपतित कहना। मतिज्ञान वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय की तरह ही श्रुतज्ञान वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय कहना। मतिज्ञान की जगह श्रुतज्ञान कहना।

ज्ञातव्य– जघन्य मतिज्ञान वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय को अवधिज्ञान नहीं होता, इसी कारण जघन्य मतिज्ञान में 3 उपयोग (श्रुतज्ञान, चक्षु-अचक्षु दर्शन) की अपेक्षा षट्स्थानपतित कहा गया है।

उत्कृष्ट मतिज्ञान, श्रुतज्ञान में स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित कहा है। उसका कारण यह है कि युगलिकों में उत्कृष्ट उपयोग नहीं पाया जाता है।

जघन्य अवधिज्ञान वाला तिर्यंच पंचेन्द्रिय जघन्य अवधिज्ञान वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित है, बीस वर्णादि की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है, पाँच उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है, अवधिज्ञान की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है। जघन्य अवधिज्ञान वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय की तरह उत्कृष्ट अवधिज्ञान वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय कहना। मध्यम अवधिज्ञान वाले भी इसी तरह कहना, अन्तर इतना है कि इनमें छह उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित कहना। मतिज्ञानी, श्रुतज्ञानी की तरह मतिअज्ञानी, श्रुत अज्ञानी कहना। अवधिज्ञान की तरह विभंगज्ञान कहना।

जघन्य चक्षुदर्शन वाला तिर्यंच पंचेन्द्रिय जघन्य चक्षुदर्शन वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, बीस वर्णादि की पर्यायों की अपेक्षा तथा पाँच उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है, चक्षुदर्शन की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है। जघन्य चक्षुदर्शन वाले की तरह उत्कृष्ट चक्षुदर्शन वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय भी कहना, अन्तर इतना है कि उत्कृष्ट चक्षुदर्शन वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय में स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित व आठ उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित कहना। मध्यम चक्षुदर्शन वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय भी जघन्य चक्षुदर्शन वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय की तरह कहना, अन्तर इतना है कि इनमें 9 उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित कहना। चक्षुदर्शन वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय की तरह अचक्षुदर्शन वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय भी कहना।

जघन्य अवधिदर्शन वाला तिर्यंच पंचेन्द्रिय जघन्य अवधिदर्शन वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित है, बीस वर्णादि की पर्यायों की अपेक्षा और आठ उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है, अवधिदर्शन की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है। जघन्य अवधिदर्शन वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय की तरह उत्कृष्ट अवधिदर्शन वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय भी कहना। मध्यम अवधिदर्शन वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय भी इसी तरह कहना, इतना अन्तर है कि मध्यम अवधिदर्शन वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय में नौ उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित कहना।

इस तरह अवगाहना, स्थिति, वर्णादि के बीस बोल और 9 उपयोग, इन 31 बोल के जघन्य, उत्कृष्ट और मध्यम के भेद से 31X3=93 अलावा हुए।

मनुष्य की अपेक्षा-

मनुष्य की अनन्त पर्याय कह गई हैं। जघन्य अवगाहना वाला मनुष्य जघन्य अवगाहना वाले मनुष्य से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा तुल्य है, स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित है, बीस वर्णादि की पर्यायों की अपेक्षा तथा आठ उपयोग (3 ज्ञान 2 अज्ञान और 3 दर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है। उत्कृष्ट अवगाहना वाले मनुष्य भी इसी तरह कहना, अन्तर इतना है कि स्थिति की अपेक्षा एकस्थानपतित कहना तथा 6 उपयोग (दो ज्ञान, दो अज्ञान, दो दर्शन) कहना। मध्यम अवगाहना वाला मनुष्य मध्यम अवगाहना वाले मनुष्य से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, बीस वर्णादि की पर्यायों की अपेक्षा तथा दस उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है, केवलज्ञान-केवलदर्शन की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है।

ज्ञातव्य- मध्यम अवगाहना वाले मनुष्यों की आपस में तुलना करने पर स्थिति व अवगाहना दोनों की अपेक्षा चतुःस्थानपतित होता है। क्योंकि मध्यम अवगाहना वाले मनुष्यों में संख्यात वर्ष की आयु वाले सामान्य मनुष्य तथा असंख्यात वर्ष की आयु वाले युगलिक मनुष्य दोनों का समावेश होता है। मध्यम अवगाहना वाले में संख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी मनुष्यों की अपेक्षा 4 ज्ञान, 3 अज्ञान, 3 दर्शन इन 10 उपयोग की अपेक्षा षट्स्थानपतित कहा गया है।

उत्कृष्ट अवगाहना वाले मनुष्यों में स्थिति की अपेक्षा एकस्थानपतित कहा है। उत्कृष्ट अवगाहना मनुष्यों में युगलिकों की अपेक्षा 3 गाउ की होती है। उत्कृष्ट अवगाहना वाले युगलिक मनुष्यों की स्थिति तीन पल्योपम की होती है। उत्कृष्ट अवगाहना वाले मनुष्यों की स्थिति में असंख्यात भाग-हीनाधिक का ही स्थान बनता है। यद्यपि असंख्यात भाग-हीनाधिक में संख्यात वर्षों का भी अन्तर हो सकता है, किन्तु यहाँ अन्तर्मुहूर्त्त का ही अन्तर समझना चाहिए।

जघन्य स्थिति वाला मनुष्य, जघन्य स्थिति वाले मनुष्य से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य है, बीस वर्णादि की पर्यायों तथा चार उपयोग (दो अज्ञान, दो दर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है। उत्कृष्ट स्थिति वाला मनुष्य भी इसी तरह कहना, अन्तर यह है कि छह उपयोग (दो ज्ञान, दो अज्ञान, दो दर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित कहना। मध्यम स्थिति वाला

मनुष्य भी इसी तरह कहना, अन्तर इतना है कि स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थानपतित कहना तथा दस उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित कहना और केवलज्ञान-केवलदर्शन की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य कहना।

जघन्य गुण काले वर्ण वाला मनुष्य, जघन्य गुण काले वर्ण वाले मनुष्य से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, काले वर्ण की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है, शेष 19 वर्णादि की पर्यायों की अपेक्षा तथा दस उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है, केवलज्ञान-केवलदर्शन की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है। जघन्य गुण काले वर्ण वाले मनुष्य की तरह उत्कृष्ट गुण काले वर्ण वाला मनुष्य भी कहना। मध्यम गुण काले वर्ण वाला मनुष्य भी इसी तरह कहना, अन्तर इतना है कि बीस वर्णादि की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित कहना। काले वर्ण की तरह शेष 19 वर्णादि कहना।

जघन्य मतिज्ञान वाला मनुष्य जघन्य मतिज्ञान वाले मनुष्य से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है। बीस वर्णादि की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है, मतिज्ञान की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है, तीन उपयोग (श्रुतज्ञान और दो दर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है। जघन्य मतिज्ञान वाले मनुष्य की तरह उत्कृष्ट मतिज्ञान वाला मनुष्य कहना, अन्तर इतना है कि स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित कहना, तीन ज्ञान और तीन दर्शन, इन छह उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित कहना। मध्यम मतिज्ञान वाला मनुष्य भी उत्कृष्ट मतिज्ञान वाले मनुष्य की तरह कहना, अन्तर इतना है कि स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थानपतित कहना, सात उपयोग (चार ज्ञान, तीन दर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित कहना। मतिज्ञान की तरह श्रुतज्ञान कह देना।

जघन्य अवधिज्ञान वाला मनुष्य जघन्य अवधिज्ञान वाले मनुष्य से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा त्रिस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित है, बीस वर्णादि की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है, 6 उपयोग (तीन ज्ञान, तीन दर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है। अवधिज्ञान की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है। उत्कृष्ट अवधिज्ञान वाला मनुष्य भी जघन्य अवधिज्ञान वाले मनुष्य की तरह कहना। मध्यम अवधिज्ञान वाला मनुष्य भी इसी तरह कहना, अन्तर यह है कि अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित कहना और 7 उपयोग (4 ज्ञान, 3 दर्शन) की पर्याय की अपेक्षा षट्स्थानपतित कहना। अवधिज्ञान की तरह मनःपर्यवज्ञान भी कहना, अन्तर इतना है कि मध्यम मनःपर्यायज्ञान वाले मनुष्य में अवगाहना त्रिस्थानपतित कहना।

ज्ञातव्य- संख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी मनुष्यों में जघन्य अवगाहना में दो अथवा तीन ज्ञान हो सकते हैं, किन्तु अज्ञान दो ही होते हैं। क्योंकि कोई तीर्थंकर बनने वाला जीव अथवा वैमानिक देव अवधिज्ञान के साथ मनुष्य भव में उत्पन्न होता है तब उसमें जघन्य अवगाहना में 3 ज्ञान होते हैं। यदि कोई सम्यग्दृष्टिपने में बिना अवधिज्ञान के उत्पन्न होता है तो उसमें 2 ज्ञान तथा मिथ्यादृष्टिपने में मनुष्य में उत्पन्न होता है तो 2 अज्ञान जघन्य अवगाहना में होते हैं।

उत्कृष्ट मतिज्ञान व उत्कृष्ट श्रुतज्ञान संख्यात वर्ष की आयु वाले कर्मभूमिज मनुष्यों में पर्याप्त अवस्था में चारित्रवान को होता है। अन्य मनुष्यों में जघन्य व मध्यम रहता है। यही कारण है कि मनुष्यों में उत्कृष्ट मति व उत्कृष्ट श्रुतज्ञान स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित बतलाया है। युगलिक मनुष्यों में उत्कृष्ट मति व उत्कृष्ट श्रुतज्ञान नहीं होता है।

उत्कृष्ट मतिज्ञान व उत्कृष्ट श्रुतज्ञान चारित्रवान मनुष्यों को होने पर भी उनमें अवगाहना चतुस्थानपतित बतलायी है। इसका कारण यह है कि उत्कृष्ट मतिज्ञानी व उत्कृष्ट श्रुतज्ञानी जब मारणान्तिक समुद्घात करते हैं तो उनकी अवगाहना असंख्यात योजन तक की हो जाती है। अतः चारित्रवान साधु की पृथक्त्व हाथ अवगाहना से मारणान्तिक समुद्घात वाली असंख्यात योजन की अवगाहना की तुलना करने पर अवगाहना चतुस्थानपतित हो जाती है।

इससे यह फलित होता है कि चारित्रवान मनुष्यों में उत्कृष्ट मति-श्रुतज्ञान होने पर भी उनका उसी भव में मोक्ष प्राप्त करना अनिवार्य नहीं है। इसी कारण से उत्कृष्ट मतिज्ञान, श्रुतज्ञान वाले मनुष्यों में भी मारणान्तिक समुद्घात माना गया है। उत्कृष्ट अवधिज्ञान-परमावधि ज्ञान प्राप्त होने पर अन्तर्मुहूर्त में केवलज्ञान प्राप्त होने की नियमा है।

मनुष्य भव में जो अवधिज्ञान लेकर उत्पन्न होते हैं, वह अवधिज्ञान जघन्य न होकर मध्यम होता है। यही कारण है कि मध्यम अवधिज्ञान वाले मनुष्यों में तुलना करने पर अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित कहा गया है। जघन्य अवधिज्ञान मनुष्यों में पर्याप्त अवस्था में होता है तथा उत्कृष्ट अवधिज्ञान भाव से चारित्रवान मनुष्य को होता है, इसी कारण जघन्य व उत्कृष्ट अवधिज्ञान की अपेक्षा मनुष्य की अवगाहना त्रिस्थानपतित ही होती है।

युगलिक मनुष्यों में अवधिज्ञान नहीं हो पाता। संख्यात वर्ष की आयु वाले मनुष्यों में ही किसी-किसी को होता है। इस कारण से स्थिति की अपेक्षा उन्हें (मनुष्यों को) चतुःस्थानपतित न कहकर त्रिस्थानपतित कहा गया है। तिर्यंच युगलिकों के समान मनुष्य युगलिकों में भी उत्पत्ति के समय जघन्य अवगाहना नहीं होती। युगलिक मनुष्यों में मध्यम व उत्कृष्ट अवगाहना होती हैं। मनुष्यों में प्रायः स्थिति के अनुपात में अवगाहना बढ़ती है। अर्थात् जिन मनुष्यों की स्थिति एक क्रोड़ पूर्व वर्ष की होती है, उनकी उत्कृष्ट अवगाहना 500 धनुष की,

जिनकी स्थिति पल्योपम का आठवाँ भाग की होती है, उनकी 800 धनुष झाझेरी की, जिनकी स्थिति तीन पल्योपम की होती है, उनकी उत्कृष्ट अवगाहना तीन गाउ की होती है।

तिर्यंचों में स्थिति के अनुपात में अवगाहना होना अनिवार्य नहीं है। तिर्यंचों में तो एक क्रोड़ पूर्व वर्ष तक की आयु वालों की अवगाहना अंगुल के असंख्यातवें भाग से लेकर 1000 योजन तक की हो सकती हैं। युगलिक तिर्यंचों में 3 पल्योपम तक की स्थिति होने पर भी अवगाहना पृथक्त्व धनुष से लेकर 6 गाउ तक की हो सकती है।

मनःपर्यायज्ञान चारित्रवान (संयमी मनुष्य) को ही होता है। चारित्रवान मनुष्य संख्यात वर्ष की आयु वाले ही होते हैं। चारित्र लगभग 9 वर्ष की उम्र के बाद ही ग्रहण किया जा सकता हैं। चारित्र की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त तथा उत्कृष्ट देशोन क्रोड़ पूर्व की होती है। इस कारण से मनःपर्यायज्ञानी को स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित कहा गया है। मनःपर्याय ज्ञानी की अवगाहना त्रिस्थानपतित ही बतलाई है, इससे सिद्ध होता है कि वह मारणान्तिक समुद्घात नहीं करता। यदि मारणान्तिक समुद्घात करता तो उसकी अवगाहना चतुस्थानपतित हो जाती।

केवलज्ञानी मनुष्य केवलज्ञानी मनुष्य से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित है, बीस वर्णादि पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है, केवलज्ञान-केवलदर्शन की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है।

मतिज्ञान की तरह मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान कहना। अवधिज्ञान की तरह विभंगज्ञान कहना।

ज्ञातव्य- केवलज्ञानी मनुष्य की अवगाहना केवली समुद्घात की अपेक्षा से चतुःस्थानपतित कही गयी है। जब कोई केवली केवली समुद्घात करते हैं तब चौथे समय में उनके आत्मप्रदेश सम्पूर्ण लोक में फैल जाते हैं। इस प्रकार एक समय के लिए केवली की अवगाहना असंख्यात गुणी अधिक हो जाती है।

केवली पर्याय की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त तथा उत्कृष्ट देशोन क्रोड़ पूर्व की होती है। दोनों ही स्थिति संख्यात काल की होने से स्थिति की अपेक्षा केवली मनुष्य को त्रिस्थानपतित कहा गया है।

जघन्य चक्षुदर्शन वाला मनुष्य, जघन्य चक्षुदर्शन वाले मनुष्य से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, बीस वर्णादि की पर्यायों की अपेक्षा तथा पाँच उपयोग (दो ज्ञान, दो अज्ञान, अचक्षुदर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है। चक्षुदर्शन की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है। इसी तरह उत्कृष्ट चक्षुदर्शन वाला मनुष्य कह देना, अन्तर इतना है कि स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित कहना और 9 उपयोग (चार ज्ञान, तीन अज्ञान, दो दर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित कहना और चक्षुदर्शन की अपेक्षा तुल्य कहना। मध्यम चक्षुदर्शन वाला मनुष्य भी उत्कृष्ट चक्षुदर्शन वाले मनुष्य की तरह कहना, अन्तर इतना है कि स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थानपतित और दस उपयोग (चार ज्ञान, तीन अज्ञान, तीन दर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित कहना। चक्षुदर्शन की तरह ही अचक्षुदर्शन कहना।

जघन्य अवधिदर्शन वाला मनुष्य, जघन्य अवधिदर्शन वाले मनुष्य से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा त्रिस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित है, बीस वर्णादि की पर्यायों की अपेक्षा और 9 उपयोग (चार ज्ञान, तीन अज्ञान, दो दर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है तथा अवधिदर्शन की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है। इसी तरह उत्कृष्ट अवधिदर्शन वाला मनुष्य कहना। मध्यम अवधिदर्शन वाला मनुष्य भी इसी तरह कहना, अन्तर इतना है कि इसमें अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित कहना और दस उपयोग (चार ज्ञान, तीन अज्ञान, तीन दर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित कहना। केवलज्ञान की तरह केवलदर्शन कहना।

ज्ञातव्य - मतिज्ञान, श्रुतज्ञान तथा मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान के जघन्य उपयोग वाले मनुष्यों में अवधिज्ञान, विभंगज्ञान तथा अवधिदर्शन नहीं होते हैं।

इस थोकड़े में यद्यपि सभी दण्डकों में मिलने वाले जघन्य-मध्यम-उत्कृष्ट उपयोगों का कथन किया गया है। तथापि उत्कृष्ट उपयोग का यह कथन उस-उस दण्डक के जीवों की अपेक्षा से ही समझना चाहिए। अन्यथा तो सभी संसारी जीवों को मिलाकर कथन करें तो सभी उत्कृष्ट उपयोग संख्यात वर्ष की आयु वाले कर्मभूमिज सन्नी मनुष्य के पर्याप्तकों में ही मिलते हैं। उनमें भी पाँच ज्ञान व चार दर्शन ये नव उपयोग तो उत्कृष्ट रूप से चारित्रवान संयमी मनुष्य में ही मिलते हैं।

इस प्रकार मनुष्य के अवगाहना, स्थिति, बीस वर्णादि और दस उपयोग, इन 32 बोल के जघन्य, उत्कृष्ट और मध्यम के भेद से 32x3=96 तथा केवलज्ञान-केवलदर्शन के दो, इस प्रकार कुल 98 अलावा हुए।

व्यन्तर, ज्योतिषी व वैमानिक की अपेक्षा-

व्यंतर, असुरकुमार की तरह कहना चाहिए। ज्योतिषी भी असुरकुमार की तरह कहना चाहिए, अन्तर यह है कि इनमें स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित कहना चाहिए। वैमानिक, ज्योतिषी की तरह कहना चाहिए। लेकिन इनमें उत्कृष्ट स्थिति वाले वैमानिक देव, उत्कृष्ट स्थिति वाले वैमानिक देव से 6 उपयोग (तीन ज्ञान, तीन दर्शन) की अपेक्षा षट्स्थानपतित कहना चाहिए।

ज्ञातव्य-ज्योतिषी व वैमानिक देवों में जघन्य तथा उत्कृष्ट दोनों ही स्थिति असंख्यात काल की होती है। अतः उनमें आपस में तुलना करने पर स्थिति की अपेक्षा असंख्यात गुणी हानि-वृद्धि संभव नहीं हो पाती। यही कारण है कि इनमें स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित ही कहा गया है।

यद्यपि ज्योतिषी व वैमानिक देवों में आपस में तुलना करने पर स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित बनता है, किन्तु वैमानिक देवों में पाँचवें देवलोक व उससे ऊपर के देवों में आपस में तुलना करने पर स्थिति की अपेक्षा द्विस्थानपतित (संख्यात भाग हीनाधिक, असंख्यात भाग हीनाधिक) ही बनता है। उत्कृष्ट स्थिति पाँच अनुत्तर विमान के देवों की होती है। ये एकान्त सम्यग्दृष्टि होते हैं, अतः 3 ज्ञान, 3 दर्शन इन 6 उपयोगों की अपेक्षा षट्स्थानपतित कहा गया है।

नैरयिक की तरह व्यंतर के 93, ज्योतिषी के 93 और वैमानिक के 93 अलावा होते हैं।

समुच्चय के 24, नरक के 93, देवता के तेरह दण्डक के 93x13=1209, तिर्यंच पंचेन्द्रिय के 93, पाँच स्थावर के 375, विकलेन्द्रिय के 246 और मनुष्य के 98, इस प्रकार कुल 24+93+1209+93+375+ 246+98=2138 अलावा हुए।

।।जीव पज्जवा का थोकड़ा समाप्त।।

अजीव पज्जवा

प्रज्ञापना सूत्र के पाँचवें पद में अजीव पर्याय (पज्जवा) का थोकड़ा इस प्रकार चलता है-

ग्यारह द्वार-

1. द्रव्य, 2. क्षेत्र, 3. काल, 4. भाव, 5. अवगाहना, 6. स्थिति, 7. भाव (वर्णादि), 8. समुच्चय द्रव्य, 9. समुच्चय क्षेत्र, 10. समुच्चय काल एवं 11. समुच्चय भाव।

इस थोकड़े में द्विस्थान पतित, चतु:स्थान पतित एवं षट्स्थान पतित शब्दों का प्रयोग हुआ हैं।

द्विस्थान पतित से आशय - 1. संख्यात भाग हीन, संख्यात भाग अधिक, 2. संख्यात गुण हीन, संख्यात गुण अधिक से है।

चतु:स्थान पतित से आशय - उपर्युक्त दो के साथ 3. असंख्यात भाग हीन, असंख्यात भाग अधिक तथा 4. असंख्यात गुण हीन, असंख्यात गुण अधिक से है।

षट्स्थान पतित से आशय - उपर्युक्त चारों के साथ 5. अनन्त भाग हीन, अनन्त भाग अधिक तथा 6. अनन्त गुण हीन, अनन्त गुण अधिक से है।

द्विस्थान पतित में संख्यात गुणी तक हानि वृद्धि होती है। चतु:स्थान पतित में असंख्यात गुणी तक हानि वृद्धि तथा षट्स्थान पतित में संख्यात-असंख्यात व अनन्त गुणी तक हानि वृद्धि होती है। इसे इस प्रकार समझा जा सकता है- माना कि 10 संख्यात है, 100 असंख्यात है तथा 1000 अनन्त है।

1. एक पुद्गल 10,000 गुण (अंश) काला है, दूसरा पुद्गल 9990 गुण काला है। दोनों में 10 का अन्तर है। 10, दस हजार का हजारवाँ भाग है। हजार को ऊपर अनन्त माना है अत: दोनों पुद्गलों में तुलना करने पर अनन्त भाग हीन-अनन्त भाग अधिक का स्थान बनेगा।

2. एक पुद्गल 10,000 गुण काला है, दूसरा 9900 गुण काला है। दोनों में 100 का अन्तर है। 100, दस हजार का सौवाँ भाग है। सौ की संख्या को ऊपर असंख्यात माना है, अत: दोनों पुद्गलों में तुलना करने पर असंख्यात भाग हीन-असंख्यात भाग अधिक का स्थान बनेगा।

3. एक पुद्गल 10,000 गुण काला है, दूसरा 9,000 गुण काला है। दोनों में 1,000 का अन्तर है। 1,000 दस हजार का दसवाँ भाग है। 10 की संख्या को ऊपर संख्यात माना है अत: दोनों पुद्गलों में तुलना करने पर संख्यात भाग हीन-संख्यात भाग अधिक का स्थान बनेगा।

4. एक पुद्गल 10,000 गुण काला है, दूसरा पुद्गल 1,000 गुण काला है। 1,000 से 10,000 दस गुणा है, दस को संख्यात माना है। अत: दोनों पुद्गलों में तुलना करने पर संख्यात गुण हीन-संख्यात गुण अधिक का स्थान होगा।

5. एक पुद्गल 10,000 गुण काला है, दूसरा पुद्गल 100 गुण काला है। 100 से 10,000 सौ गुणा अधिक है। सौ को असंख्यात माना है अत: दोनों पुद्गलों में तुलना करने पर असंख्यात गुण हीन-असंख्यात गुण अधिक का स्थान होगा।

6. एक पुद्गल 10,000 गुण काला है, दूसरा पुद्गल 10 गुण काला है। 10 से 10,000 हजार गुणा अधिक है। हजार को अनन्त माना है, अत: दोनों पुद्गलों में तुलना करने पर अनन्त गुण हीन-अनन्त गुण अधिक का स्थान होगा।

अजीव की पर्याय दो प्रकार की है- रूपी अजीव की पर्याय और अरूपी अजीव की पर्याय। अरूपी अजीव की पर्याय के दस भेद हैं- 1. धर्मास्तिकाय, 2. धर्मास्तिकाय का देश, 3. धर्मास्तिकाय का प्रदेश, 4. अधर्मास्तिकाय, 5. अधर्मास्तिकाय का देश, 6. अधर्मास्तिकाय का प्रदेश, 7. आकाशास्तिकाय, 8. आकाशास्तिकाय का देश, 9.

आकाशास्तिकाय का प्रदेश, 10. अद्धासमय यानी काल।

रूपी अजीव की पर्याय के चार भेद- 1. स्कन्ध, 2. स्कन्ध का देश, 3. स्कन्ध का प्रदेश और 4. परमाणु पुद्‌गल। यहाँ पर्याय और पर्यायी के अभेद की विवक्षा की गई है।

ज्ञातव्य- जिसमें वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्शादि हों, उन पदार्थों को रूपी कहते हैं। छह द्रव्यों में से मात्र पुद्‌गलास्तिकाय ही रूपी होता है।

जिनमें वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्शादि न हों, उन्हें अरूपी कहते हैं। पुद्‌गलास्तिकाय को छोड़कर शेष पाँच द्रव्य अरूपी होते हैं। इस थोकड़े में अजीव पर्याय का विवेचन होने से अजीव द्रव्यों का ही विवेचन किया गया है।

स्कन्ध से तात्पर्य सम्पूर्ण वस्तु से है। धर्मास्तिकाय अर्थात् सम्पूर्ण लोक में व्याप्त धर्मास्तिकाय का स्कन्ध है। देश का तात्पर्य स्कन्ध का कुछ हिस्सा या भाग है। प्रदेश सबसे छोटा एवं अविभाज्य अंश है। अरूपी अजीव में देश का तात्पर्य कल्पित विभाग तथा रूपी अजीव में बड़े स्कन्धों के छोटे-छोटे टुकड़ों से है। क्योंकि धर्मास्तिकाय आदि अरूपी द्रव्यों में मिलने-बिखरने का गुण नहीं होता, उनके अलग से टुकड़े नहीं हो पाते, अतः कल्पना से ही विभाग करना जैसे- भरतक्षेत्र की धर्मास्तिकाय, जम्बूद्वीप की धर्मास्तिकाय आदि, ये धर्मास्तिकाय का देश कहलाता है। इसी प्रकार अधर्मास्तिकाय तथा आकाशास्तिकाय में भी समझा जा सकता है।

पुद्‌गल में मिलने व बिखरने का गुण होता है, अतः बड़े स्कन्ध से छोटा स्कन्ध तथा छोटे स्कन्ध से परमाणु बन जाते हैं। प्रदेश व परमाणु दोनों ही सूक्ष्म एवं अविभाज्य है, परमाणु सदा अकेला ही रहता है। दूसरे एक, दो यावत संख्यात, असंख्यात, अनन्त के साथ मिला होने पर उसे प्रदेश कहते हैं, परमाणु नहीं। यही प्रदेश व परमाणु में अन्तर है। धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय व जीवास्तिकाय में प्रदेश स्कन्ध से अलग नहीं होते, जबकि पुद्‌गलास्तिकाय में प्रदेश अलग भी हो जाते हैं, इसी कारण से अन्य द्रव्यों में परमाणु का भेद अलग से न करके मात्र पुद्‌गलास्तिकाय में ही किया गया है।

1. द्रव्य

परमाणु पुद्‌गल की पर्याय-

रूपी अजीव की पर्याय संख्यात, असंख्यात न होकर अनन्त होती हैं। क्योंकि अनन्त परमाणु पुद्‌गल हैं, अनन्त द्विप्रदेशी यावत् दस प्रदेशी स्कन्ध हैं, अनन्त संख्यात प्रदेशी स्कन्ध हैं, अनन्त असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध हैं और अनन्त ही अनन्त-प्रदेशी स्कन्ध हैं।

परमाणु पुद्‌गल की अनन्त पर्याय हैं। एक परमाणु पुद्‌गल, दूसरे परमाणु पुद्‌गल से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा तुल्य है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है। पाँच वर्ण, दो गन्ध, पाँच रस, चार स्पर्श (शीत, उष्ण, स्निग्ध और रूक्ष) इन 16 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है।

ज्ञातव्य- एक परमाणु की दूसरे परमाणु से तुलना की जा रही है। दोनों की संख्या एक-एक ही है, अतः द्रव्य की अपेक्षा तुल्य कहा गया है। यहाँ द्रव्य से तात्पर्य संख्या से है। प्रदेश की अपेक्षा तुल्य बतलाने का कारण यह है कि सभी परमाणु अप्रदेशी होते हैं।

अवगाहना की अपेक्षा भी तुल्य इसलिए बतलाया गया है कि परमाणु एक आकाश प्रदेश पर ही ठहरता है। अनन्त परमाणु भी एक आकाश प्रदेश पर ठहर सकते हैं। किसी भी परमाणु में एक से अधिक आकाश प्रदेश पर ठहरने की ताकत नहीं होती है, अतः एक परमाणु दूसरे परमाणु से अवगाहना की अपेक्षा तुल्य है।

परमाणु, द्विप्रदेशी यावत् संख्यात, असंख्यात और अनन्त प्रदेशी जो भी पुद्‌गल स्कन्ध हैं, उन सब की स्थिति जघन्य एक समय से लेकर उत्कृष्ट असंख्यात काल तक की होती है। जघन्य व उत्कृष्ट स्थिति में असंख्यात गुणा अन्तर होने से स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित कहा गया है।

वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श की पर्यायों में संख्यात, असंख्यात एवं अनन्त गुणी तक हानि-वृद्धि संभव होने के कारण 16 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित कहा गया है।

आठ स्पर्शों में से परमाणु में चार स्पर्श ही होते हैं। परमाणु, संख्यात प्रदेशी स्कन्ध, असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध ये सभी चार स्पर्श वाले (शीत, उष्ण, स्निग्ध और रूक्ष) ही होते हैं, इस कारण इन्हें चौफरसी भी कहते हैं। अनन्त प्रदेशी स्कन्ध दोनों प्रकार के होते हैं। चौफरसी भी होते हैं तथा अठफरसी भी होते हैं।

जो चौफरसी होते हैं, उनमें वर्णादि 16 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा तथा जो अठफरसी होते हैं, उनमें वर्णादि 20 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा कथन किया गया है।

द्विप्रदेशी स्कन्ध की पर्याय-

एक द्विप्रदेशी स्कन्ध दूसरे द्विप्रदेशी स्कन्ध से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा कथंचित् हीन, कथंचित् तुल्य और कथंचित् अधिक होता है। द्विप्रदेशी स्कन्ध एक प्रदेशावगाढ़ और द्विप्रदेशावगाढ़ होते हैं। जब दोनों द्विप्रदेशी स्कन्ध दो प्रदेशों पर अथवा एक प्रदेश पर अवगाहित होकर रहते हैं तब वे अवगाहना में तुल्य होते हैं। किन्तु जब एक द्विप्रदेशी स्कन्ध एक आकाश प्रदेश पर तथा दूसरा द्विप्रदेशी स्कन्ध दो आकाश प्रदेशों पर रहता है तब पहला स्कन्ध अवगाहना में एक प्रदेश हीन होता है और दूसरा स्कन्ध एक प्रदेश अधिक होता है। स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है और वर्णादि 16 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट् स्थानपतित है।

ज्ञातव्य- यह नियम है कि जितने परमाणुओं से मिलकर स्कन्ध बना है, वह उतना ही प्रदेशी स्कन्ध कहलाता है तथा वह अधिकतम उतने ही आकाश-प्रदेशों को अवगाहित कर सकता है। अवगाहना का यह नियम असंख्यात प्रदेशी स्कन्धों तक लागू होता है। अनन्त प्रदेशी स्कन्धों पर लागू नहीं होता।

जैसे 100 प्रदेशी स्कन्ध है, वह 100 परमाणुओं से मिलकर बना है। यह स्कन्ध अधिक से अधिक 100 आकाश प्रदेशों पर ठहर सकता है। कम से कम तो एक आकाश प्रदेश पर भी ठहर सकता है, किन्तु 100 से अधिक आकाश प्रदेशों पर नहीं ठहर सकता। इसी तरह संख्यात लोकाकाश की अवगाहना के बराबर प्रदेशों वाले तक असंख्यात प्रदेशी स्कन्धों के बारे में समझ लेना चाहिए। उससे अधिक प्रदेश वाले अपने प्रदेशों की संख्या कम अवगाहना वाले लोकाकाश के असंख्यात भाग के प्रदेशों तक ही ठहर सकते हैं।

अनन्त प्रदेशी स्कन्ध अनन्त परमाणुओं के मिलने से बनते हैं। अनन्त प्रदेशी स्कन्ध भी दो प्रकार के हैं- 1. चौफरसी, 2. अठफरसी। चौफरसी अनन्त प्रदेशी स्कन्धों की यह विशेषता है कि वे सूक्ष्म भाव में परिणत होने के कारण कम से कम एक-एक आकाश प्रदेश पर भी ठहर सकते हैं, किन्तु अधिक से अधिक असंख्यात आकाश प्रदेशों पर भी ठहर सकते हैं। अनन्त आकाश प्रदेशों पर नहीं ठहर सकते। क्योंकि पुद्गल-स्कन्ध लोक में ही होते हैं, अलोक में नहीं होते। लोक में आकाश प्रदेश असंख्यात ही होते हैं, अनन्त नहीं होते।

जो अठफरसी पुद्गल स्कन्ध हैं वे स्थूल भाव में परिणत होने के कारण एक आकाश प्रदेश पर नहीं ठहर सकते। ऐसे स्कन्ध कम से कम अंगुल के असंख्यातवें भाग में तथा अधिक से अधिक लोक के असंख्यातवें भाग में स्थित आकाश प्रदेशों पर ही ठहरते हैं।

अंगुल के असंख्यातवें भाग में भी असंख्यात आकाश प्रदेश होते हैं, लोक के असंख्यातवें भाग में भी असंख्यात आकाश प्रदेश तथा सम्पूर्ण लोक में भी असखंयात ही आकाश प्रदेश होते हैं। यद्यपि अंगुल के असंख्यातवें भाग क्षेत्र का असंख्यात छोटा होगा तथा सम्पूर्ण लोक का असंख्यात उससे असंख्यात गुणा बड़ा होगा। क्योंकि असंख्यात के भी असंख्यात भेद होते हैं।

त्रिप्रदेशी से संख्यात प्रदेशी स्कन्धों की पर्याय-

इसी प्रकार तीन प्रदेशी स्कन्ध से लेकर दस प्रदेशी स्कन्ध तक कहना चाहिए। केवल अवगाहना में अन्तर है। त्रिप्रदेशी स्कन्ध, तीन आकाश प्रदेश में, दो आकाश प्रदेश में और एक आकाश प्रदेश में रह सकता है तथा वह क्रमशः त्रिप्रदेशावगाढ़, द्विप्रदेशावगाढ़ और एक प्रदेशावगाढ़ कहलाता है। जब दोनों त्रिप्रदेशी स्कन्ध त्रिप्रदेशावगाढ़, द्विप्रदेशावगाढ़ अथवा एक प्रदेशावगाढ़ होते हैं तब अवगाहना में तुल्य होते हैं। जब एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध त्रिप्रदेशावगाढ़ और दूसरा द्विप्रदेशावगाढ़ होता है अथवा एक प्रदेशावगाढ़ होता है और दूसरा एक प्रदेशावगाढ़ होता है तो पहला दूसरे की अपेक्षा एक प्रदेश अधिक होता है और दूसरा पहले की अपेक्षा एक प्रदेश हीन होता है। जब एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध त्रिप्रदेशावगाढ़ होता है और दूसरा एक प्रदेशावगाढ़ होता है तब पहला दूसरे की अपेक्षा दो प्रदेश अधिक और दूसरा पहले की अपेक्षा दो प्रदेश हीन होता है।

इसी तरह चतुःप्रदेशी स्कन्ध से लेकर दस प्रदेशी स्कन्ध तक तुल्य, हीन और अधिक कहने चाहिए। दस प्रदेशी स्कन्ध यदि हीन होता है तो एक प्रदेश हीन, दो प्रदेश हीन यावत् नौ प्रदेश हीन होता है। यदि अधिक होता है तो एक प्रदेश अधिक, दो प्रदेश अधिक यावत् नौ प्रदेश अधिक होता है।

संख्यात प्रदेशी स्कन्ध, संख्यात प्रदेशी स्कन्ध से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य, प्रदेश की अपेक्षा द्विस्थान पतित, अवगाहना की अपेक्षा द्विस्थान पतित, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित और वर्णादि 16 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित होता है।

ज्ञातव्य- संख्यात परमाणुओं से मिलकर संख्यात प्रदेशी स्कन्ध बनता है। यह स्कन्ध प्रदेश की अपेक्षा तथा अवगाहना की अपेक्षा द्विस्थान पतित कहा है। यह नियम है कि संख्यात के संख्यात भाग, असंख्यात के असंख्यात भाग तथा अनन्त के अनन्त भाग होते हैं। संख्यात प्रदेशी स्कन्ध अधिक से अधिक संख्यात आकाश प्रदेशों पर तथा कम से कम एक आकाश प्रदेश पर ठहरता है। संख्यात प्रदेशी स्कन्ध होने से प्रदेश की अपेक्षा संख्यात भाग हीन-अधिक तथा संख्यात गुण हीन-अधिक, ये दो स्थान बनते हैं तथा अवगाहना की अपेक्षा भी ये दो ही स्थान बन सकते हैं, कम-अधिक नहीं। स्थिति और वर्णादि बोलों की पर्यायों को पूर्ववत् समझना चाहिए।

असंख्यात प्रदेशी स्कन्धों की पर्याय-

असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध, असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य, प्रदेश की अपेक्षा चतु:स्थान पतित, अवगाहना की अपेक्षा चतु:स्थान पतित, स्थिति की अपेक्षा चतु:स्थान पतित और वर्णादि 16 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है।

ज्ञातव्य- एक असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध की दूसरे असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध से प्रदेश की अपेक्षा तुलना करने पर वह चतु:स्थान पतित होता है, क्योंकि असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध में असंख्यात परमाणु मिले होते हैं। उनमें असंख्यात गुणी तक हानि-वृद्धि हो सकती है। अवगाहना की अपेक्षा भी चतु:स्थानपतित बतलाने का कारण यह है कि असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध एक आकाश प्रदेश पर भी ठहर सकता है तथा असंख्यात आकाश प्रदेशों पर भी ठहर सकता है, अत: दोनों में अवगाहना की अपेक्षा असंख्यात गुणी तक हानि-वृद्धि हो सकती है। स्थिति और वर्णादि बोलों की पर्यायों को पूर्ववत् समझना चाहिए।

अनन्त प्रदेशी स्कन्धों की पर्याय-

अनन्त प्रदेशी स्कन्ध, अनन्त प्रदेशी स्कन्ध से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य, प्रदेश की अपेक्षा षट् स्थान पतित, अवगाहना की अपेक्षा चतु:स्थान पतित, स्थिति की अपेक्षा चतु:स्थान पतित और वर्णादि 20 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित होता है।

ज्ञातव्य- अनन्त प्रदेशी स्कन्ध अनन्त परमाणुओं से मिलकर बनता है। अत: उसमें अनन्त-गुणी तक हानि-वृद्धि हो सकती है, इसलिए प्रदेश की अपेक्षा षट् स्थानपतित कहा गया है। अवगाहना चतु:स्थान पतित होने का कारण यह है कि यह स्कन्ध लोक में ही होता है। लोक में प्रदेश असंख्यात ही हैं। असंख्यात में असंख्यात गुणी तक हानि-वृद्धि हो सकती है।

यहाँ चौफरसी व अठफरसी दोनों की प्रकार के अनन्त प्रदेशी स्कन्धों का समावेश समझना चाहिए। दोनों में अवगाहना की अपेक्षा चतु:स्थान पतित ही होता है, जिसका कारण पूर्व में स्पष्ट किया जा चुका है।

2. क्षेत्र

एक से दस प्रदेशावगाढ़ पुद्गलों की पर्याय-

एक प्रदेशावगाढ़ पुद्गल, एक प्रदेशावगाढ़ पुद्गल से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य हैं, प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थान पतित हैं, अवगाहना की अपेक्षा तुल्य हैं, स्थिति की अपेक्षा चतु:स्थान पतित हैं और वर्णादि 16 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित हैं। इसी प्रकार दो आकाश प्रदेशावगाढ़ यावत् दस आकाश प्रदेशावगाढ़ पुद्गल भी कहने चाहिए।

ज्ञातव्य- जो-जो पुद्गल एक आकाश प्रदेश पर स्थित रह जाते हैं, उन्हें एक प्रदेशावगाढ़ कहते हैं। एक आकाश प्रदेश पर अनन्त परमाणु, अनन्त द्विप्रदेशी स्कन्ध यावत् अनन्त दस प्रदेशी स्कन्ध, अनन्त संख्यात प्रदेशी स्कन्ध, अनन्त असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध तथा अनन्त ही चौफरसी अनन्त प्रदेशी स्कन्ध स्थित रह जाते हैं। परमाणु एक आकाशप्रदेश पर रहता है तथा अनन्त प्रदेशी चौफरसी स्कन्ध भी एक आकाश प्रदेश पर रह जाता है, अत: एक प्रदेशावगाढ़ पुद्गल के प्रदेशों में अनन्त गुणी तक हानि-वृद्धि हो जाती है, इसी कारण से प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थान पतित होते हैं।

जिस पुद्गल की तुलना की जा रही है वह भी एक प्रदेशावगाढ़ है तथा जिससे तुलना की जा रही है वह भी एक प्रदेशावगाढ़ है। अर्थात् दोनों की अवगाहना एक समान होने से तुल्य कहा गया है। स्थिति और वर्णादि के बोल पूर्ववत हैं।

संख्यात प्रदेशावगाढ़ पुद्गलों की पर्याय-

संख्यात आकाश प्रदेशावगाढ़ पुद्गल, संख्यात आकाश प्रदेशावगाढ़ पुद्गल से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य हैं, प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थान पतित हैं, अवगाहना की अपेक्षा द्विस्थान पतित हैं, स्थिति की अपेक्षा चतु:स्थान पतित हैं और वर्णादि 16 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित हैं।

ज्ञातव्य- संख्यात आकाश प्रदेशों पर स्थित रहने वाले पुद्गलों को संख्यात प्रदेशावगाढ़ पुद्गल कहते हैं। संख्यात आकाश प्रदेशों पर संख्यात प्रदेशी स्कन्ध, असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध तथा अनन्त प्रदेशी चौफरसी स्कन्ध स्थित रह सकते हैं। परमाणु तथा अनन्त प्रदेशी अठफरसी स्कन्ध संख्यात आकाश प्रदेशों पर स्थित नहीं रह सकते हैं। संख्यात आकाश प्रदेशों पर संख्यात प्रदेशी स्कन्ध तथा अनन्त प्रदेशी चौफरसी स्कन्ध दोनों ठहर सकते हैं। दोनों के प्रदेशों में अनन्त गुणी तक हानि-वृद्धि होने से प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थान पतित होते हैं।

संख्यात प्रदेशावगाढ़ पुद्गलों में अवगाहना की अपेक्षा संख्यात गुणी तक हानि-वृद्धि हो सकती है अत: अवगाहना की अपेक्षा संख्यात भाग हीन-अधिक तथा संख्यात गुण हीन-अधिक, ये द्विस्थान पतित वाले होते हैं। स्थिति व वर्णादि के बोल पूर्ववत हैं।

असंख्यात प्रदेशावगाढ़ पुद्गलों की पर्याय-

असंख्यात आकाश प्रदेशावगाढ़ पुद्गल, असंख्यात आकाश प्रदेशावगाढ़ पुद्गल से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य हैं, प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थान पतित हैं, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित हैं, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित हैं तथा वर्णादि 20 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित हैं।

ज्ञातव्य- असंख्यात आकाश प्रदेशों पर स्थित रहने वाले पुद्गलों को असंख्यात आकाश प्रदेशावगाढ़ पुद्गल कहते हैं। असंख्यात आकाश प्रदेशों पर असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध, अनन्त प्रदेशी चौफरसी स्कन्ध तथा अनन्त प्रदेशी अठफरसी स्कन्ध ठहर सकते हैं। उनके प्रदेशों में अनन्त गुणी तक हानि-वृद्धि संभव होने के कारण ये प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थान पतित होते हैं।

अनन्त प्रदेशी स्कन्ध भी लोक में ही होते हैं। लोक असंख्यात प्रदेशी ही होता है, अनन्त प्रदेशी नहीं। असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध व अनन्त प्रदेशी चौफरसी स्कन्ध एक आकाश प्रदेश पर भी स्थित रह सकते हैं तथा असंख्यात आकाश प्रदेशों पर भी स्थित रह सकते हैं, अतः अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित होते हैं। अठफरसी स्कन्ध यद्यपि कम से कम असंख्यात आकाश प्रदेशों पर स्थित रहता है तथा अधिक से अधिक भी असंख्यात आकाश प्रदेशों पर स्थित रहता है तथापि असंख्यात के असंख्यात भेद होने के कारण इनमें असंख्यात गुणी तक हानि-वृद्धि हो सकती है अतः अठफरसी स्कन्ध भी अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित होते हैं। स्थिति व वर्णादि के बोल पूर्ववत् हैं।

कोई भी पुद्गल स्कन्ध अनन्त प्रदेशों पर अवगाहित नहीं होने के कारण अनन्त प्रदेशावगाढ़ का कथन नहीं किया है।

3. काल

एक समय से लेकर दस समय की स्थिति वाले पुद्गलों की पर्याय-

एक समय की स्थिति वाला पुद्गल, एक समय की स्थिति वाले पुद्गल से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थान पतित है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य है, वर्णादि 20 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है।

एक समय की स्थिति वाले पुद्गल की तरह दो समय की स्थिति यावत् दस समय की स्थिति वाले पुद्गल भी कह देने चाहिए।

ज्ञातव्य- एक समय की जघन्य स्थिति जिन-जिन पुद्गलों की होती है, उनकी पर्यायों का कथन किया गया है। सभी प्रकार के पुद्गल चाहे वे परमाणु हों, द्विप्रदेशी स्कन्ध यावत् दस प्रदेशी स्कन्ध हों, संख्यात प्रदेशी, असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध हों, अनन्त प्रदेशी चौफरसी अथवा अनन्त प्रदेशी अठफरसी हो, सभी की स्थिति जघन्य एक समय से लेकर उत्कृष्ट असंख्यात काल की होती है। इससे यह स्पष्ट है कि कोई परमाणु एक समय में स्कन्ध बन सकता है, कोई स्कन्ध एक समय में अपने से छोटा अथवा बड़ा स्कन्ध बन सकता है अथवा परमाणु बन सकता है। असंख्यात काल की उत्कृष्ट स्थिति पूर्ण होने पर तो सभी पुद्गल अपनी वर्तमान पर्याय को छोड़ ही देते हैं तथा दूसरी पर्याय को धारण कर लेते हैं।

एक समय की स्थिति वाले पुद्गल परमाणु भी हो सकते हैं तथा संख्यात-असंख्यात-अनन्त प्रदेशी स्कन्ध भी हो सकते हैं, उनके प्रदेशों में अनन्त गुणी तक हानि-वृद्धि संभव होने के कारण वे प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थान पतित होते हैं। एक समय की स्थिति वाले पुद्गलों की अवगाहना एक प्रदेशावगाढ़ भी हो सकती है तथा असंख्यात प्रदेशावगाढ़ भी हो सकती है। असंख्यात गुणी तक हानि-वृद्धि संभव होने के कारण अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित होते हैं।

एक समय की स्थिति वाले पुद्गलों की ही आपस में तुलना की जा रही है अतः स्थिति की अपेक्षा तुल्य होते हैं। वर्णादि 20 बोलों में अनन्त गुणी तक हानि-वृद्धि हो सकने के कारण वर्णादि की अपेक्षा षट्स्थान पतित होते हैं।

संख्यात समय की स्थिति वाले पुद्गलों की पर्याय-

संख्यात समय की स्थिति वाला पुद्गल, संख्यात समय की स्थिति वाले पुद्गल से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थान पतित है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा द्विस्थान पतित है, वर्णादि 20 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है।

ज्ञातव्य- संख्यात समय की स्थिति सभी प्रकार के पुद्गलों की हो सकती है। क्योंकि सभी पुद्गलों की जघन्य स्थिति एक समय, उत्कृष्ट स्थिति असंख्यात काल तथा मध्यम स्थिति जघन्य व उत्कृष्ट के बीच की हो सकती है। अतः द्रव्य, प्रदेश, अवगाहना तथा वर्णादि बोलों की पर्यायों को एक समय की स्थिति वाले पुद्गलों के समान समझ लेना चाहिए। स्थिति की अपेक्षा द्विस्थान पतित बतलाया है। कारण कि संख्यात काल की स्थिति वाले पुद्गलों में स्थिति के आधार पर संख्यात गुणी तक ही हानि-वृद्धि हो पाती है, इससे अधिक नहीं।

असंख्यात समय की स्थिति वाले पुद्गलों की पर्याय-

असंख्यात समय की स्थिति वाला पुद्गल, असंख्यात समय की स्थिति वाले पुद्गल से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थान पतित है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, वर्णादि 20 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है।

ज्ञातव्य- असंख्यात समय की स्थिति भी सभी प्रकार के पुद्गलों की हो सकती है। अतः एक समय की स्थिति वाले पुद्गलों के समान इनमें भी द्रव्य, प्रदेश, अवगाहना तथा वर्णादि की पर्यायों को समझ लेना चाहिए। स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित बतलाया है। कारण कि असंख्यात काल की स्थिति वाले पुद्गलों में स्थिति की अपेक्षा से असंख्यात गुणी तक ही हानि-वृद्धि हो पाती है, अनन्त गुणी नहीं। किसी भी पुद्गल की किसी एक पर्याय की स्थिति अनन्त काल होती ही नहीं है, इसलिए अनन्त समय वाले पुद्गलों का कथन नहीं किया गया है।

4. भाव

वर्णादि के आधार पर पुद्गलों की पर्याय-

एक गुण काले वर्ण वाला पुद्गल, एक गुण काले वर्ण वाले पुद्गल से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थान पतित है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, काले वर्ण की पर्याय की अपेक्षा तुल्य है, शेष 19 वर्णादि के बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। एक गुण काले वर्ण वाले पुद्गल की तरह दो गुण काले वर्ण वाला पुद्गल यावत् दस गुण काले वर्ण वाला पुद्गल कह देना चाहिए।

ज्ञातव्य- सभी प्रकार के पुद्गल सभी वर्णादि के स्थान वाले हो सकते हैं। अर्थात् सभी पुद्गल चाहे वे परमाणु हों अथवा स्कन्ध हों, एक गुण काले से लेकर संख्यात-असंख्यात और अनन्त गुण काले तक हो सकते हैं। एक गुण काले से तात्पर्य काले वर्ण की सबसे कम मात्रा से है। जिन पुद्गलों में केवल एक डिग्री का कालापन हो, जिससे कम कालापन संभव ही न हो, उसे एक गुण कालापन समझना चाहिए।

एक गुण काले वर्ण वाला पुद्गल परमाणु भी हो सकता है, अनन्त प्रदेशी स्कन्ध भी हो सकता है। इनके प्रदेशों में अनन्त-गुणी तक हानि-वृद्धि हो सकती है, अतः प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थान पतित होते हैं।

एक गुण काले वर्ण वाले पुद्गल की ही पृच्छा होने से काले वर्ण की अपेक्षा तो तुल्य है, किन्तु शेष 19 वर्णादि बोलों की पर्यायों में अनन्त गुणी तक हानि-वृद्धि संभव होने से वे पुद्गल षट्स्थान पतित होते हैं। एक गुण काले वर्ण वाले पुद्गल के समान दस गुण काले वर्ण वाले पुद्गल भी समझ लेने चाहिए।

संख्यात गुण काले वर्ण वाले पुद्गलों की पर्याय-

संख्यात गुण काले वर्ण वाला पुद्गल, संख्यात गुण काले वर्ण वाले पुद्गल से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थान पतित है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, काले वर्ण की पर्यायों की अपेक्षा द्विस्थान पतित है, शेष 19 वर्णादि के बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है।

ज्ञातव्य- संख्यात गुण काले भी सभी प्रकार के पुद्गल हो सकते हैं। अतः इनमें भी द्रव्य, प्रदेश, अवगाहना व स्थिति के बोल एक गुण काले वर्ण वाली पर्यायों के समान समझ लेना चाहिए।

काले गुण की अपेक्षा द्विस्थान पतित है, क्योंकि संख्यात गुण काले वर्ण की पर्यायों में संख्यात गुणी तक ही हानि-वृद्धि हो पाती है। शेष 19 वर्णादि की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित पूर्ववत् है।

असंख्यात व अनन्त गुण वाले काले वर्ण की पर्याय-

असंख्यात गुण काले वर्ण वाले पुद्गल भी संख्यात गुण काले वर्ण वाले पुद्गलों की पर्यायों के समान ही कहना चाहिए। अन्तर इतना है कि काले वर्ण की पर्यायों की अपेक्षा चतुःस्थान पतित कहना। इसी तरह अनन्त गुण काले वर्ण वाले पुद्गल की पर्याय भी कह देना। अन्तर इतना है कि इनमें वर्णादि 20 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित कहना। काले वर्ण की तरह ही शेष 19 वर्णादि के बोल भी कहना चाहिए।

ज्ञातव्य- असंख्यात गुण काले वर्ण वाले पुद्गल काले वर्ण की पर्यायों की अपेक्षा चतुःस्थान पतित होते हैं, क्योंकि इनमें काले वर्ण की अपेक्षा असंख्यात गुणी तक हानि-वृद्धि हो सकती है। अनन्त गुण काले वर्ण वाले पुद्गलों में काले वर्ण की पर्यायों की अपेक्षा संख्यात-असंख्यात व अनन्तगुणी तक की हानि-वृद्धि हो सकने के कारण वे षट्स्थान पतित होते हैं।

5. अवगाहना

अवगाहना के आधार पर पुद्गल स्कन्धों की पर्याय-

जघन्य अवगाहना वाला द्विप्रदेशी स्कन्ध, जघन्य अवगाहना वाले द्विप्रदेशी स्कन्ध से द्रव्य से अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा तुल्य है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, वर्णादि 16 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। उत्कृष्ट अवगाहना वाला द्विप्रदेशी स्कन्ध भी इसी तरह कह देना चाहिए। द्विप्रदेशी स्कन्ध की मध्यम अवगाहना नहीं होती, क्योंकि द्विप्रदेशी स्कन्ध की जघन्य अवगाहना एक आकाश प्रदेश की और उत्कृष्ट अवगाहना दो आकाश प्रदेश की होती है। जघन्य और उत्कृष्ट के बीच की कोई अवगाहना नहीं होती।

ज्ञातव्य- जघन्य अवगाहना वाला द्विप्रदेशी स्कन्ध है। द्विप्रदेशी स्कन्ध दो परमाणुओं से मिलकर बना है। यह कम से कम एक आकाश प्रदेश पर तथा अधिक से अधिक दो आकाश प्रदेश पर स्थित रहता है। अतः जघन्य अवगाहना एक आकाशप्रदेश की होगी। अवगाहना जघन्य होने से तुल्य है। उत्कृष्ट अवगाहना 2 आकाश प्रदेश की ही होगी अतः उस अपेक्षा से भी अवगाहना तुल्य ही होगी। प्रदेश, स्थिति व वर्णादि 16 बोलों की पर्याय पूर्ववत समझ लेनी चाहिए।

इसी तरह जघन्य अवगाहना वाला त्रिप्रदेशी स्कन्ध, उत्कृष्ट अवगाहना वाला त्रिप्रदेशी स्कन्ध तथा मध्यम अवगाहना वाला त्रिप्रदेशी स्कन्ध कह देना चाहिए। जघन्य अवगाहना वाला चतुःप्रदेशी स्कन्ध, जघन्य अवगाहना वाले द्विप्रदेशी स्कन्ध की तरह कहना। उत्कृष्ट अवगाहना वाला चतुःप्रदेशी स्कन्ध उत्कृष्ट अवगाहना वाले द्विप्रदेशी स्कन्ध की तरह कहना। इसी तरह मध्यम अवगाहना वाला चतुःप्रदेशी स्कन्ध कहना।

अन्तर इतना है कि इसमें अवगाहना की अपेक्षा कथंचित् हीन, कथंचित् तुल्य और कथंचित् अधिक कहना। जब हीन होता है तो एक प्रदेश हीन होता है और जब अधिक होता है तो एक प्रदेश अधिक होता है। इसी तरह जघन्य-उत्कृष्ट अवगाहना वाले पाँच प्रदेशी, छह प्रदेशी, सात प्रदेशी, आठ प्रदेशी, नौ प्रदेशी और दस प्रदेशी स्कन्ध कहना चाहिए। मध्यम अवगाहना वाले पाँच प्रदेशी यावत् दस प्रदेशी स्कन्ध में अवगाहना की अपेक्षा एक-एक प्रदेशी बढ़ने से क्रमशः दो, तीन, चार, पाँच, छह और सात प्रदेश की हानि और वृद्धि कहनी चाहिए। जैसे मध्यम अवगाहना वाला दस प्रदेशी स्कन्ध मध्यम अवगाहना वाले दस प्रदेशी स्कन्ध से अवगाहना की अपेक्षा जब हीन होता है तो एक प्रदेश हीन, दो प्रदेश हीन यावत् सात प्रदेश हीन होता है। जब अधिक होता है तो एक प्रदेश अधिक, दो प्रदेश अधिक यावत् सात प्रदेश अधिक होता है।

ज्ञातव्य- दस प्रदेशी स्कन्ध की, दस प्रदेशी स्कन्ध से मध्यम अवगाहना की अपेक्षा तुलना करने पर एक, दो यावत् सात प्रदेश तक हीनाधिक अवगाहना होती है। अधिकतम सात प्रदेशों का अन्तर बतलाने का कारण यह है कि दस प्रदेशी स्कन्ध की जघन्य अवगाहना एक आकाश प्रदेश की, उत्कृष्ट अवगाहना दस आकाश प्रदेश की होती है। जघन्य, उत्कृष्ट के दो प्रदेश तो ये कम हो गये। एक मध्यम अवगाहना का प्रदेश, इस प्रकार 2 से 9 आकाश प्रदेशों पर मध्यम अवगाहना हो पाती है। जिनका अन्तर 7 प्रदेश हो सकता है।

संख्यात प्रदेशी स्कन्ध की अवगाहना-

जघन्य अवगाहना वाला संख्यात प्रदेशी स्कन्ध, जघन्य अवगाहना वाले संख्यात प्रदेशी स्कन्ध से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा द्विस्थान पतित है, अवगाहना की अपेक्षा तुल्य है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है और वर्णादि के 16 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है।

जघन्य अवगाहना वाले संख्यात प्रदेशी स्कन्ध की तरह उत्कृष्ट अवगाहना वाला संख्यात प्रदेशी स्कन्ध भी कहना। मध्यम अवगाहना वाला संख्यात प्रदेशी स्कन्ध भी इसी तरह कहना, पर अन्तर इतना है कि अवगाहना द्विस्थान पतित कहना।

ज्ञातव्य- अवगाहना जघन्य व उत्कृष्ट दोनों में तुल्य ही है। मध्यम अवगाहना में संख्यात प्रदेशी स्कन्ध में अवगाहना भी द्विस्थान पतित होगी, क्योंकि मध्यम अवगाहना में अवगाहना की अपेक्षा संख्यात गुणी तक हानि-वृद्धि हो सकती है।

असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध की अवगाहना-

जघन्य अवगाहना वाला असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध, जघन्य अवगाहना वाले असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, अवगाहना की अपेक्षा तुल्य है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, वर्णादि 16 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। इसी तरह उत्कृष्ट अवगाहना वाला असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध भी कहना। मध्यम अवगाहना वाला असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध भी इसी तरह कह देना चाहिए। अन्तर इतना है कि अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित कहना चाहिए।

ज्ञातव्य– जघन्य व उत्कृष्ट अवगाहना स्व स्थान की अपेक्षा तुल्य होती है। मध्यम अवगाहना दो आकाश प्रदेश से लेकर असंख्यात आकाश प्रदेश तक (उत्कृष्ट अवगाहना से एक प्रदेश कम) होती है, इसमें असंख्यात गुणी तक हानि-वृद्धि संभव होने से मध्यम अवगाहना चतु:स्थान पतित होती है।

अनन्त प्रदेशी स्कन्ध की अवगाहना–

जघन्य अवगाहना वाला अनन्त प्रदेशी स्कन्ध, जघन्य अवगाहना वाले अनन्त प्रदेशी स्कन्ध से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थान पतित है, अवगाहना की अपेक्षा तुल्य है, स्थिति की अपेक्षा चतु:स्थान पतित है। वर्णादि 16 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है।

इसी तरह उत्कृष्ट अवगाहना वाला अनन्त प्रदेशी स्कन्ध भी कह देना, किन्तु इतना अन्तर है कि स्थिति की अपेक्षा तुल्य है।

मध्यम अवगाहना वाला अनन्त प्रदेशी स्कन्ध, मध्यम अवगाहना वाले अनन्त प्रदेशी स्कन्ध से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थान पतित है, अवगाहना और स्थिति की अपेक्षा चतु:स्थान पतित है तथा वर्णादि 20 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है।

ज्ञातव्य–अनन्त प्रदेशी स्कन्ध अनन्त परमाणुओं के मिलने बनता है। जो अनन्त प्रदेशी स्कन्ध चौफरसी होता है, वह जब सूक्ष्म भाव में परिणत होता है तो उसकी जघन्य अवगाहना एक आकाश प्रदेश की हो जाती है अर्थात् एक आकाश प्रदेश पर स्थित रह जाता है। जघन्य एक प्रदेश की अवगाहना चौफरसी अनन्त प्रदेशी स्कन्धों की हो सकती है, अठफरसी स्कन्धों की नहीं। इसी कारण से जघन्य अवगाहना वाले अनन्त प्रदेशी स्कन्ध में वर्णादि 16 बोल ही कहे हैं।

उत्कृष्ट अवगाहना वाले अनन्त प्रदेशी स्कन्ध की आपस में तुलना करने पर स्थिति तुल्य बतलायी है। इसका कारण यह है कि उत्कृष्ट अवगाहना चौफरसी अनन्त प्रदेशी स्कन्धों की ही होती है, अठफरसी स्कन्धों की नहीं। चौफरसी अनन्त प्रदेशी स्कन्ध जब विस्रसा परिणमन (स्वाभाविक रूप से) से सम्पूर्ण लोकव्यापी हो जाता है, तब वह अचित्त महास्कन्ध कहलाता है। इस अचित्त महास्कन्ध के बनने व निवर्तन (बिखरने) में केवली समुद्घात के समान आठ समय लगते हैं। इस उत्कृष्ट अवगाहना वाले अचित्त महास्कन्ध की स्थिति तुल्य होती है। बनने की प्रक्रिया की अपेक्षा चार समय की तथा सम्पूर्ण लोकव्यापी रहने की अपेक्षा एक समय की स्थिति माननी चाहिए।

अचित्त महास्कन्ध की स्थिति तुल्य होने पर भी सूक्ष्म स्कन्ध होने से ये एक साथ अनेक भी हो सकते हैं।

अठफरसी अनन्त प्रदेशी स्कन्ध की उत्कृष्ट अवगाहना लोक के असंख्यातवें भाग की होती है, जो अनन्त प्रदेशी चौफरसी स्कन्ध की अवगाहना की अपेक्षा तो मध्यम ही है। मध्यम अवगाहना वाले अनन्त प्रदेशी स्कन्ध में 20 वर्णादि बोल अठफरसी स्कन्धों की अपेक्षा से समझने चाहिए।

उत्कृष्ट अवगाहना वाले अनन्त प्रदेशी स्कन्ध में 16 वर्णादि ही होते हैं। वर्णादि 20 बोल नहीं बताये हैं, क्योंकि यहाँ आत्मप्रदेश रहित केवल अचित्त पुद्गलों की अपेक्षा ही कथन किया गया है। यद्यपि केवली समुद्घात करते समय तैजस शरीर सम्पूर्ण लोकव्यापी होने से अठफरसी स्कन्ध भी सम्पूर्ण लोक व्यापी हो सकता है, परन्तु यहाँ उसकी विवक्षा नहीं की गई है।

6. स्थिति

स्थिति के आधार पर परमाणु की पर्याय–

जघन्य स्थिति वाला परमाणु पुद्गल, जघन्य स्थिति वाले परमाणु पुद्गल से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा तुल्य है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य है, वर्णादि 16 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। इसी तरह उत्कृष्ट स्थिति वाले परमाणु पुद्गल भी कहना। मध्यम स्थिति वाले परमाणु पुद्गल भी इसी तरह कहना, किन्तु अन्तर इतना है कि स्थिति की अपेक्षा चतु:स्थान पतित कहना।

ज्ञातव्य–जैसा कि पूर्व में स्पष्ट किया जा चुका है कि परमाणु एवं सभी प्रकार के पुद्गल स्कन्धों की जघन्य स्थिति एक समय की तथा उत्कृष्ट स्थिति असंख्यात काल की होती है। जघन्य व उत्कृष्ट को छोड़कर बीच की सारी स्थिति मध्यम कहलाती है। मध्यम स्थिति चतु:स्थान पतित होती है, क्योंकि दो समय से लेकर असंख्यात काल तक की मध्यम स्थिति में असंख्यात गुणी तक हानि-वृद्धि हो सकती है।

स्थिति के आधार पर द्विप्रदेशी यावत् दस प्रदेशी स्कन्ध की पर्याय –

जघन्य स्थिति वाला द्विप्रदेशी स्कन्ध, जघन्य स्थिति वाले द्विप्रदेशी स्कन्ध से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश

की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा कथंचित् हीन, कथंचित् तुल्य और कथंचित् अधिक है। जब हीन होता है तब एक प्रदेश हीन होता है और अधिक होता है तो एक प्रदेश अधिक होता है। स्थिति की अपेक्षा तुल्य है, वर्णादि के 16 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है।

उत्कृष्ट स्थिति वाला द्विप्रदेशी स्कन्ध भी इसी तरह कहना। मध्यम स्थिति वाला द्विप्रदेशी स्कन्ध भी इसी तरह कहना, परन्तु इसमें स्थिति चतुःस्थान पतित कहना। इसी तरह त्रिप्रदेशी यावत् दस प्रदेशी स्कन्ध के जघन्य, मध्यम-उत्कृष्ट तीन-तीन अलावे (भांगे) कह देना चाहिए। अन्तर इतना है कि अवगाहना में क्रमशः एक-एक प्रदेश बढ़ाना चाहिए यावत् दस प्रदेशी में नौ प्रदेश अधिक, नौ प्रदेश हीन कहना चाहिए।

ज्ञातव्य- मध्यम स्थिति वाला द्विप्रदेशी स्कन्ध दो समय से लेकर असंख्यात काल (उत्कृष्ट स्थिति में एक समय कम) तक की स्थिति वाला होता है। इसमें असंख्यात गुणी तक हानि-वृद्धि हो सकती है, इस कारण से मध्यम स्थिति वाले द्विप्रदेशी यावत् दस प्रदेशी स्कन्ध चतुःस्थान पतित होते हैं।

स्थिति के आधार पर संख्यात प्रदेशी स्कन्ध की पर्याय-

जघन्य स्थिति वाला संख्यात प्रदेशी स्कन्ध, जघन्य स्थिति वाले संख्यात प्रदेशी स्कन्ध से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा द्विस्थान पतित है, अवगाहना की अपेक्षा द्विस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य है, वर्णादि 16 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। इसी तरह उत्कृष्ट स्थिति वाला संख्यात प्रदेशी स्कन्ध भी कहना। मध्यम स्थिति वाला संख्यात प्रदेशी स्कन्ध भी इसी तरह कहना चाहिए, किन्तु इसमें स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित कहना चाहिए।

स्थिति के आधार पर असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध की पर्याय -

जघन्य स्थिति वाला असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध, जघन्य स्थिति वाले असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य है और वर्णादि 16 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। उत्कृष्ट स्थिति वाला असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध भी इसी तरह कहना। मध्यम स्थिति वाला असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध भी इसी तरह कहना चाहिए, किन्तु इसमें स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित कहना चाहिए।

स्थिति के आधार पर अनन्त प्रदेशी स्कन्ध की पर्याय -

जघन्य स्थिति वाला अनन्त प्रदेशी स्कन्ध, जघन्य स्थिति वाले अनन्त प्रदेशी स्कन्ध से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थान पतित है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य है, वर्णादि 20 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। उत्कृष्ट स्थिति वाला अनन्त प्रदेशी स्कन्ध भी इसी तरह कहना। मध्यम स्थिति वाला अनन्त प्रदेशी स्कन्ध भी इसी तरह कहना चाहिए, परन्तु इसमें स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित कहना चाहिए।

7. वर्णादि

वर्णादि के आधार पर परमाणु की पर्याय-

जघन्य गुण काले वर्ण के परमाणु पुद्गल की अनन्त पर्याय हैं, क्योंकि जघन्य गुण काले वर्ण वाला परमाणु पुद्गल, जघन्य गुण काले वर्ण वाले परमाणु पुद्गल से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा तुल्य है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, काले वर्ण की पर्याय की अपेक्षा तुल्य है, दो गंध, पाँच रस और चार स्पर्श इन 11 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। उत्कृष्ट गुण काले वर्ण का परमाणु पुद्गल भी इसी तरह कहना। मध्यम गुण काले वर्ण का परमाणु पुद्गल भी जघन्य गुण काले वर्ण वाले परमाणु पुद्गल की तरह कहना, किन्तु इसमें काले वर्ण की पर्याय की अपेक्षा भी षट्स्थान पतित कहना चाहिए।

ज्ञातव्य- काले वर्ण की जिसमें सबसे कम मात्रा पाई जाती है, वह पुद्गल जघन्य गुण काला कहलाता है। यहाँ गुण का अर्थ अंश या मात्रा है। जघन्य गुण का अर्थ है- सबसे कम अंश। दूसरे शब्दों में यों कह सकते हैं कि जिस पुद्गल में केवल एक डिग्री कालापन हो, जिससे कम कालापन सम्भव ही न हो, वह जघन्य गुण समझना चाहिए। जिसमें कालेपन के सबसे अधिक अंश पाये जाएँ, वह उत्कृष्ट गुण काला है।

जघन्य व उत्कृष्ट कालेपन के बीच की स्थितियाँ मध्यम गुण काला कहलाती हैं। काले वर्ण की तरह जघन्य-मध्यम-उत्कृष्ट नीलादि वर्णों तथा गन्धों, रसों एवं स्पर्शों के विषय में भी समझ लेना चाहिए।

जैसा कि पूर्व में स्पष्ट किया जा चुका है कि वर्णादि की जघन्य, मध्यम, उत्कृष्ट अवस्थाएँ सभी प्रकार के पुद्‌गलों में (परमाणु एवं स्कन्धों में) हो सकती हैं।

एक परमाणु में एक समय में एक ही वर्ण, एक ही गन्ध, एक ही रस तथा दो स्पर्श (शीत, उष्ण में से एक, रूक्ष, स्निग्ध में से एक) होते हैं। यहाँ काले वर्ण की अपेक्षा कथन होने से वर्ण एक ही कहा हैं, किन्तु काले वर्ण वाले परमाणु में 2 गन्ध, पाँच रस तथा चार स्पर्श में से कोई भी मिल सकते हैं अतः काले वर्ण को छोड़कर शेष 11 वर्णादि बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित कहा है।

वर्णादि के आधार पर द्विप्रदेशी यावत् दस प्रदेशी स्कन्धों की पर्याय –

जघन्य गुण काले वर्ण वाला द्विप्रदेशी स्कन्ध, जघन्य गुण काले वर्ण वाले द्विप्रदेशी स्कन्ध से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा कथंचित् हीन, कथंचित् तुल्य और कथंचित् अधिक है। जब हीन होता है तो एक प्रदेश से हीन होता है और अधिक होता है तो एक प्रदेश से अधिक होता है। स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, काले वर्ण की पर्याय की अपेक्षा तुल्य है और शेष वर्णादि 15 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। इसी तरह उत्कृष्ट गुण काले वर्ण वाला द्विप्रदेशी स्कन्ध भी कहना। मध्यम गुण काले वर्ण वाला द्विप्रदेशी स्कन्ध भी इसी तरह कहना चाहिए, पर इसमें वर्णादि 16 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित कहना चाहिए।

इस तरह जघन्य, उत्कृष्ट, मध्यम गुण काले वर्ण वाले त्रिप्रदेशी यावत् दस प्रदेशी स्कन्ध तक कहना चाहिए। इसमें अवगाहना में प्रदेश वृद्धि ऊपर बताए अनुसार कहनी चाहिए यावत् दस प्रदेशी स्कन्ध में नौ प्रदेश हीन तथा नौ प्रदेश अधिक कहना चाहिए।

वर्णादि के आधार पर संख्यात प्रदेशी स्कन्ध की पर्याय–

जघन्य गुण काले वर्ण वाले संख्यात प्रदेशी स्कन्ध की अनन्त पर्याय हैं। क्योंकि जघन्य गुण काले वर्ण वाला संख्यात प्रदेशी स्कन्ध, जघन्य गुण काले वर्ण वाले संख्यात प्रदेशी स्कन्ध से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा द्विस्थान पतित है, अवगाहना की अपेक्षा द्विस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, काले वर्ण की पर्याय की अपेक्षा तुल्य है, शेष वर्णादि 15 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। इसी तरह उत्कृष्ट गुण काले वर्ण वाला संख्यात प्रदेशी स्कन्ध कहना। मध्यम गुण काले वर्ण वाला संख्यात प्रदेश स्कन्ध भी इसी प्रकार कहना, किन्तु इसमें वर्णादि 16 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित कहना चाहिए।

वर्णादि के आधार पर असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध की पर्याय –

जघन्य गुण काले वर्ण वाले असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध की अनन्त पर्याय हैं। क्योंकि जघन्य गुण काले वर्ण वाला असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध, जघन्य गुण काले वर्ण वाले असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, काले वर्ण की पर्याय की अपेक्षा तुल्य है, शेष वर्णादि 15 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। उत्कृष्ट गुण काले वर्ण वाला असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध भी इसी तरह कहना। मध्यम गुण काले वर्ण वाला असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध भी इसी प्रकार कहना, किन्तु इसमें वर्णादि 16 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित कहना चाहिए।

वर्णादि के आधार पर अनन्त प्रदेशी स्कन्ध की पर्याय –

जघन्य गुण काले वर्ण वाले अनन्त प्रदेशी स्कन्ध की अनन्त पर्याय हैं, क्योंकि जघन्य गुण काले वर्ण वाला अनन्त प्रदेशी स्कन्ध, जघन्य गुण काले वर्ण वाले अनन्त प्रदेशी स्कन्ध से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थान पतित है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, काले वर्ण की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है, शेष वर्णादि 19 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। इसी तरह उत्कृष्ट गुण काले वर्ण वाला अनन्त प्रदेशी स्कन्ध भी कहना। मध्यम गुण काले वर्ण वाला अनन्त प्रदेशी स्कन्ध भी इसी तरह कहना, किन्तु इसमें वर्णादि 20 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित कहना चाहिए।

काले वर्ण के समान अन्य वर्णादि के आधार पर पुद्‌गलों की पर्याय –

जघन्य, उत्कृष्ट और मध्यम गुण काले वर्ण वाले परमाणु पुद्‌गल, द्विप्रदेशी यावत् दस प्रदेशी, संख्यात प्रदेशी,

असंख्यात प्रदेशी और अनन्त प्रदेशी स्कन्ध की तरह जघन्य, उत्कृष्ट और मध्यम गुण नीला, लाल, पीला, सफेद वर्ण वाले, दुरभिगन्ध, सुरभिगन्ध वाले, तीखा, कड़वा, कषैला, खट्टा और मीठा रस वाले तथा चार स्पर्श (शीत, उष्ण, स्निग्ध, रुक्ष) वाले परमाणु पुद्गल यावत् अनन्त प्रदेशी स्कन्ध कह देना चाहिए। अन्तर इतना है कि नीला, लाल, पीला और श्वेत वर्ण वाले परमाणु पुद्गल में अपने वर्ण के सिवाय अन्य वर्ण नहीं कहना। सुरभिगन्ध वाले परमाणु पुद्गल में दुरभिगन्ध नहीं कहना। दुरभि गन्ध वाले परमाणु पुद्गल में सुरभिगन्ध नहीं कहना। इसी तरह तीखे, कड़वे आदि रस वाले परमाणु पुद्गल में अपने रस के सिवाय अन्य रस नहीं कहना चाहिए।

ज्ञातव्य– जैसाकि पूर्व में स्पष्ट किया जा चुका है कि परमाणु में एक समय में एक वर्ण, एक गन्ध, एक रस तथा दो स्पर्श (शीत, उष्ण में से एक, स्निग्ध, रूक्ष में से एक) होते हैं। जैसे- जब काला वर्ण होगा, उस समय में अन्य वर्ण नहीं होंगे। किन्तु गन्ध, रस तथा चार स्पर्शों में से कोई भी दो स्पर्श हो सकते हैं। जब सुरभि गन्ध वाला परमाणु होगा तो उसमें उस समय दुरभिगन्ध नहीं होगी। किन्तु पाँच वर्ण में से कोई भी एक वर्ण, पाँच रस में से कोई भी एक रस तथा चार स्पर्शों में से उपर्युक्त कथनानुसार दो स्पर्श हो सकते हैं। इसी तरह रस तथा स्पर्श के सम्बन्ध में भी जान लेना चाहिए।

कर्कश आदि चार स्पर्शों के आधार पर स्कन्धों की पर्याय –

जघन्य गुण कर्कश अनन्त प्रदेशी स्कन्धों की अनन्त पर्याय हैं। क्योंकि जघन्य गुण कर्कश अनन्त प्रदेशी स्कन्ध, जघन्य गुण कर्कश अनन्त प्रदेशी स्कन्ध से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थान पतित है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, वर्णादि 19 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है एवं कर्कश स्पर्श की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है। उत्कृष्ट गुण कर्कश अनन्त प्रदेशी स्कन्ध भी इसी तरह कहना। मध्यम गुण कर्कश अनन्त प्रदेशी स्कन्ध भी इसी तरह कहना, किन्तु इसमें वर्णादि 20 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित कहना। मृदु, गुरु, लघु स्पर्श वाले अनन्त प्रदेशी स्कन्ध भी जघन्य, उत्कृष्ट, मध्यम के भेद से इसी तरह कहना चाहिए।

ज्ञातव्य– कर्कश, मृदु, गुरु, लघु (खुरदरा, कोमल, भारी, हल्का) ये चार स्पर्श मात्र अनन्त प्रदेशी अठफरसी स्कन्धों में ही पाये जाते हैं। परमाणु तथा शेष पुद्गल स्कन्ध (अठफरसी को छोड़कर) में उक्त चार स्पर्श नहीं पाये जाने के कारण ये चौफरसी ही कहलाते हैं। कर्कश गुण वाले अनन्त प्रदेशी स्कन्ध की जघन्य, उत्कृष्ट तथा मध्यम पर्यायों का वर्णन पूर्व कथित अनन्त प्रदेशी अठफरसी स्कन्धों के समान समझ लेना चाहिये। कर्कश गुण के समान ही मृदु, गुरु व लघु पर्यायों का वर्णन भी समझना चाहिए।

8. समुच्चय द्रव्य

प्रदेशों पर आधारित स्कन्धों की पर्याय–

(यह प्रारंभ के 4 बोलों का संक्षिप्त समुच्चय कथन है)

जघन्य प्रदेशी स्कन्ध (द्विप्रदेशी स्कन्ध) की अनन्त पर्याय हैं। क्योंकि जघन्य प्रदेशी स्कन्ध, जघन्य प्रदेशी स्कन्ध से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा कथंचित् हीन, कथंचित् तुल्य और कथंचित् अधिक है। जब हीन होता है तो एक प्रदेश हीन होता है और जब अधिक होता है तो एक प्रदेश अधिक होता है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, वर्णादि 16 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। इसी तरह उत्कृष्ट प्रदेशी स्कन्ध भी कहना, किन्तु इसमें अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित तथा वर्णादि 20 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित कहना चाहिए। मध्यम प्रदेशी स्कन्ध भी उत्कृष्ट प्रदेशी स्कन्ध की तरह कहना, किन्तु इसमें प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थान पतित कहना चाहिए।

ज्ञातव्य– प्रदेशों के आधार पर स्कन्धों के जघन्य, मध्यम और उत्कृष्ट ये तीन भेद बतलाकर उनकी पर्यायों का विवेचन किया गया है। जघन्य स्कन्ध द्विप्रदेशी होता है। उत्कृष्ट स्कन्ध अनन्त प्रदेशी अठफरसी होता है तथा मध्यम स्कन्ध तीन प्रदेशी से लेकर अनन्त प्रदेशी तक (उत्कृष्ट से एक प्रदेश कम) होता है। इन तीनों पुद्गल स्कन्धों की पर्यायों का वर्णन पूर्व कथनानुसार समझ लेना चाहिए।

9. समुच्चय क्षेत्र

अवगाहना पर आधारित पुद्गलों की पर्याय–

जघन्य अवगाहना वाले पुद्गल की अनन्त पर्याय हैं। क्योंकि जघन्य अवगाहना वाला पुद्गल, जघन्य अवगाहना वाले पुद्गल से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थान पतित है, अवगाहना की अपेक्षा तुल्य है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, वर्णादि 16 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। उत्कृष्ट अवगाहना

वाला पुद्गल भी इसी तरह कहना, किन्तु इसमें स्थिति की अपेक्षा तुल्य कहना। मध्यम अवगाहना वाला पुद्गल, मध्यम अवगाहना वाले पुद्गल से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थान पतित है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, वर्णादि 20 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है।

ज्ञातव्य- अवगाहना के आधार पर पुद्गलों की पर्यायें इस बोल में बतलाई गयी हैं। जघन्य अवगाहना वाले से तात्पर्य एक आकाश प्रदेश पर स्थित रहने वाले पुद्गलों से है। उत्कृष्ट अवगाहना से तात्पर्य सम्पूर्ण लोक व्यापी (अचित्त महास्कन्ध) होने से है तथा मध्यम अवगाहना से तात्पर्य दो आकाश प्रदेश से लेकर असंख्यात आकाश प्रदेशों तक (उत्कृष्ट अवगाहना से एक आकाश प्रदेश कम) पर स्थित रहने वाले पुद्गल स्कन्धों से है। पूर्व कथनानुसार जघन्य, उत्कृष्ट व मध्यम अवगाहना के पुद्गलों की पर्यायों का वर्णन समझ लेना चाहिए।

10. समुच्चय काल

स्थिति पर आधारित पुद्गलों की पर्याय-

जघन्य स्थिति वाले पुद्गल की अनन्त पर्याय हैं, क्योंकि जघन्य स्थिति वाला पुद्गल, जघन्य स्थिति वाले पुद्गल से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थान पतित है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य है, वर्णादि 20 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। इसी तरह उत्कृष्ट स्थिति वाला पुद्गल भी कहना। मध्यम स्थिति वाला पुद्गल भी इसी तरह कहना, किन्तु इसमें स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित कहना चाहिए।

ज्ञातव्य- इस बोल में स्थिति के आधार पर पुद्गलों के जघन्य, मध्यम व उत्कृष्ट ये तीन भेद बतलाकर उनकी पर्यायों का वर्णन किया गया है। जघन्य स्थिति एक समय की, उत्कृष्ट स्थिति असंख्यात काल की तथा मध्यम स्थिति दो समय से लेकर असंख्यात काल तक की (उत्कृष्ट स्थिति में एक समय कम) होती है। जैसा कि विदित है कि सभी प्रकार के पुद्गलों की जघन्य, मध्यम व उत्कृष्ट स्थितियाँ हो सकती हैं। स्थिति पर आधारित पुद्गलों की पर्यायों का वर्णन पूर्व कथनानुसार समझ लेना चाहिए।

11. समुच्चय भाव

वर्णादि पर आधारित पुद्गलों की पर्याय-

जघन्य गुण काले वर्ण वाले पुद्गल की अनन्त पर्याय हैं, क्योंकि जघन्य गुण काले वर्ण वाला पुद्गल, जघन्य गुण काले वर्ण वाले पुद्गल से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थान पतित है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, काले वर्ण के पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है। शेष वर्णादि के 19 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। इसी तरह उत्कृष्ट गुण काले वर्ण वाला पुद्गल भी कहना। मध्यम गुण काला वर्ण वाला पुद्गल भी इसी तरह कहना, किन्तु इसमें वर्णादि 20 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित कहना चाहिए। जिस तरह काले वर्ण का कहा, उसी तरह शेष वर्णादि के 19 बोल भी कहने चाहिए।

ज्ञातव्य- वर्णादि के आधार पर पुद्गलों के जघन्य, उत्कृष्ट व मध्यम ये तीन भेद बतलाये हैं। जघन्य गुण अर्थात् सबसे कम मात्रा में, उत्कृष्ट गुण अर्थात् सबसे अधिक मात्रा में तथा मध्यम गुण अर्थात् जघन्य व मध्यम के बीच की मात्रा में काला वर्ण आदि होना। जघन्य, मध्यम व उत्कृष्ट गुण काला वर्णादि सभी प्रकार के पुद्गलों में हो सकता है। अतः पूर्व वर्णनानुसार जघन्य, उत्कृष्ट व मध्यम गुण काले वर्ण वाले पुद्गलों की पर्यायों को समझ लेना चाहिए। काले वर्ण के समान शेष 19 वर्णादि की पर्यायें भी समझ लेनी चाहिए।

अलावा (भंग) - द्रव्य के 13, क्षेत्र के 12, काल के 12, भाव के 260, अवगाहना के 35, स्थिति के 39, भाव के 636, द्रव्य के 3, क्षेत्र के 3, काल के 3, भाव के 60 इस प्रकार कुल 1076 अलावे हुए।

ज्ञातव्य- 1. द्रव्य के 13 अलावे इस प्रकार हैं- परमाणु, दो प्रदेशी, तीन प्रदेशी, चार, पाँच, छह, सात, आठ, नौ, दस प्रदेशी स्कन्ध, संख्यात प्रदेशी, असंख्यात प्रदेशी तथा अनन्त प्रदेशी स्कन्ध।

2. क्षेत्र के 12- एक आकाश प्रदेश, दो, तीन, चार, पाँच, छह, सात, आठ, नौ, दस, संख्यात और असंख्यात आकाश प्रदेश।

3. काल के 12- एक समय की स्थिति, दो, तीन, चार, पाँच, छह, सात, आठ, नौ, दस, संख्यात और असंख्यात समय की स्थिति।

4. भाव के 260- द्रव्य के 13 अलावों को 5 वर्ण, 2 गन्ध, 5 रस और 8 स्पर्श, इन 20 वर्णादि से गुणा करने पर 13x20=260 अलावे होते हैं।

5. अवगाहना के 35- द्रव्य के ऊपर बतलाये 13 अलावों में से परमाणु ऐसा है, जिसकी एक ही अवगाहना होती है, उसमें अवगाहना की अपेक्षा जघन्य, मध्यम, उत्कृष्ट के भेद नहीं होते, इसलिए 13 में से परमाणु कम करने पर 12 अलावे बचते हैं। इन 12 को

जघन्य, मध्यम व उत्कृष्ट अवगाहना की अपेक्षा गुणा करने पर 12x3=36 अलावे होते हैं। द्विप्रदेशी स्कन्ध में मध्यम अवगाहना नहीं होती, क्योंकि वह जघन्य एक आकाश प्रदेश पर तथा उत्कृष्ट दो आकाश प्रदेश पर स्थित रहता है। अतः अवगाहना के 36 अलावों में से द्विप्रदेशी स्कन्ध की मध्यम अवगाहना कम करने पर अवगाहना के कुल 35 अलावे होते हैं।

6. स्थिति के 39- द्रव्य के उपर्युक्त 13 अलावों को जघन्य, मध्यम व उत्कृष्ट स्थिति की अपेक्षा गुणा करने पर 13x3=39 अलावे होते हैं।

7. भाव के 636- द्रव्य के उपर्युक्त 13 अलावों को 16 वर्णादि (कर्कश, मृदु, गुरु व लघु को छोड़कर) से गुणा करने पर 13x16=208 अलावे होते हैं तथा अठफरसी अनन्त प्रदेशी स्कन्ध को कर्कश, मृदु, गुरु, लघु इन चार स्पर्शों की अपेक्षा गुणा करने पर 1x4=4 अलावे होते हैं। इस प्रकार 208+4=212 अलावे हुए। इन 212 अलावों को जघन्य, मध्यम व उत्कृष्ट वर्णादि की अपेक्षा गुणा करने पर 212x3=636 अलावे भाव की अपेक्षा से होते हैं।

8. समुच्चय द्रव्य के 3- समस्त पुद्‌गल द्रव्य को जघन्य, मध्यम व उत्कृष्ट की अपेक्षा से गुणा करने पर द्रव्य के 3 अलावे होते हैं।

9. समुच्चय क्षेत्र के 3- समस्त क्षेत्र को जघन्य, मध्यम व उत्कृष्ट की अपेक्षा से गुणा करने पर क्षेत्र के 3 अलावे होते हैं।

10. समुच्चय काल के 3- समस्त काल (स्थिति) को जघन्य, मध्यम व उत्कृष्ट की अपेक्षा गुणा करने पर काल के 3 अलावे होते हैं।

11. समुच्चय भाव के 60- वर्णादि 20 बोलों को जघन्य, मध्यम व उत्कृष्ट की अपेक्षा गुणा करने पर 20x3=60 अलावे होते हैं।

उपर्युक्त सभी अलावों को जोड़ने से कुल 1076 अलावे होते हैं।

।।सेवम् भंते, सेवम् भंते, सेवम् भंते।।

256 राशि (ढीगला) का थोकड़ा

(पन्नवणा सूत्र तीसरा पद)

ज्ञातव्यः-

यद्यपि सम्पूर्ण जीव राशि अनन्तानन्त है, किन्तु असत् कल्पना से उसकी 256 राशि मान कर इस थोकड़े में आयु के बंधक अबंधक आदि चौदह बोलों का परिमाण एवं अल्पबहुत्व कहे गये हैं। इनमें जीवधड़े के 563 भेदों में से प्रत्येक शरीरी 559 जीव असंख्यात ही होते हैं। उनमें 1 राशि भी नहीं बन सकती। वे तो 1 राशि के अनन्तवें भाग जितने ही हो सकते हैं। साधारण नाम कर्म के उदय वाले व उदय के सन्मुख बाटे बहते जीवों की अपेक्षा ही कथन की प्रधानता है।

1. आयु के बंधकों की एक राशि, आयु के अबन्धकों की 255 राशि।
2. अपर्याप्त (लब्धि अपर्याप्त) की 2 राशि, पर्याप्त की 254 राशि।
3. सुप्त (सोते हुए) की 4 राशि, जागृत की 252 राशि।
4. समुद्घात करने वालों (सातों समुद्घातों में से किसी भी समुद्घात को करते हुए) की 8 राशि, समुद्घात नहीं करने वालों की 248 राशि।
5. सातावेदनीय वेदने (भोगने) वालों की 16 राशि, असाता वेदनीय वेदने (भोगने) वालों की 240 राशि।
6. इन्द्रिय उपयोग वालों की 32 राशि, नो इन्द्रिय उपयोग वालों को 224 राशि।
7. अनाकार (दर्शन) उपयोग वालों की 64 राशि, साकार (ज्ञान) उपयोग वालों की 192 राशि।

1. सबसे थोड़े आयु के बंधक, आयु के अबंधक संख्यात गुणा। 2. सबसे थोड़े अपर्याप्त, पर्याप्त संख्यातगुणा। 3. सबसे थोड़े सुप्त, जागृत संख्यातगुणा। 4. सबसे थोड़े समुद्घात करने वाले, समुद्घात न करने वाले संख्यात गुणा। 5. सबसे थोड़े सातावेदनीय वेदने वाले, असातावेदनीय वेदने वाले संख्यात गुणा। 6. सबसे थोड़े इन्द्रिय उपयोग वाले, नो इन्द्रिय उपयोग वाले संख्यात गुणा। 7. सबसे थोड़े अनाकार उपयोग वाले, साकार उपयोग वाले संख्यात गुण।

चौदह बोलों की सम्मिलित अल्पबहुत्व - 1. सबसे थोड़े आयु के बन्धक, 2. अपर्याप्त संख्यात गुणा, 3. सुप्त संख्यात गुणा, 4. समुद्घात करने वाले संख्यात गुणा, 5. सातावेदनीय वेदने वाले संख्यात गुणा, 6. इन्द्रिय उपयोग वाले संख्यात गुणा, 7. अनाकार उपयोग वाले संख्यात गुणा, 8. साकार उपयोग वाले संख्यात गुणा, 9. नोइन्द्रिय उपयोग वाले विशेषाधिक, 10. असाता वेदनीय वेदने वाले विशेषाधिक, 11. समुद्घात न करने वाले विशेषाधिक, 12. जागृत विशेषाधिक, 13. पर्याप्त विशेषाधिक, 14. आयुकर्म के अबन्धक विशेषाधिक।

ज्ञातव्य - इस थोकड़ें में 1. आयुष्य कर्म के बन्धक-अबन्धक, 2. अपर्याप्तक-पर्याप्तक, 3. सुप्त-जागृत, 4. समुद्घात करने वाले-समुद्घात नहीं करने वाले, 5. सातावेदक-असातावेदक, 6. इन्द्रिय उपयोग युक्त-नो इन्द्रिय उपयोग युक्त, 7. साकार उपयोग युक्त-अनाकार उपयोग युक्त, इन सात युगलों के अल्प बहुत्व का वर्णन किया गया हैं, इनमें प्रत्येक युगल के अल्पबहुत्व सम्बन्धी जानकारी इस प्रकार हैं -

1. सबसे थोड़े आयुष्यकर्म के बन्धक हैं, उनसे अबन्धक संख्यात गुणा हैं, क्योंकि आयुष्य कर्म जीवन में एक बार ही बन्धता है, वह भी वर्तमान भव के दो भाग बीतने पर तथा एक भाग शेष रहने पर अर्थात् तीसरे भाग में अथवा तीसरे भाग के तीसरे भाग, उसके भी तीसरे भाग आदि शेष रहने पर बन्धता है। आयु कर्म का बन्धकाल लगभग 1 आवलिका के आस-पास का संभव है। शेष काल अबन्धकाल होने से संख्यात गुणा होता है।
2. अपर्याप्त जीवों से पर्याप्त जीव संख्यात गुणा हैं। यहाँ अपर्याप्त से तात्पर्य लब्धि अपर्याप्त जीवों से हैं, जो नियमा अपर्याप्त अवस्था में ही काल कर जाते हैं। ऐसे जीवों से पर्याप्त जीव संख्यात गुणे अधिक हैं। यह कथन सूक्ष्म जीवों की बहुलता की अपेक्षा समझना चाहिए। क्योंकि सूक्ष्म जीवों में बाह्य व्याघात नहीं होने से उन जीवों की उत्पत्ति अधिक होती है तथा उनमें अपर्याप्त अवस्था में मरने वाले जीव थोड़े ही होते हैं, पर्याप्त होकर मरने वाले अधिक होते हैं।
3. सुप्त जीवों से जागृत जीव संख्यात गुणा अधिक हैं। सुप्त जीवों से तात्पर्य सभी अपर्याप्त जीवों से है। अर्थात् लब्धि अपर्याप्त व करण अपर्याप्त दोनों का समावेश सुप्त जीवों में किया जाता है। अपर्याप्त अवस्था में मरने वाले लब्धि अपर्याप्त तथा पर्याप्त होकर ही काल करने वाले किन्तु वर्तमान में स्वयोग्य पर्याप्तियों को पूर्ण नहीं करने वाले, करण अपर्याप्त कहलाते हैं। सूक्ष्म जीवों में अपर्याप्त की अपेक्षा पर्याप्त (जागृत) जीव अधिक होते हैं।
4. समुद्घात करने वाले जीव सबसे थोड़े हैं क्योंकि समुद्घात क्वचित् कदाचित् और वह भी अन्तर्मुहूर्त के लिए जीवों में होता है, अतः समुद्घात नहीं करने वाले जीव संख्यात गुणा हैं। सभी समुद्घातों की अपेक्षा भी समुद्घात नहीं करने वाले ही अधिक जीव मिलते हैं।
5. सातावेदनीय के उदय वाले जीव थोड़े हैं। असाता वेदनीय के उदय वाले संख्यात गुणा अधिक हैं। क्योंकि सूक्ष्म और बादर साधारण कायिक जीवों में जन्म-मरण की अव्यक्त वेदना के साथ अनन्त जीवों के साथ एक ही शरीर में रहने से असाता ही अधिक होती है, फिर भी 16 राशि जितने अनन्त जीव साता वेदनीय के उदय से कुछ राहत अनुभव करते हैं।

6. इन्द्रियों के उपयोग वाले जीव थोड़े हैं, उनसे नोइन्द्रिय के उपयोग वाले संख्यात गुणा हैं। क्योंकि इन्द्रिय का उपयोग वर्तमान कालिक होता है, इसलिए उसका काल थोड़ा ही है। इसमें अनाकार व साकार दोनों प्रकार के उपयोग वाले कतिपय जीव ही आते हैं। नोइन्द्रिय अर्थात् अचक्षुदर्शन, मति अज्ञान (कषाय, संज्ञा, लेश्या) का उपयोग भूत और भविष्यत् काल विषयक भी होने से नोइन्द्रिय के उपयोग का काल अधिक है।
7. अनाकार उपयोग (दर्शन) वाले जीव थोड़े हैं तथा साकार उपयोग वाले संख्यात गुणा है क्योंकि दर्शन उपयोग (सामान्य अनुभूति) का काल थोड़ा है, उससे साकार (ज्ञान) उपयोग का काल, अनाकार उपयोग की अपेक्षा लगभग तिगुणा होने के कारण उन्हें संख्यात गुणा अधिक बतलाया गया है।

चौदह बोलों की सम्मिलित अल्पबहुत्व सम्बन्धी स्पष्टीकरण इस प्रकार है –

1. सबसे थोड़े आयुष्य कर्म के बन्धक हैं, क्योंकि आयुष्य कर्म जीवन में एक बार बंधता है। वह भी दो तिहाई भाग आदि बीतने पर बंधता है। आयुकर्म का बन्ध काल लगभग 1 आवलिका के आसपास का संभव है।
2. आयु बन्ध काल से अपर्याप्तक का काल बहुत बड़ा है, पर अपर्याप्तकों के साथ पर्याप्तक जीव भी आयु का बन्ध करते हैं। अपर्याप्तक व पर्याप्तक आयु बन्धक जीवों से लब्धि अपर्याप्तक जीव दुगुने ही होते हैं।
3. अपर्याप्तकों से सुप्त संख्यात गुणा हैं क्योंकि सुप्त में लब्धि व करण दोनों ही प्रकार के अपर्याप्तकों का समावेश हो जाता है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि जितने जीव लब्धि अपर्याप्तक होते हैं। प्रायः उतने ही जीव करण अपर्याप्तक भी होते हैं। इसी कारण से लब्धि अपर्याप्तकों की 2 राशि तथा करण अपर्याप्तकों की 2 राशि, इन दोनों को मिलाकर 4 राशि प्रमाण अनन्त सुप्त जीव बतलाये हैं।
4. समुद्घात करने वाले जीव सबसे थोड़े हैं। यद्यपि अपर्याप्तक जीवों में अनेक जीव समुद्घात करने वाले होते हैं। भगवती सूत्र शतक 34-35 आदि से स्पष्ट है कि बाटे बहते व नवीन उत्पन्न जीवों में पूर्व भव से चली आ रही वेदनीय व कषाय समुद्घात मिल सकती हैं। अनेक जीव मरण काल से पूर्व मारणान्तिक समुद्घात भी करते हैं। तथापि अपर्याप्त में समुद्घात करने वालों से पर्याप्त में समुद्घात करने वाले अधिक होते हैं, वे दोनों मिलकर अपर्याप्त से दुगुने हो जाते हैं।

   प्रज्ञापना सूत्र के 36वें समुद्घात पद से भी यह स्पष्ट है कि समुच्चय जीव व वनस्पतिकाय के दण्डक में मारणान्तिक समुद्घात करने वाले जीवों से कषाय समुद्घात करने वाले जीव संख्यात गुणे अधिक हैं, उनसे वेदनीय समुद्घात करने वाले जीव विशेषाधिक हैं और उनसे समुद्घात नहीं करने वाले जीव असंख्यात गुणा हैं।

   अतः साधारण शरीरियों में मारणान्तिक, कषाय व वेदनीय समुद्घात करने वालों से समुद्घात नहीं करने वाले जीव संख्यात गुणे अधिक होने में बाधा नहीं। वैक्रिय, तैजस, आहारक और केवली समुद्घात वाले सारे जीव मिलकर भी एक राशि के अनन्तवें भाग जितने ही होते हैं, उनसे अल्पबहुत्व प्रभावित नहीं होती। वे भी समुद्घात करने वाले साधारण जीवों में गौण रूप से सम्मिलित ही है।
5. प्रत्येक शरीरियों से 256 राशि में से 1 राशि भी पूरी नहीं होती। प्रत्येक शरीरियों में नरक, तिर्यंच में असाता की बहुलता है, देव और गर्भज मनुष्य में साता वाले अधिक मिल सकते हैं। यहाँ साधारण काय की प्रधानता से कथन हुआ है। उसमें जन्म-मरण के साथ असाता वेदनीय की उदीरणा के कारण वेदनीय समुद्घात भी होता रहता है। अतः असाता के वेदक साता के वेदकों से 15 गुने अधिक हैं।
6. अनेक सातावेदकों के साथ अनेक असातावेदक भी इन्द्रिय उपयोग वाले होते हैं। अचक्षुदर्शन वाले अनाकार उपयोगी और मति अज्ञान वाले साकार उपयोगी में जब स्पर्शनेन्द्रिय के साक्षात् व्यापार की प्रधानता से उपयोग रहता है तब 32 राशि में समाविष्ट अनन्त जीव मिलते हैं और जब साक्षात् इन्द्रिय का उपयोग नहीं होता। संज्ञा, लेश्या, कषाय आदि के परिणाम की प्रधानता से श्रुतअज्ञान अथवा अचक्षुदर्शन व मतिअज्ञान का उपयोग रहता है, तब 32 से 7 गुने अर्थात् 224 राशि प्रमाण अनन्त जीव उपलब्ध होते हैं।
7. इन्द्रिय का उपयोग वालों से अनाकार उपयोग वाले संख्यात गुणा हैं क्योंकि इन्द्रिय का उपयोग करने वालों में अनाकार व साकार दोनों प्रकार के उपयोग वाले जीव सम्मिलित हैं। इन्द्रिय का उपयोग करने वाले साकार उपयोग वाले जीवों से इन्द्रिय का उपयोग नहीं करने वाले अनाकार उपयोगी बहुत अधिक होते हैं। अतः इन्द्रिय का उपयोग करने वाले अनाकार उपयोगी और इन्द्रियों का उपयोग नहीं करने वाले अनाकार उपयोगी वाले अनन्त जीव मिलकर 64 राशि प्रमाण हो जाते हैं जो इन्द्रिय का उपयोग करने वाले साकार अनाकार उपयोगी के सम्मिलित योग (32) से संख्यात गुणा होते हैं।
8. प्रज्ञापना पद 18 (कायस्थिति) में साकार व अनाकार उपयोग की कायस्थिति अन्तर्मुहूर्त प्रमाण कही है, तथापि अचक्षुदर्शन (अनाकार उपयोग) से मतिअज्ञान व श्रुत अज्ञान (साकार उपयोग) का काल लगभग तीन गुना होता है। इसलिये 64 की अपेक्षा 192 राशि जितने जीव साकार उपयोग में मिलते हैं।
9. साकार उपयोग वालों में इन्द्रिय उपयोग वाले बहुत कम हैं और नोइन्द्रिय के उपयोग वाले बहुत अधिक। इसी प्रकार अनाकार उपयोग वालों में नोइन्द्रिय के उपयोग वाले ही अधिक होते हैं। साकार उपयोग वालों में से इन्द्रिय के उपयोग वाले निकालने व अनाकार उपयोग वालों के नो इन्द्रिय के उपयोग वालों को मिलाने से यह राशि 224 बन जाती है।
10. नोइन्द्रिय उपयोग वालों में से साता वेदक निकालने व इन्द्रिय उपयोग वालों के असाता वेदक जोड़ने से कुल असाता वेदक, नोइन्द्रिय के उपयोग वालों से विशेषाधिक होते हैं, जिसका सीधा सा अभिप्राय यह है कि नोइन्द्रिय उपयोग वाले सातावेदकों की अपेक्षा इन्द्रिय उपयोग वाले असातावेदक 16 राशि जितने जीव अधिक होते हैं।
11. प्रज्ञापना के 36वें पद से स्पष्ट है कि छद्मस्थ अवस्था में (पहले से छठे गुणस्थान तक) होने वाले समुद्घातों में उन-उनसे सम्बन्धित कर्मों की उदीरणा ही प्रमुख कारण होता है। वेदनीय समुद्घात असातावेदनीय कर्म की विशेष उदीरणा से ही होता है। समुद्घात का काल भी बहुत अधिक नहीं होता है। असाता वेदकों में से समुद्घात करने वालों को कम कर दिया जाय और साता वेदकों में समुद्घात नहीं करने वालों को जोड़ा जाय तो यह राशि 248 तक पहुँच जाती है। स्पष्ट है कि असाता वेदक समुद्घात करने वालों से साता वेदकों में समुद्घात नहीं करने वाले जीव 8 राशि प्रमाण अनन्त जीव होते हैं।

12. समुद्घात करने वाल जीवों में अपर्याप्तक जीव कम होते हैं। पर्याप्तक (जागृत) जीव अधिक होते हैं। समुद्घात नहीं करने वाले अपर्याप्तक जीवों को कम कर समुद्घात करने वाले पर्याप्तक जीवों को पूर्व की 248 राशि में जोडने पर यह राशि 252 प्रमाण हो जाती है। लब्धि पर्याप्तक जीव जब स्वप्रायोग्य पर्याप्तियों को पूर्ण करके करण पर्याप्तक भी हो जाते हैं तब जागृत कहलाते हैं।
13. जागृत जीव तो पर्याप्तक हैं ही, 2 राशि प्रमाण अनन्त जीव अभी स्व प्रायोग्य पर्याप्तियों को पूर्ण नहीं कर पाने से करण पर्याप्तक अर्थात् जागृत तो नहीं हो पाये, किन्तु वे पर्याप्तियों को पूर्ण अवश्य ही करेंगें, अर्थात् लब्धि पर्याप्तक हैं। इस भव की आयुष्य के उदय के साथ ही उनके पर्याप्त नाम कर्म का उदय प्रारम्भ हो चुका है। ये 254 राशि प्रमाण वाले अनन्त जीव पर्याप्त नाम कर्म के उदय वाले होने से पर्याप्तक (लब्धि पर्याप्तक) कहलाते हैं।
14. आयु कर्म एक भव में केवल 1 बार ही बंधता है। पर्याप्तक और अपर्याप्तक दोनों प्रकार के जीव इसका बंध करते हैं। निश्चित् काल पर लगभग 1 आवलिका के आसपास के कालमान तक जीव आयुबंध करता हुआ 8 कर्मों को बांधता है। जघन्य आयु भी 256 आवलिका प्रमाण होती है। समुच्चय जीव में 1 आवलिका व 255 आवलिका प्रमाण काल के अनुपात से आयुबंधक 1 राशि प्रमाण व अबंधक 255 राशि प्रमाण होते हैं जो पर्याप्तक जीव से 1 राशि प्रमाण अधिक होने से विशेषाधिक कहलाते हैं।

50 बोल की बन्धी

श्री भगवती सूत्र के छठे शतक के तीसरे उद्देशक में 50 बोल की बन्धी का अधिकार चले सो कहते हैं-

वेय-संजय दिट्ठि, सण्णी भवि दंसण पज्जत्ते।
भासग परित्त णाण, जोगुवओग आहार सुहुम चरमेसु।।

1. वेद , 2. संयत, 3. दृष्टि, 4. संज्ञी, 5. भव्य, 6. दर्शन, 7. पर्याप्त, 8. भाषक, 9. परीत (परित्त), 10. ज्ञान, 11. योग, 12. उपयोग, 13. आहारक, 14. सूक्ष्म, 15. चरम। इन पन्द्रह द्वारों के 50 बोलों में 8 कर्मों के बन्ध की नियमा, भजना समझनी है।

ज्ञातव्य-

1. ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, नाम, गोत्र व अन्तराय कर्म का बन्ध 1 से 10 वें गुण. तक निरन्तर होता है।
2. मोहनीय कर्म का बन्ध 1 से 9 वें गुण. तक निरन्तर होता है।
3. वेदनीय कर्म का बन्ध 1 से 13 वें गुण. तक निरन्तर होता है।
4. आयु का बन्ध 1 से 7 वें (तीसरा छोड़कर) गुण. तक जीवन में एक बार ही होता है।
5. चरम व अचरम को अनेक अपेक्षाओं से कहा जाता है। टीकाकारों ने भवी को चरम व अभवी और सिद्ध भगवान को अचरम कहा, जो भगवती के मूल पाठ-दोनों में 8 कर्मों की भजना से भी स्पष्ट है। अनुत्तर विमानवासी देव भवी ही होते हैं। अतः उनमें अचरम का बोल नहीं लिया है।
6. जिन बोलों में मात्र चौदहवाँ गुणस्थान तथा सिद्ध भगवान मिलते हैं, उनमें 8 कर्मों का अबन्ध कहना चाहिए।
7. जिन बोलों में 11 से 13 तक गुणस्थान मिलते हैं, उनमें वेदनीय की नियमा तथा 7 कर्मों का अबन्ध कहना चाहिए।
8. जिन बोलों में मात्र दसवाँ गुणस्थान मिलता हैं, उसमें 6 कर्मों की नियमा तथा आयु और मोहनीय का अबन्ध कहना चाहिए।
9. जिन बोलों में 1 से 7 गुणस्थान मिलते हैं, उनमें प्रायः आयुकर्म की भजना व सात कर्मों की नियमा कहना चाहिए।
10. जिन बोलों में 6 से 12 गुणस्थान मिलते हैं, उनमें वेदनीय की नियमा तथा 7 कर्मों की भजना कहना चाहिए।
11. जिन बोलों में 1 से 14 तक सभी गुणस्थान मिलते हैं, उनमें 8 कर्मों की भजना कहना चाहिए।
12. जिन बोलों में 1 से 12 तक गुणस्थान मिलते हैं, उनमें 7 कर्मों की भजना तथा वेदनीय की नियमा कहना चाहिए।
13. जिन बोलों में 13वाँ, 14वाँ गुणस्थान मिलते हैं, उनमें वेदनीय की भजना तथा सात कर्मों का अबन्ध कहना चाहिए।

क्र.सं.	द्वार	बोल	प्रभेद
1.	वेद	4	स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपुंसकवेद, अवेदी।
2.	संयत	4	संयत, असंयत, संयतासंयत, नोसंयत- नो असंयत-नोसंयतासंयत (सिद्ध)।
3.	दृष्टि	3	सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि, मिश्रदृष्टि।
4.	संज्ञी	3	संज्ञी, असंज्ञी, नोसंज्ञी नोअसंज्ञी।
5.	भव्य	3	भव सिद्धिक, अभव सिद्धिक, नोभव सिद्धिक-नोअभव सिद्धिक।
6.	दर्शन	4	चक्षु, अचक्षु, अवधि, केवलदर्शन।
7.	पर्याप्त	3	पर्याप्त, अपर्याप्त, नोपर्याप्त-नोअपर्याप्त (सिद्ध)
8.	भाषक	2	भाषक, अभाषक।
9.	परीत (परित्त)	3	परीत, अपरीत, नोपरीत-नोअपरीत (सिद्ध)।
10.	ज्ञान	8	मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यव, केवलज्ञान। मति, श्रुत, अवधि अज्ञान।
11.	योग	4	मन, वचन, काययोगी, अयोगी।
12.	उपयोग	2	साकार, अनाकार उपयोग।
13.	आहारक	2	आहारक, अनाहारक।
14.	सूक्ष्म	3	सूक्ष्म, बादर, नोसूक्ष्म- नो बादर (सिद्ध)।
15.	चरम	2	चरम, अचरम।

क्र.	द्वार	पहली नरक	दो से सात नरक	भवन वाण.	ज्यो. 1,2 देव.	तीसरे देव. से 9 ग्रेवे. तक	5 अनु. विमान	5 स्थावर	बेइ. तेइ.	चौरेन्द्रिय व असन्नी ति. पं.	सन्नी तिर्यंच पंचे.	असन्नी मनुष्य	गर्भज मनुष्य	सिद्ध
1.	वेद	1	1	2	2	1	1	1	1	1	3	1	4	1
2.	संयत	1	1	1	1	1	1	1	1	1	2	1	3	1
3.	दृष्टि	3	3	3	3	3	1	1	2	2	3	1	3	1
4.	संज्ञी	2	1	2	1	1	1	1	1	1	1	1	2	1
5.	भव्य	2	2	2	2	2	1	2	2	2	2	2	2	1
6.	दर्शन	3	3	3	3	3	3	1	1	2	3	2	4	1
7.	पर्याप्त	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	2	1
8.	भाषक	2	2	2	2	2	2	1	2	2	2	1	2	1
9.	परीत	2	2	2	2	2	1	2	2	2	2	2	2	1
10.	ज्ञान	6	6	6	6	6	3	2	4	4	6	2	8	1
11.	योग	3	3	3	3	3	3	1	2	2	3	1	4	1
12.	उपयोग	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2
13.	आहारक	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1
14.	सूक्ष्म	1	1	1	1	1	1	2	1	1	1	1	1	1
15.	चरम	2	2	2	2	2	1	2	2	2	2	2	2	1
योग		34	33	35	34	33	25	23	27	28	36	22	43	16

(1) वेद द्वार				
बोल	**द्वार**	**गुणस्थान**	**नियमा और भजना**	**विशेष**
1-3	तीन वेद	1-9 गुण.	7 कर्म की नियमा, आयु की भजना	9 वें गुण. का प्रथम भाग सवेदी और बाद के चार भाग अवेदी हैं।
4.	अवेदी	9-14 गुण. और सिद्ध	7 की भजना, आयु का अबन्ध	
(2) संयत द्वार				
5.	संयत	6-14 गुण.	8 की भजना	7,8,6,1 कर्मों का बंध व अबंध भी होता है इसीलिए 8 की भजना ली है।
6.	असंयत	1-4 गुण.	7 की नियमा, आयु की भजना	
7.	संयतासंयत	5वाँ गुण.		
8.	नोसंयत नोअसंयत नोसंयतासंयत	सिद्ध	8 का अबंध	
(3) दृष्टि द्वार				
9.	सम्यग्दृष्टि	दूसरा व 4 से 14 गुण. व सिद्ध	8 की भजना	
10.	मिथ्यादृष्टि	पहला गुण.	7 की नियमा, आयु की भजना	
11.	मिश्रदृष्टि	तीसरा गुण.	7 की नियमा, आयु का अबंध	
(4) संज्ञी द्वार				
12.	संज्ञी	1-12 गुण.	7 कर्मों की भजना, वेदनीय की नियमा	
13.	असंज्ञी	1,2 गुण.	7 की नियमा, आयु की भजना	
14.	नोसंज्ञी नो असंज्ञी	13, 14 गुण. व सिद्ध	वेदनीय की भजना, 7 का अबंध	13वें गुण. में वेदनीय का बंध है, 14वें गुण. में बन्ध नहीं है।
(5) भव्य द्वार				
15.	भव्य	1-14 गुण.	8 कर्मों की भजना	
16.	अभव्य	पहला गुण.	7 की नियमा, आयु की भजना	
17.	नोभव्य नोअभव्य	सिद्ध	8 कर्मों का अबन्ध	
(6) दर्शन द्वार				
18-20.	चक्षु, अचक्षु, अवधि दर्शन	1-12 गुण.	7 की भजना, वेदनीय नियमा	1-12वें गुण. तक वेदनीय निरंतर बंधता है।
21.	केवल दर्शन	13, 14वाँ गुण. व सिद्ध	वेदनीय की भजना, 7 का अबंध	
(7) पर्याप्त द्वार				
22.	पर्याप्त	1-14 गुण.	8 कर्मों की भजना	
23.	अपर्याप्त	1,2,4 गुण.	7 कर्मों की नियमा, आयु की भजना	
24.	नो पर्याप्त नो अपर्याप्त	सिद्ध	8 का अबंध	

(8) भाषक द्वार				
25.	भाषक	1-13 गुण.	7 की भजना, वेदनीय नियमा	अपर्याप्त व अनाहारक अवस्था में जीव अभाषक होता है
26.	अभाषक	1,2,4,13,14वाँ गुण. व सिद्ध	8 की भजना	
(9) परीत (परित्त) द्वार				
27.	परीत	1-14 गुण.	8 कर्मों की भजना	जिसने एक बार समकित प्राप्त करके संसार सीमित कर लिया है, वह परीत है।
28.	अपरीत	पहला गुण.	7 की नियमा, आयु की भजना	
29.	नो परीत नो अपरीत	सिद्ध	8 का अबंध	
(10) ज्ञान द्वार				
30-33.	प्रथम चार ज्ञान	दूसरा तथा 4-12 गुण.	7 की भजना, वेदनीय की नियमा	
34.	केवलज्ञान	13,14वाँ गुण. व सिद्ध	वेदनीय की भजना, 7 का अबंध	
35-37.	तीन अज्ञान	पहला तथा तीसरा गुण.	7 की नियमा, आयु की भजना	
(11) योग द्वार				
38-40.	तीन योग	1-13 गुण.	7 की भजना, वेदनीय की नियमा	
41.	अयोगी	14वाँ गुण. व सिद्ध	8 का अबंध	
(12) उपयोग द्वार				
42.	साकार उपयोग	1-14 गुण. व सिद्ध	8 की भजना	
43.	अनाकार उपयोग	1-9 व 11 से 14 गुण. व सिद्ध	8 की भजना	दसवें गुण. में दर्शन का उपयोग नहीं होता है।
(13) आहारक द्वार				
44.	आहारक	1-13 गुण.	वेदनीय की नियमा, सात की भजना	आयु का बंध अनाहारक अवस्था में नहीं होता है, 1,2,4 गुण. में बाटे बहते जीव की अपेक्षा, 13 वाँ केवली समुद्घात की अपेक्षा व 14वाँ गुणस्थान पूर्ण अनाहारक होता है।
45.	अनाहारक	1,2,4,13,14वाँ गुण. व सिद्ध	7 की भजना, आयु का अबंध	
(14) सूक्ष्म द्वार				
46.	सूक्ष्म	पहला गुण.	7 की नियमा, आयु की भजना	सूक्ष्म केवल एकेन्द्रिय ही होते हैं।
47.	बादर	1-14 गुण.	8 की भजना	
48.	नो सूक्ष्म नो बादर	सिद्ध	8 का अबंध	
(15) चरम द्वार				
49.	चरम	1-14 गुण.	8 की भजना	
50.	अचरम	पहला गुण. व सिद्ध	8 की भजना	'अचरम' अभवी तथा सिद्ध दोनों ही होते हैं।

।। सेवम् भंते, सेवम् भंते, सेवम् भंते ।।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : सातवीं – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 07 जनवरी, 2018)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 10x1=(10)

(a) नारकी में 47 बोल में से ज्ञान के कितने बोल मिलते हैं-

(क) 3 (ख) 4

(ग) 5 (घ) 6 (ख)

(b) अवेदी में गुणस्थान होते हैं-

(क) 10 से 14 (ख) 9 से 14

(ग) 11 से 14 (घ) 13 से 14 (ख)

(c) प्रत्येक जीव की पर्याय होती है -

(क) संख्यात (ख) असंख्यात

(ग) अनन्त (घ) कोई नहीं (ग)

(d) संख्यात वर्षायुष्क सन्नी मनुष्य की जघन्य अवगाहना में ज्ञान हो सकते हैं-

(क) 2 (ख) 3

(ग) 2 अथवा 3 (घ) ज्ञान नहीं होता (ग)

(e) अजीव पर्याय का कथन प्रज्ञापना सूत्र के कौनसे पद में हैं-

(क) तीसरे (ख) पाँचवें

(ग) छठें (घ) इनमें से कोई नहीं (ख)

(f) अजीव पर्याय के थोकड़े में संख्यात भाग हीनाधिक तथा संख्यात गुण हीनाधिक से आशय है-

(क) द्विस्थानपतित (ख) त्रिस्थानपतित

(ग) चतुःस्थानपतित (घ) कोई नहीं (क)

(g) परमाणु की उत्कृष्ट स्थिति हो सकती है-

(क) संख्यात काल (ख) असंख्यात काल

(ग) अनंतकाल (घ) 1 समय (ख)

(h) एक परमाणु में एक समय में कितने स्पर्श हो सकते हैं-

(क) 2 (ख) 4

(ग) 8 (घ) 1 (क)

(i) मोहनीय कर्म का बंध कितने गुणस्थान तक होता है-

(क) 1 से 9 (ख) 1 से 10

(ग) 1 से 11 (घ) 1 से 14 (क)

(j) सिद्ध में से 50 बोल में से कितने बोल मिलते हैं-

(क) 22 (ख) 23

(ग) 16 (घ) 25 (ग)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 10x1 = (10)

(a) अवेदी में 7 कर्मों के बंध की भजना तथा आयु का अबंध होता है। (हाँ)

(b) सम्यग्दृष्टि में आठ कर्मों के बंध की भजना है। (हाँ)

(c) जम्बूद्वीप का धर्मास्तिकाय, धर्मास्तिकाय का सम्पूर्ण स्कन्ध हैं। (नहीं)

(d) असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध चार स्पर्श वाले ही होते हैं। (हाँ)

(e) एक परमाणु पर अठ फरसी अनन्त प्रदेश वाले स्कन्ध रह सकते हैं। (नहीं)

(f) लोक अनंत प्रदेशी नहीं होता है। (हाँ)

(g) जीव पज्जवा में एक स्थान पतित का आशय असंख्यात भाग हीनाधिक है। (हाँ)

(h) सभी जीवों के आत्मप्रदेशों की संख्या बराबर नहीं होती है। (नहीं)

(i) प्रथम समय के उत्पन्न हुए जीव परम्पर उववन्ना हैं। (नहीं)

(j) मिश्रदृष्टि सिर्फ अपर्याप्त अवस्था में होती है। (नहीं)

प्र.3 मुझे पहचानो :- 10x1 = (10)

(a) मैं ऐसा कर्म हूँ, जो जीवनकाल में एक बार ही बंधता हूँ। आयुकर्म

(b) मुझमें 47 बोल में से 31 बोल मिलते हैं। विकलेन्द्रिय

(c) मुझमें 47 बोल में से 35 बोल मिलते हैं। नरक

(d) मैं ऐसा सन्नी मनुष्य हूँ, जिसमें अवधि का उपयोग नहीं होता है। युगलिक

(e) मेरे होने पर अन्तर्मुहूर्त में नियम से केवलज्ञान हो जाता है। परम अवधिज्ञान

(f) मुझमें सम्पूर्ण वस्तु का समावेश होता है। स्कन्ध

(g) अजीव पज्जवा में मेरे अलावे 35 हैं। अवगाहना

(h) 256 राशि में मेरी सबसे कम राशि है। आयु के बंधक

(i) 256 में से मेरी राशि 252 हैं। जागृत

(j) 256 में से मेरी राशि 64 हैं। अनाकार उपयोग

प्र.4 एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए। 14x2=(28)

(a) 47 बोल में से 5 अनुत्तर विमान में पाये जाने वाले 26 बोल लिखिए।

उ. समुच्चय का-1, लेश्या-2, पाक्षिक-1, दृष्टि-1, ज्ञान -4, संज्ञा -4, वेद -2, कषाय-5, उपयोग-2, योग 4 = 26

(b) मोहनीय कर्म आश्री अकषायी तथा अलेशी में मनुष्य की अपेक्षा भंग बताइए ।

उ. अकषायी में - तीसरा, चौथा भंग

अलेशी में - चौथा भंग

(c) आयुकर्म आश्री अयोगी तथा सम्यग्दृष्टि में मनुष्य की अपेक्षा भंग बताइए।

उ. अयोगी में - चौथा भंग

सम्यग्दृष्टि मनुष्य के- पहला, तीसरा, चौथा भंग

(d) जीव पज्जवा में द्रव्य तथा प्रदेश की अपेक्षा से तुल्य कहा जाता है। क्यों ?

उ. द्रव्य से- तात्पर्य जीवों की गिनती से है। जिनकी आपस में तुलना की जा रही है। अर्थात् जिस जीव की, दूसरे जीव से तुलना की जा रही है, वे दोनों संख्या में एक-एक ही है अतः द्रव्य से तुल्य कहा गया है। प्रदेश से तुल्य बताने का कारण यह है कि सभी जीवों के आत्म प्रदेशों की संख्या बराबर ही होती है।

(e) एक पृथ्वीकाय की दूसरे पृथ्वीकाय से अवगाहना व स्थिति की अपेक्षा तुलना कीजिए।

उ. अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित है।

(f) उत्पत्ति के प्रथम समय में भी चक्षुदर्शन होता है। जीव पज्ज्वा के थोकड़े से कोई एक प्रमाण दीजिए।

उ. इस थोकड़े में उत्पत्ति के प्रथम समय में भी चक्षुदर्शन माना है, क्योंकि तिर्यंच पंचेन्द्रिय में जघन्य अवगाहना में 6 उपयोग (2 ज्ञान, 2 अज्ञान, 2 दर्शन) की अपेक्षा षट्स्थानपतित कहा है।

सभी चौरेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय जीवों में जघन्य अवगाहना (उत्पत्ति के प्रथम समय में) में चक्षुदर्शन लब्धि की अपेक्षा से माना गया है।

(g) एक परमाणु पुद्गल की दूसरे परमाणु पुद्गल से अवगाहना एवं वर्णादि की अपेक्षा तुलना कीजिए।

उ. अवगाहना की अपेक्षा तुल्य है, पाँच वर्ण, दो गंध, पाँच रस, चार स्पर्श (शीत, उष्ण, स्निग्ध और रूक्ष) इन 16 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है।

(h) संख्यात प्रदेशी स्कन्ध की दूसरे संख्यात प्रदेशी स्कन्ध से प्रदेश एवं अवगाहना की अपेक्षा से तुलना कीजिए।

उ. प्रदेश की अपेक्षा द्विस्थान पतित, अवगाहना की अपेक्षा द्विस्थान पतित।

(i) अचित्त महास्कन्ध को परिभाषित कीजिए।

उ. चौफरसी अनन्त प्रदेशी स्कन्ध जब विस्रसा परिणमन (स्वाभाविक रूप से) से सम्पूर्ण लोकव्यापी हो जाता है, तब वह अचित्त महास्कन्ध कहलाता है।

(j) अपर्याप्त व पर्याप्त की राशि लिखते हुए अल्प बहुत्व लिखिए।

उ. अपर्याप्त (लब्धि अपर्याप्त) की 2 राशि, पर्याप्त की 254 राशि

सबसे थोड़े अपर्याप्त, पर्याप्त संख्यात गुणा।

(k) अपर्याप्त से सुप्त जीव संख्यात गुणा हैं। क्यों ?

उ. अपर्याप्तकों से सुप्त संख्यात गुणा हैं क्योंकि सुप्त में लब्धि व करण दोनों ही प्रकार के अपर्याप्तकों का समावेश हो जाता है।

(l) 50 बोल में से एकेन्द्रिय में मिलने वाले 23 बोल लिखिए।

उ. वेद-1, संयत-1, दृष्टि-1, संज्ञी-1, भव्य-2, दर्शन-1, पर्याप्त-2, भाषक-1, परीत-2, ज्ञान-2, योग-1, उपयोग-2, आहारक-2, सूक्ष्म-2, चरम-2 =23 बोल

(m) अपरीत में गुणस्थान तथा 8 कर्मों की नियमा-भजना लिखिए।

उ. अपरीत- पहला गुण.। 7 कर्मों की नियमा, आयु की भजना।

(n) अनाहारक में गुणस्थान तथा 8 कर्मों की नियमा-भजना लिखिए।

उ. अनाहारक- 1,2,4,13,14वाँ गुण. व सिद्ध। सात की भजना, आयु का अबंध

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में लिखिए : - **14x3 = (42)**

(a) आयुकर्म आश्री मनःपर्यवज्ञानी में दूसरा भंग तथा मिश्र दृष्टि मनुष्य में प्रथम दो भंग क्यों नहीं मिलते? कारण सहित लिखिए।

उ. मनःपर्यव ज्ञान में पहला भांगा 6,7वें गुण. की अपेक्षा है। इसमें दूसरा भांगा इसलिए नहीं पाया जाता है क्योंकि यदि ये वर्तमान में आयुष्य बांधते हैं तो वैमानिक का ही आयुष्य बांधते हैं और वैमानिक में उनको आगे भी आयुष्य का बंध करना ही पड़ेगा। वैमानिक से मुक्ति सम्भव नहीं है।

मिश्र दृष्टि में आयुष्य का बंध नहीं होता है, इस कारण प्रथम दो भांगे नहीं पाये जाते हैं।

(b) **तेजोलेश्या पृथ्वीकाय में आयुकर्म आश्री तीसरा भंग ही मिलता है, शेष नहीं। क्यों?**

उ. तेजो लेश्या देवता से आने वाले पृथ्वी, पानी, वनस्पति जीवों में अपर्याप्त अवस्था में रहती है। यह नियम है कि देवता से आने वाले पृथ्वी, पानी, वनस्पति के जीव अपर्याप्त अवस्था में काल नहीं करते हैं। पर्याप्त होकर ही मरते हैं। पर्याप्त अवस्था में ही अगले भव की आयु का बन्ध करते हैं। पर्याप्त अवस्था में इनमें तेजो लेश्या नहीं होने के कारण तेजो लेश्या में आयु का बन्ध नहीं करते हैं। इसलिए प्रथम दो भांगे तो पाये ही नहीं जाते हैं और चौथा भांगा भी नहीं पाया जा सकता क्योंकि मोक्ष जाने के लिए उस जीव को आगे मनुष्यायु का बंध तो करना ही पड़ेगा।

(c) **सम्यग्दृष्टि समुच्चय जीव की अपेक्षा ज्ञानावरणीय कर्म आश्री चारों भंग किन-किन गुणस्थानों में कब-कब मिलेंगे ? लिखिए।**

उ. पहला भांगा पहले से दसवें गुणस्थान के द्विचरम समयवर्ती जीवों की अपेक्षा, दूसरा भांगा दसवें गुणस्थान के चरम समयवर्ती क्षपक जीवों की अपेक्षा, तीसरा भांगा ग्यारहवें गुणस्थान के जीवों की अपेक्षा तथा चौथा भांगा 12, 13, 14वें गुणस्थान के जीवों की अपेक्षा पाया जाता है।

(d) **भगवती सूत्र शतक 26 के दूसरे से सातवें शतक का नाम लिखिए।**

उ. द्वितीय उद्देशक अनन्तर उववन्ना	तृतीय उद्देशक परम्पर उववन्ना
चतुर्थ उद्देशक अनन्तर अवगाढ़	पंचम उद्देशक परम्पर अवगाढ़
छठा उद्देशक अनन्तर आहारक	सातवाँ उद्देशक परम्पर आहारक।

(e) **जीव पज्जवा में वर्णित त्रिस्थानपतित का आशय लिखिए।**

उ. त्रिस्थानपतित का आशय यहाँ असंख्यात भाग हीन, संख्यात भाग हीन, संख्यात गुण हीन तथा असंख्यात भाग अधिक, संख्यात भाग अधिक, संख्यात गुण अधिक से हैं।

(f) **जघन्य मतिज्ञान वाले बेइन्द्रिय की जघन्य मतिज्ञान वाले बेइन्द्रिय से तुलना कीजिए।**

उ. जघन्य मतिज्ञान वाला द्वीन्द्रिय जघन्य मतिज्ञान वाले द्वीन्द्रिय से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित है, वर्णादि बीस बोल पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है, मतिज्ञान की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है, श्रुतज्ञान और अचक्षुदर्शन की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है।

(g) **जघन्य स्थिति वाले मनुष्य की जघन्य स्थिति वाले मनुष्य से तुलना कीजिए।**

उ. जघन्य स्थिति वाला मनुष्य, जघन्य स्थिति वाले मनुष्य से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य है, बीस वर्णादि की पर्यायों तथा चार उपयोग (दो अज्ञान, दो दर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है।

(h) **केवल ज्ञानी मनुष्य की केवलज्ञानी मनुष्य से तुलना कीजिए।**

उ. केवल ज्ञानी मनुष्य, केवल ज्ञानी मनुष्य से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित है, बीस वर्णादि पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है, केवल ज्ञान- केवलदर्शन की अपेक्षा तुल्य है।

(i) **जघन्य अवधिज्ञान वाले मनुष्य की जघन्य अवधिज्ञान वाले मनुष्य से तुलना कीजिए।**

उ. जघन्य अवधिज्ञान वाला मनुष्य, जघन्य अवधिज्ञान वाले मनुष्य से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा त्रिस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित है, बीस वर्णादि की पर्यायों अपेक्षा षट्स्थानपतित है। अवधिज्ञान के पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है।

(j) **जीव पज्जवा से अनंत भाग हीनाधिक तथा अनंत गुण हीनाधिक को समझाइए।**

उ. काले वर्ण की अनन्त पर्यायों को असद्भूत स्थापना से दस हजार माना जाय और सर्व जीवों की अनन्त संख्या को सौ मानकर उससे भाग दिया जाय तो भागफल सौ आवेगा। एक जीव के काले वर्ण की पर्याय दस हजार है और दूसरे जीव के काले वर्ण की पर्याय सौ कम यानी 9900 है। चूँकि सर्व जीवों की अनन्त संख्या से भाग देने से भागफल सौ आया है अतः यह सौ, अनन्तवाँ भाग है अतः 9900 काले वर्ण की पर्याय वाला दस हजार काले वर्ण की पर्याय वाले की अपेक्षा अनन्त भाग हीन है और दस हजार काले वर्ण की पर्याय वाला अनन्त भाग अधिक है।

(k) **संख्यात आकाश प्रदेशावगाढ पुद्गल की परस्पर तुलना कीजिए।**

उ. संख्यात आकाश प्रदेशावगाढ पुद्गल, संख्यात आकाश प्रदेशावगाढ पुद्गल से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य हैं, प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थान पतित हैं, अवगाहना की अपेक्षा द्विस्थानपतित हैं, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थानपतित हैं और वर्णादि 16 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित हैं।

(l) **जघन्य गुण काले वर्ण वाले परमाणु पुद्गल की परस्पर में तुलना कीजिए।**

उ. जघन्य गुण काले वर्ण के परमाणु पुद्गल की अनन्त पर्याय हैं, क्योंकि जघन्य गुण काले वर्ण वाला परमाणु पुद्गल, जघन्य गुण काले वर्ण वाले परमाणु पुद्गल से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा तुल्य है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, काले वर्ण की पर्याय की अपेक्षा तुल्य है, दो गंध, पाँच रस और चार स्पर्श इन 11 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है।

(m) **जघन्य स्थिति वाले पुद्गल की परस्पर में तुलना कीजिए।**

उ. जघन्य स्थिति वाले पुद्गल की अनन्त पर्याय हैं, क्योंकि जघन्य स्थिति वाला पुद्गल, जघन्य स्थिति वाले पुद्गल से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेशी की अपेक्षा षट्स्थानपतित है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य है, वर्णादि 20 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है।

(n) **256 राशि के 14 बोलों की सम्मिलित अल्पबहुत्व में प्रथम छह बोलों की अल्पबहुत्व लिखिए।**

उ. 1. सबसे थोड़े आयु के बन्धक, 2. अपर्याप्त संख्यात गुणा,
3. सुप्त संख्यात गुणा, 4. समुद्घात करने वाले संख्यात गुणा,
5. सातावेदनीय वेदने वाले संख्यात गुणा 6. इन्द्रिय उपयोग वाले संख्यात गुणा।